बेचारे भिखारी नाटक को रंग-मंच पर अभिनीत करने का अधिकार प्राप्त !

श्री ललता सिंह आर्य रचित 'बेचारे भिखारी' सामाजिक नाटक को माननीय पुलिस कमिश्नर आफ कलकत्ता, डिटेक्टिभ डिपार्टमेण्ट, लालबाजार, कलकत्ता [वेस्ट बंगाल] ने रंग-मंच पर अभिनीत करने की अनुमति प्रदान की है !

मैनेजिंग डाइरेक्टर

लेखक

बेचारे भिखारी नाटक को कोई थियेटर कम्पनी या संस्था
बिना लेखक की अनुमति प्राप्त किए रंगमंच पर अभिनीत
नहीं कर सकती और न तो चलचित्र कम्पनियाँ
चित्र ही बना सकती हैं। केवल धर्मार्थ
अभिनय करानेवाले महानुभाव
अभिनीत करा सकते हैं जब
कि वे कलाकार, रंगमंच
एवं सरकार के
मनोरंजन कर
से मुक्त हों !

——→ प्रकाशक ←——

अपनी बात

आज परम प्रसन्नता का विषय है कि प्रेमा आर्ट थियेटर, बम्बई अपनी सफलता की प्रथम सीढ़ी को पार करता हुआ, आगे बढ़ा और प्रथम प्रयास 'बेचारे भिखारी' नाटक को पाठकवृन्द के सम्मुख लाआ। कम्पनी को सहयोग देनेवाले विशेषकर बेचारे भिखारी नाटक की पुस्तक के अग्रिम ग्राहक, अभिनेता, अभिनेत्री, लेखक, निर्देशक आदि को कम्पनी बधाई देती है और आशा करती है कि ऐसी ही कृपादृष्टि बनाये रखेंगे।

अगर कम्पनी के सभी शुभचिन्तकों एवं बेचारे भिखारी नाटक के अभिनय में भाग लेने वालों का पूर्ण सहयोग रहा, तो कम्पनी अति शीघ्र ही नाटक को वाराणसी, कलकत्ता और बम्बई आदि के रंग-मंच पर प्रदर्शित करेगी।

विश्वेश्वरप्रसाद शुक्ल
मैनेजिंग डाइरेक्टर
प्रेमा आर्ट थियेटर
बम्बई
लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी

——×———×——

दो शब्द

पं० रामजी मिश्र, पं० बेनीमाधव शुक्ल, बाबू रामचरित्र वर्मा, डाक्टर कल्पनाथ "मानव", श्री दर्शन जी, पं० नप्पू महराज, नवाब मिर्जा मुन्ने, श्री गोपाल सिंह, लालजी पाण्डेय "अनजान", शारदा-प्रसाद दूबे "व्यथित प्रेमी", किशोरसिंह, शंकरलाल जोशी "निर्मल", प्रसिद्ध ज्योतिषी द्वारिकानाथ पानट, छेदीलाल "माधव", मा० अफ-जल, श्री बनारसी प्रसाद शर्मा, रमाकान्त मिश्र और बाबू शिवमूरत सिंह आदि कम्पनी के शुभचिन्तकों को मैं कम्पनी की ओर से धन्य-वाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि ऐसी ही कृपादृष्टि बनाये रक्खेंगे ! और पाठक वृन्द एवं विचारक गण से अनुरोध है कि नाटक की त्रुटियों को क्षमा करते हुए जो भी सुझाव देंगे, कम्पनी हृदय से स्वागत करेगी तथा आगामी संस्करण में उसका संशोधन करेगी ।

लालतासिंह आर्य
निर्देशक
प्रेमा आर्ट थियेटर
बम्बई

——×——×——

बेचारे भिखारी की मूर्त्तियाँ:—

पुरुष-पात्र	परिचय
रणवीर	देश-सुधारक एव नाटकका प्रधान पात्र
झाबरमल	धूर्त्त पूँजीपति
भास्करानन्द	त्यागी एवं निर्धन ब्राह्मण
हीराचन्द	देशभक्त दानी सेठ
गुमानीलाल	विषयी एवं रंगीन ठग सेठ
धूर्त्तानन्द	ढोंगी एवं कपटी महन्थ
मंगलसिंह	भिखारी के वेशमें फिरनेवाला डाकू
रमजान अली	भिखारी के वेश में फिरने वाला शातिर चोर
ज्ञानचन्द सिंहानियाँ	देशसेवी पागल वकील
दुलारे	धूर्त्तानन्द का पाकेटमार चेला
कल्लूसिंह जाट	त्यागी एवं देशभक्त पुलिस वाला
बाकरअली	मनचला दो बिल्ले वाला मुंशी
मधुकण	असहाय भिखारी
लोढूचन्द	ठग भिखारी
खुशहाल	स्वामि भक्त वृद्ध नौकर
हर्षचन्द	बूढ़ा भिखारी
किशन	युवक भिखारी
नीलकान	भिखारी.का बेटा
नगेन्द्रकुमार	बेकार युयक
भोगोलाल	देशप्रेमी पत्र विक्रेता
डाइरेक्टर	ज्ञानचन्द सिंहानियाँ
शां शूं शां	मधुकण
कुँवर बहादुर	गाने वाला बालक
सच्चिदानन्द सरस्वती	धूर्त्तानन्द

दुल्हा	एक नर्त्तक
पुजारी	लक्ष्मीनारायण के मन्दिर के पुजारी
दुर्जनसिंह	झाबर मल का दरबान

बालक, भानामल, कोठारीमल, शर्माजी, लक्ष्मीनारायण, भूत, प्रेत, गूँगा, लँगड़े, लूले, अंधे, कोढ़ी भिखारी, इन्ना, मदन, लछमन, भोला,गोपाल, भिखारी, दर्शक, लक्ष्मीनारायण, दरबान, पूनमचन्द, शमशेर बहादुर सिंह, साजन साहब, श्याम-नारायणजी, प्रोड्यूशर, रायबहादुर, आदि।

स्त्री-पात्र	**परिचय**
कौशल्या	नाटक की प्रधान नायिका, भास्करानन्द की पुत्री
हीरामणी	उत्साही समाज सुधारिका, झाबरमल की पुत्री
नरगिस	धूर्त्तानन्द की चंट शिष्या
कामिनी	नगेन्द्रकुमार की धर्मपत्नी
माया देवी	विवश भिखारिन
रेखारानी	निर्धन नर्त्तकी
मधुबाला	असहाय बालिका
नीलू	असहाय बालिका
शिरोमणी	पुजारिन महिला
मिसमिण्टो	रेखा
कुंकुम	गाने वाली बालिका
सरलादेवी	झाबरमल की धर्मपत्नी
दुल्हिन	एक नर्त्तकी
मंगली	एक दार्शिका

बालिकाएँ,दर्शिका,भारतमाता,अन्य भिखारिन पूर्णिमा,रेणुका आदि।

———×———×———

भूमिका

समाज में नदी की धारा के समान नित नये-नये परिवर्त्तन होते रहते हैं और समय-समय पर इसमें उतार-चढ़ाव भी ! जिसका प्रमाण हमें इतिहास और साहित्य से मिलता है। बौद्धिक आलस्य और अन्ध-विश्वास के कारण समाज में रूढ़िवाद की जड़ जम जाती है, जो समाज को उठने नहीं देती। ईश्वरीय विधान के अनुसार ऐसे समय कर्मठ एवं क्रान्तकारी व्यक्तियों का समाज में प्रादुर्भाव होता है, जो अपने उच्च विचारों से समाज में क्रान्तकारी परिवर्तन लाते हैं और रूढ़िवाद की कठोर दीवारों को तोड़ने में सफल होते हैं; जिससे समाज में पुनः नवीन-जीवन-ज्योति जलने लगती है और जन-साधारण को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। आज समाज की अनेक समस्याओं में से एक महान् समस्या भिखारियों की है। यह समाज को उसी प्रकार खल रही है जिस प्रकार एक परम सुन्दरी को उसके दिव्य मुख का कोढ़। आज प्रगतिशील समाज चाहे जिस मूल्य पर हो, इस कोढ़ को दूर करने के लिए कटिवद्ध है।

समस्त भारतवर्ष में भिखारियों की बाढ़ सी आ गयी है। ये भिखारी अर्द्धनग्न अवस्था में फुटपाथ पर पड़े-पड़े अपने भाग्य को कोसते हुए आर्तनाद किया करते हैं; लेखक से उनका करुण-क्रन्दन न देखा गया और उसने उनके ऊपर अपनी लौह-लेखनी घुमा ही दी। भारतवर्ष के अन्दर प्राचीनकाल में भिक्षाटन करना पवित्र एवं पुनीत कार्य था। भिक्षुकगण—समाज हित के लिए मंगल-कामना किया करते थे; परन्तु इन भिखारियों को पेट-पूजा के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य ही नहीं सूझता; इसलिए नाट्यकार ने दिखलाया है कि इनको भिक्षा देनेवाला महान् पापी है, भिक्षा देने से अच्छा है भिखारियों को काम दिलाना। सचमुच में जो अपाहिज हैं, उनके लिए भवन का निर्माण कराकर उसमें रखा जाय तथा उनके समस्त साधनों की व्यवस्था

भी की जाय। कुछ लोग दानी बनते हैं और उसकी आड़ में अपना उल्लू सीधा करते हैं, उनकी दानशीलता का पर्दाफाश किया गया है। भिखारियों को दिखलाया गया है कि स्वतन्त्र देश के वे भी नागरिक हैं; फिर वे ऐसी दशा में क्यों रह रहे हैं? उनका सुधार एवं उनकी समुचित व्यवस्था होनी ही चाहिए। देश की संस्थाओं, समाज सुधारकों एवं सरकार को उनकी दिशा की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। अगर उनके सुधार के लिए थोड़ा भी प्रयास किया गया तो भिखारी दर्शन करने को भी नहीं मिलेंगे। जहाँ तक मेरा अनुमान है नाट्यकार ने जो मौलिक नाटक की कल्पना की है वह आधुनिक समाज में नित्य-प्रति की घटनेवाली घटनाएँ हैं। 'बेचारे भिखारी' नाटक के पात्र काल्पनिक हैं; परन्तु पढ़नेवाला समझता है कि बिल्कुल सत्य घटना ही घट रही है यहीं पर लेखक सफल हो जाता है।

निर्धन ब्राह्मण भास्करानन्द की पुत्री कौशल्यादेवी समाज की थोंथी जंजीरों को तोड़कर कर्मक्षेत्र में आती है और विरोधियों के मुख पर तमाचा मारकर अपने उद्देश्य की पूर्त्ति करती है। उसका चरित्र-चित्रण नायिका के गुणों से युक्त है। रणवीर समाज–कल्याण के लिए माता-पिता के प्यार एवं अपार सम्पत्ति को ठुकराकर समाज के लिए प्राणों को हथेली पर लेकर चलता है। उसका चरित्र-चित्रण आदर्श नायक के गुणों से युक्त है। साथ में उसकी बहिन हीरामणी उसको को प्रोत्साहन देती रहती है। सहनायिका हो तो ऐसी हो। खल नायक झाबरमल के दान का ढोंग एवं विलासता चरम सीमा पर पहुँचती है अन्त में उसके कुकर्मों के कारण समस्त सम्पत्ति का नाश हो जाता है और उसकी दुष्टता को प्रोत्साहन देनेवाला उसका साला गुमानीलाल लँगड़ा हो जाता है और दोनों पश्चात्ताप करते हैं। दूसरी ओर महन्थ धूर्त्तानन्द नामक ढोंगी कपटी मठाधीश ठग-विद्या का जाल फैलाकर; लाखों रुपये समाज से हड़पता है, उसके शिष्यों में कुमारी नरगिस जब नृत्य करती है तब चोर रमजान अली हारमोनियम बजाता है तथा मंगलसिंह ढोलक खड़-

काता है और तत्क्षण उपस्थित दर्शकों की पाकेट की सफाई कर दुलारे चम्पत हो जाता है। अन्य शिष्य भी नाना प्रकार के हथकण्डों से लूट-पाट करते हैं। सभी द्रव्य महन्थजी के पावन चरणों की भेंट होती है। एकाएक महन्थजी को अपने पावन-धन्धे से घृणा हो जाती है वह समाज सुधार के लिए सम्पूर्ण धनराशि को लगा देता है और शिष्यों को भी उसी मार्ग का पथिक बनाता है। उसका चरित्र-चित्रण आज के चिमटाधारियों एवं मठाधीशों के लिए अनुकरणीय है।

हँसा-हँसाकर लोट-पोट करा देने वाला पात्र ज्ञानचन्द सिंहानियाँ परिस्थित वश पागल हो जाता है। जब उसका सुधार देश के सुधारक करते हैं तब वह भी अपना अमूल्य समय समाज के हित के लिए भेंट करता है। सभी समाज सुधारक भामाशाह के वंशज सेठ हीराचन्द से सहयोग की मंगल-कामना करते हैं। वह तन, मन, धन सभी इन लोगों के लिए अर्पण कर देता है। उसका त्याग आज के धनिक वर्ग के लिए अनुकरणीय है। स्वामिभक्त नौकर खुशहाल, त्यागी पत्र-विक्रेता भोगीलाल, देशभक्त पुलिस कर्मचारी कल्लूसिंह जाट एवं बाकर-अली, श्रद्धालु भक्त मधुकण एवं पं० भास्करानन्द का चरित्र-चित्रण चित्ताकर्षक है। भगवान विष्णु का न्याय आज के युग को नया सन्देश देता है और मानव से मानव को प्रेम करने की सलाह देता है। नगेन्द्रकुमार के परिवार की बेकारी आज के शिक्षित वर्ग की दशा से ठीक मिलती है। अन्य पात्र भी यथा स्थान अपना महत्व रखते हैं। रणवीर के आग्रह पर कौशल्यादेवी रात्रि के समय निर्जन सरोवर के तट पर मिलने के लिए आती है; मगर निश्चित समय पर नायक की मोटर बिगड़ जाने के कारण नहीं पहुंच पाता, तो नायिका आत्महत्या करने को तत्पर होती है और कहती है—भारतीय ललना जिसको एक बार अपना जीवन साथी चुन लेती है वह उसी की होकर रहती है स्वप्न में पर पुरुष का स्मरण करनेवाली वेश्या तुल्य है। नायक जब आता है तब वह छिप करके उसके प्रेम की परीक्षा लेती है। रणवीर प्रेमिका

को न पाकर लताओं, वृक्षों आदि को साक्षी बनाकर अपने को निर्दोष प्रमाणित करता है और उन्मत्त की तरह भटकता है! दोनों का मिलन वास्तविक प्रेम का उज्ज्वल प्रतीक है और समाज के प्रेमियों का आवाहन करता है। अन्त में प्रेम की विजय होती है। उनका पिता, पुत्र और पुत्री को गले से लगाता है। भास्करानन्द विवाह-बन्धन से युक्त रणवीर एवं कौशल्यादेवी को देखकर सन्तोष की साँस लेता है। अन्त में नृत्य, गीत, उत्साह के साथ नाटक समाप्त होता है।

लालतासिंह आर्य सिद्धहस्त कलाकार हैं। वे केवल नाटक के रचयिता ही नहीं बल्कि सफल अभिनेता एवं निर्देशक भी हैं। उन्होंने 'बेचारे भिखारी नाटक' की रचना कर समाज को सामयिक ज्योति प्रदान की है। पथ भ्रष्टों को उचित मार्ग दिखलाया है, नवयुवकों को रुढ़िवाद को तोड़ने की प्रेरणा दी है। पाखण्डियों का भण्डाफोड़ किया है। लक्ष्मी वाहनों को चेतावनी देकर उन्हें सम्पत्ति के सद्उपयोग की शिक्षा दी है। इस नाटक के सभी पात्रों की सजीवता—दृष्टव्य है। रुचिकर भाषा के साथ हास्यरस के पुट और गाने पुस्तक की मनोहरता को और भी बढ़ा देते हैं। पुस्तक इस ढंग से लिखी गई है कि पाठक इसे पढ़कर तुरन्त ही रंगमंच पर देखने के लिए इच्छा प्रगट करेंगे। हमें आशा है कि आर्य जी अपनी लेखनी की तूलिका द्वारा भिखारियों का चित्रण करके ही शान्त न हो जायेंगे; बल्कि इसका सफल अभिनय भी जनता के सम्मुख रक्खेगें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह रंग-मंच पर अभिनीत होनेवाला सफल नाटक समाज के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। समाज के गण्यमान्य सुधारकों एवं पाठकवृन्द से अनुरोध है कि इसके प्रचार एवं प्रसार में सहर्ष हाथ बटायें।

वाराणसी
२२ जुलाई १९५८

श्री रामचरित्र वर्मा

लेखक का संक्षिप्त परिचय

लेखक
डाक्टर कल्पनाथ 'मानव'

मारुफपुर निवासी बिजू सिंह आर्य (सन्त ब्रजमोहन दास) एवं रमताजी देवी की पुनीत गोद में त्याग, कर्मठता, साहस, शत्रु से भी मित्रवत् व्यवहार करना, संकट में भी प्रसन्न रहना आदि सद्गुणों की सजीव मूर्तिरूपी इस युगान्तकारी, निराले क्रान्तिकारी, अदम्योत्साही, ने जन्म लेकर वात्सल्यकाल की सुखमय लीला समाप्त कर वीणा-वादिनी की पवित्र गोद में प्रविष्ट हुआ।

विधि का विधान अटल है। जिसे टालने में किसी की भी सामर्थ्य नहीं, उसके विरुद्ध दूरदर्शी पिता ने कानून की शिक्षा दिलाकर सफल वकील बनाने के उद्देश्य से वशीभूत होकर; उसको अनुगामिनी शिक्षा दिलाना प्रारम्भ किया; मगर लेखक की अभिरुचि इसके ठीक विरुद्ध युगान्त-कारी, क्रान्तिकारी, सत्यान्वेषी साहित्याध्ययन में प्रविष्ट हुई, जिसके भावी फल पर विचारकर घर से त्यागी, विरागी, समाज सुधारक, सन्यासी होकर निकल भागने की आशंका से सशंकित होकर व्यवहारकुशल पिता ने भगवान् बुद्ध के पिता की भाँति लेखक को वैवाहिक जंजीरों में जकड़कर गार्हस्थ जीवनरूपी कारागार में डालने के विचार से ही रूप की रानी कुमारियों के प्रेम-पाश में बाँधने का सफल वैधानिक प्रयास किया। जिसके कठोरतम बन्धन को होनहार लेखक ने धनुष यज्ञ के धनुष की भाँति तोड़कर निर्बन्ध हो गया।

उस करारी हार में मर्माहत पिता ने जब लेखकको चंगुल में फँसाने का कोई मार्ग नहीं पाया तो विवश होकर अन्तमें घर से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया, जिससे लेखक को ही अधिक लाभ हुआ; क्योंकि अब स्वच्छन्द रूप से साहस एवं धैर्य के सहारे भाग्य के कर्मक्षेत्र में खुलकर खेलने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे पूरा लाभ उठाने के विचार से नटखट लेखक ने चट कर्म कमण्डल ले, त्यागपूर्ण सेवा की झोली कन्धे में डाल, एक अन्धेरी रात के घोर अन्धकार में विलीन हो गया।

जिसका रहस्योद्घाटन होनेपर पिता को अपार दुःख हुआ; क्योंकि पिता ने लेखक को भयभीत करके सही मार्ग पर लगाने के विचार से ही ऐसी दुखदायी योजना का आयोजन किया था। अब ज्ञान पिपासु लेखक भगवान शकर की पवित्र पुरी काशीमें आकर सत्यान्वेषी साहित्य के अध्ययन में तल्लीन हो गया।

अपने उद्देश्य की पूर्त्ति में निम्नांकित संस्थाओं के योग्यतम समाज एवं राष्ट्रसेवी प्रधानाचार्यों एवं कुशल संचालकों का वरदहस्त एवं अक्षुण्ण सहयोग प्राप्त था। जिससे लेखक अपने उद्देश्य-पूर्त्ति में सफल होकर भावी कार्यक्रम की ओर अग्रसर हुआ। कैम्ब्रिज एकेडेमी, नवयुग हिन्दी साहित्य विद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य प्रदुम्न पाण्डेय, श्री काशी विद्यापीठ के आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री राष्ट्रभाषा विद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य गङ्गाधर मिश्र और मन्त्री महोदय श्री बलदेवप्रसाद मेहरोत्रा!

अब शिक्षा जगत् से व्यवहार में प्रविष्ट होते ही—सिद्धहस्त लेखक की काक दृष्टि सर्वप्रथम अभिनय कला की ओर हुई आ टिकी। जिसका ऐसा होना स्वभाविक ही था; क्योंकि हिन्दी साहित्य जगत् की उच्च स्तरीय साहित्यरत्न; साहित्यालङ्कार (हिन्दी विद्यापीठ देवघर) परीक्षाओं की प्रौढ़ तैयारी में प्रसंगवश लेखक को कहानी, उपन्यास नाटक आदि की हजारों प्रतियों का अथक परिश्रम के साथ गम्भीर अध्ययन एवं मनन करना पड़ा। जिसके परिणाम-स्वरूप ही अभिनय-

कला में व्यवहारिक रुचि अग्रसर होती गई और इस जगत् का पाण्डित्यपूर्ण अध्ययन करने के कारण ही कलाकार लेखक में ऐसी चमत्कारिक कला का अभ्युदय प्रारम्भ हुआ कि नाट्य रंग-मंच में प्रविष्ट होते ही सफल कलाकार के प्रत्येक भाव प्रदर्शन पर एक ओर तो दर्शक जनता स्वर्गीय सुख लूटने में आत्म-विभोर होती रहीं, तो दूसरी ओर कलाकार जगत् में कायर एवं अहम् भाव प्रदर्शक अल्प कलाकार मन ही मन कुढ़ते रहते थे, जिसकी निर्णायक थीं दर्शक जनता की कौतूहलमय शब्द ध्वनियों के साथ तड़तड़ाहटमय करतल ध्वनियाँ ! इतना ही नहीं ! कलाकार की अद्वितीय सफलता का फलागम तो दर्शक जनता द्वारा प्रदत्त अमूल्य पुरस्कारों द्वारा ही होता है, जिनके विवेचनात्मक अध्ययन के फलस्वरूप कलाकार की बेजोड़ कला सफलता की अंतिम मंजिल पर पहुँची हुई दिखाई देती है।

अतः कलाकार अपने क्षेत्र में अकेला ही सफलीभूत होता दिखाई देता है, जिसका प्रत्यक्ष परिचय निम्नांकित कम्पनियों एवं संस्थाओं के मनन द्वारा प्राप्त होता है—

सर्व प्रथम शम्पा पिक्चर्स में सत्यनारायण केजरीवाल निर्मित श्री रामचन्द्र 'आँसू' रचित 'आजादी की आग' में श्री मदन मोहन टण्डन के निर्देशन में मिनर्वा थियेटर के रंगमंच पर प्रदर्शित होने वाले नाटक में भाग लिए। वसन्त कला मंदिर द्वारा प्रदर्शित होंने वाले नाटक 'राम भक्त' में होली के अवसर पर भाग लिए तथा हनुमान परिषद द्वार पदर्शित होने वाले नाटक 'बीर अभिमन्यु' में धर्मराज की भूमिका करते थे और पं० मुस्ताल काश्मीरी रचित 'आवाज़' नाटक में सेठ तोताराम की तैयारी अमर थियेटर के तत्त्वाधान में किए। दि बाम्बे कोरन्थियन थियेट्रिकल कम्पनी में गुलाम शाबिर के निर्देशन में 'महाराणा प्रताप' एवं 'नई दुल्हिन' नाटक के अभिनय में भी भाग लिए। प्रसिद्ध निर्देशक श्री कन्हैयालाल 'पँवार' के निर्देशन में मिनर्वा

थियेटर लिमिटेड में कुछ दिनों तक अपनी कला द्वारा श्रद्धा एवं प्रशंसा के पात्र बने रहे। श्री रामनाथ मेहरोत्रा रचित सामाजिक नाटक 'शीला' की प्रमुख भूमिका में काम करने के लिए गोल्डेन थियेटर में बुलाये गये। बम्बई से आयी हुई प्रसिद्ध नाट्य व्यवसायी 'फर्दुन इरानी' की कम्पनी में कोरन्थीयन थियेटर (आधुनिक ओपेरा) में काम किए तथा दुर्गादास सहगल के 'सूर्यकुमारी' नाटक में भी ओपेरा में भाग लिए। भारत प्रसिद्ध निर्देशक बाबू माणिक लाल के निर्देशन में उनकी 'राणी-सती' के अभिनय में भी भाग लिए। कर्मबीर संघ द्वारा प्रदर्शित होने वाले नाटक 'दानबीर कर्ण' में श्री कन्हैयालाल 'कातिल' के निर्देशन में महाराज इन्द्र की भूमिका की, जो नेताजी दिवस को मिनर्वा थियेटर में प्रदर्शित हुआ। आनन्द थियेटर में बहुत दिनों तक अभिनय करते रहे, जिसके नाटक ओपेरा के रंगमंच पर बराबर होते रहे। नारायण कला मन्दिर द्वारा प्रदर्शित होने वाले नाटक श्री काश्मीरी जी लिखित एवं निर्देशित 'मंजिल' नाटक को पुराना कोरन्थीयन थियेटर के रंग मंच पर अभिनय करने के अलावा अन्य सहयोग देकर सफल बनाए। एरिना थियेटर के जनरल मैनेजर हो गए। नाट्य जगत् के अनुभवी श्री यमुना प्रसाद पचेरिया के आदेशानुसार श्री गदाधर शर्मा के भक्त सूरदास नाटक में मा० अशरफ खाँ के निर्देशन में भंगवाड़ी थियेटर के रंगमंच पर हास्य रस की भूमिका की। जो कई दिनों तक प्रदर्शित होता रहा। प्रसिद्ध नाट्यकार श्री वृद्धिचन्द अग्रवाल 'मधुर' के सहयोगी के रूप में कुछ दिनों तक कार्य कर चुके हैं। नूतन नाट्य निकेतन निर्मित 'पंजाब केशरी' नाटक में लाला लाजपत राय की भूमिका करते थे।

पं० हरी प्रसाद उपाध्याय 'प्रेमी' की लौह लेखनी से रची हुई 'मैना सुन्दरी' में निर्माता पं० नन्दलाल पालीवाल के कहने पर चन्ना-निर्देशक की भूमिका तैयार करने में अथक परीश्रम किए। श्री कैलाशचन्द्र

जैन व्यवस्थापक हिन्दी रंगमंच के आग्रह पर 'इन्डिया टू डे' में सीता की भूमिका किए, जो हिन्दी रंगमंच की ओर से राक्सी छविगृह में प्रदर्शित हुआ, इनके अभिनय की प्रशंसा संगीत निर्देशक श्यामल मित्र ने की और अभिनय कला से मुग्ध होकर गोवर्द्धन कुमार स्यानियाँ ने स्यानिया विद्यालय की ओर से गोल्ड मेडल प्रदान किया। इसी समय सरकार प्रोडक्शन द्वारा निर्मित चित्र 'अमर सहगल' में निर्देशक नितिन बोस के आदेशानुसार छगन की भूमिका में निऊ थियेटर में आए।

राजस्थान ब्राह्मण पंचायत द्वारा प्रदर्शित होने वाले नाटक 'श्री सोमनाथ' में पं० मुस्ताल काश्मीरी के निर्देशन में महामन्त्री दामोदर मेहता की भूमिका मिनर्वा थियेटर के रंगमंच पर किए, इनकी कला से प्रसन्न होकर श्री भगवानदास जैन जौहरी ने सोने की अंगूठी प्रदान की। श्री रामतपेश्वर सिंह रचित ऐतिहासिक नाटक 'रानी सारन्धा' को दीवाना थियेटर बम्बई के तत्त्वाधान में फिल्मी एवं रंगमंच के चुने हुए कलाकारों को लेकर तैयार किए, इसमें फिलास्फर लतखोरीलाल की भूमिका करते थे।

नीली आर्ट थियेटर में मा० खादिम हुसेन एवं अनवरी बेगम के आग्रह पर 'निर्दोष गीता' में खड़गसिंह गुण्डे की भूमिका को राक्सी के रंगमंच पर किए एवं कलकत्ता थियेटर द्वारा कलकत्ता यूनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट में प्रदर्शित होने वाले नाटक 'अजात शत्रु' में प्रेमदत्त शर्मा आगरेवाले के आदेशानुसार महाराज उदयन की भूमिका कई महीनों के कठोरतम परिश्रम के बाद तैयार की तथा इसके अतिरिक्त अन्यान्य जगहों पर हिन्दी भाषा के अतिरिक्त गुजराती, बंगाली, मारवाड़ी और अंग्रेजी भाषा के नाटकों में भी भाग लिए और अति शीघ्र ही प्रेमा आर्ट थियेटर बम्बई द्वारा प्रदर्शित होने वाले नाटक 'बेचारे भिखारी' में सेठ झाबरमल की भूमिका में देख सकेंगे!

इस प्रकार अभिनेता जगत् से लेखक जगत् में कदम रखते ही लेखक की दूरदर्शी दृष्टि क्रमशः कहानी, उपन्यास एवं नाट्य साहित्य पर ही आ जमती है अनन्तोगत्वा ये ही विषय सिद्ध हस्त लेखक के लिएरचना जगत् के कल्पित कथानकों के कल्पित पात्रों के चरित्र चित्रणों में हमें वर्तमान ववरता पूर्ण एवं पाशविक स्वार्थ मय जगत् के यथार्थ नग्न चित्रण द्वारा समस्याओं के सुन्दर हलों में भविष्य में निर्मित होने वाले 'स्वर्गीयादर्शमय व्यवहार जगत्' का संकेत मिलता है, जिसमें मानव-मानव में न तो भेद भाव ही दिखाई देगा और न तो दुख दर्द ही रह जायगा। अपितु उस जगत् में ये वेद मंत्र व्यवहारिकता को प्राप्त होते दिखाई देंगे कि—"सर्वे सन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयम्।" तथा आत्मवत् भूतेषु यः पश्यति सो पश्यति" अर्थात् वर्तमान भौतिक व रसायनिक विज्ञान के युग में व्यवहारिक रूप से रोटी-बेटी एक विचार, सब मिल करो एक व्यवहार एवं सम्पूर्ण मानव मात्र का उसके परिवार तथा चल-अचल सम्पत्ति सहित राष्ट्रीय करण करना। अखिल विश्व की एक ही जाति एवं सांस्कृतिक निर्माण। गर्भ नियंत्रणएवं जन संख्या का जनेच्छा द्वारा वितरण। मानवता पूर्ण न्याय पर आधारित सुख-दुख सुविधा वितरण के साथ ही दैनिक दिनचर्या में ही नागरिक का नित्य ही निश्चित अवधि के भीतर ही राष्ट्रीय सेवा के लिए बाध्य एवं विवश होना, जिससे सुख-शान्ति वितरण में सुविधा हो सके आदि।

अस्तु ऐसी व्यवस्था से यह नारकीय जगत् व्यवहारिक स्वर्ग में बदल जायगा जबकि आत्मवत् व्यवहार की उपस्थिति में लोक-संहार का प्रश्न ही न उठेगा और दुर्गुणों की इहलीला ही समाप्त हो जायगी। अतः ऐसी लोक विरोधी पर यथार्थ व्यवहारिक आदर्श-वादी गंभीरतम विचारधारा का सजीव परिचय हमें लेखक द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थ में बेचारे भिखारियों व समाज द्वारा उपेक्षित नीरीह जनों की

हृदय द्रावक समस्याओं के सुन्दरतम् सुखान्तकारी हल में प्राप्त होता है जो लेखक की यथार्थवादी विचारधारा वाहक लौह लेखनी की विजयनी सफलता का एकाकी प्रतीक है। जिससे लोक में झूठा नाम कमाने वाले, पाशविक स्वार्थ की माला जपने वाले और अन्ध-विश्वासी एवं अर्थ व सम्मान लोलुपजन थल की मछली के समान तिलमिला उठते हैं और हाथ मलकर रह जाते हैं। क्योंकि लेखक की यथार्थवादी न्यायप्रिय दृढ़ता के सम्मुख उनकी कालनेमिवत् सब चालें विफल हो जाती हैं और लेखक अपार कष्टों को सहन करता हुआ अपने उद्देश्य में सफल होता है। लेखक की अन्य रचनाओं में धड़ाका कहानी संग्रह, मार डाला उपन्यास एवं बाप बेटा, तेरी मेरी मर्जी, मार डाला, विषधर नागिन और कनवा राजा आदि के पात्रों के सफल चरित्र चित्रणों में सुन्दरतम् समस्याओं की पूर्ति के साथ ही उस स्वर्गीय सुख-शान्तिमय व्यवहारिक आदर्श जगत् के नव-निर्माण का अन्तिम संकेत भी मिलता है अतः विरोधी विचारक, लेखक अन्ध विश्वासी, अव्यवहारिक सांस्कृतिक दासता के वशीभूत होकर सत्य ज्ञान के अभाव में या लोक विरोधी भय से भयभीत होकर ही यथार्थ व्यवहारवादी लोकमंगलकारी सत्यान्वेषी भावनाओं से परे रहे हैं और हैं भी! जिनकी कठोर श्रृंखलाओं को तोड़कर क्रान्तिकारी लेखक ने यथार्थवादी विचारों के प्रदर्शनार्थ हो अपनी लौह लेखनी को उठाकर अनन्त संघर्षों के सम्मुख कर्त्तव्य क्षेत्र में आ डटा, जिसके सामने विरोधी टिक न सके।

इस तरह से लेखक अपने दूसरे कदम की सफलता के बाद निर्देशक के रूप में अब तीसरे कदम की सफलता हेतु कटिवद्ध होता है, जिसमें विरोधी निर्देशक आत्म-सम्मान की चोट से मर्माहत होने पर भी दबे हृदय से सफल निर्देशक की सफलता की भूरि-भूरि प्रशंसा करने में नहीं चूकते! ये नूतन नाट्य निकेतन द्वारा प्रदर्शित होने

वाले नाटक 'पंजाब केशरी' दीवाना थियेटर बाम्बे द्वारा प्रदर्शित होने-वाले नाटक 'रानी सारन्धा' एवं कलकत्ता थियेटर द्वारा प्रदर्शित होने-वाले नाटक 'अजात शत्रु' आदि के निर्देशक रह चुके हैं और अब प्रेमा आर्ट थियेटर बम्बई द्वारा प्रदर्शित होने वाले नाटक 'बेचारे भिखारी' को सफल बनाने में संलग्न हैं !

'अन्त भला तो सब भला' कहावत को चरितार्थ करते हुए लेखक के चरित्र; अभिनय, लेखन एवं निर्देशन की कला, कीर्ति की कर्म-कसौटी पर कसने से वह तपे-तपाए देदीप्यमान, खरे स्वर्ण की भाँति निखर उठता है। जिसमें लोकमंगलकारी भावना मानो घर कर गई है।

अतः लेखनी को विश्राम देने के पूर्व लोकमंगलकारी से निवेदन है कि वह लेखक को दानवलोक के पार मानवलोक में चतुर्दिक सफलता प्रदान करते हुए प्रगति के एवरिस्ट पर सफलता की विजय लक्ष्मी तक पहुँचा दे।

काशी
३१ जुलाई १९५८

डा० कल्पनाथ 'मानव'

—x—x—

पुस्तक मिलने का स्थान:—

उपन्यास-बहार-आफिस, राजघाट, वाराणसी।

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, पटना, ज्ञानवापी, वाराणसी, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता।

सुभाष पुस्तक मन्दिर- अवधगर्वी, वाराणसी।

इन्डियन बुक साप, थियोसिपिकल सोसायटी कमच्छा, वाराणसी !

मिश्रा पुस्तक भण्डार, १९५।१, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता।

मित्र मण्डल, ८ बी०, दूसरी फँणसवाडी, बम्बई २।

—x—x—

अंक प्रथम दृश्य पहला

[प्राचीन मठ के प्रांगण में स्वर्ण-मन्दिर, मन्दिर के मध्य में राधा-मोहन की रत्न-खचित प्रतिमा पुष्प-हार से सुशोभित है। प्रातःकाल बालक-बालिकाओं की मण्डली पुष्प-हार लेकर आती है और हाथ जोड़कर, नतमस्तक हो वन्दना-गीत गाती है। पुजारी जी आरती करते हैं। तत्क्षण नाटक का शुभारम्भ होता है।]

[वन्दना गीत]

जय जय जय दीनबन्धु, सन्तन सुखदाई।
ऐसी महिमा अपार, पावत सुर-नर न पार ॥
गावत शत सहस शेश शारद ! समुदाई ॥ जय०
अनयन को नयन देत, अचरन को चरन देत।
शरन देत अशरन को, निधन धन पाई ॥ जय०
मंगलमय! मंगल कर, प्रभुवर! सब संकट हर।
जय जय जय जयति, जय जय जय जदुराई ॥ जय०

—"**व्यथित प्रेमी**"

[बालक-बालिकाओं का पुष्पार्पण करते हुए प्रसाद को लेकर लौटना।]

—पट परिवर्तन—

अंक प्रथम दृश्य दूसरा

[ग्राम की पूर्व दिशा की ओर एक झोपड़ी भवन से लगी हुई है। दूर पर सघन-वृक्षों का सुखद-सुरम्य-निकुंज दिखाई पड़ता है। भास्करानन्द झोपड़ी से चिन्ताग्रस्त निकलते हैं। समय सायंकाल, चन्द्रमा की शीतल छाया का वसुन्धरा पर शनैः शनैः पड़ना।]

भास्करानन्दः—[झोपड़ी से निकलते ही] आज प्रकृति की गोद भी कैसी सुहावनी मालूम हो रही है! कितना रमणीय व्योम-मण्डल है!! [सोचते हुए] कल दीपावली का पर्व है। घर-घर में उछाह मनायी जायगी। पृथ्वी पर सितारों का संसार बसाया जायगा। लेकिन........लेकिन......मैं जब दीपावली मनाने का विचार करता हूँ, तो मेरे मानस में अशान्ति का सागर हिलोरे मारता हुआ दृष्टिगोचर होता है। कुछ कहना चाहता हूँ; मगर वाणी अवरुद्ध हो जाती है।

[चिन्ता निमग्न होकर]

मेरे प्राण-प्रसून से बच्चे! तुमको मैंने प्यार से पाला–पोशा.... खिला-पिलाकर बड़ा किया जब सुख भोगने का समय आया, तब निष्ठुर! अपने अभागे बूढ़े बाप को छोड़कर चल दिये। हाय! मेरे पूज्यनीय माता-पिता की सुखद गोद भी बाल्यकाल में छूट गई। साक्षात् देवी की मूर्त्ति! सती साध्वी धर्मपत्नी भी; जो संकट-काल में परछाहीं थी, हैजे के प्रकोप में चल बसी। हाय! हाय!! समस्त मानव लोक में अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा है........।

[सहसा व्यग्र होकर पुनः अपने उद्-गारों को व्यक्त करता है]

मगर कौशल्या उस महाकाल के गाल को फाड़कर मेरी इस जीर्ण-शीर्ण कुटिया को आलोकित कर रही है। कृषि से जो थोड़ा बहुत पैदा कर लेता हूँ, उससे जिविका चल ही जाती है, मुझे भगवान की भजन करने के लिये चाहिए ही क्या ?

यों....तो....मनुष्य आवश्यकताओं का जितना विस्तार करेगा दिन प्रतिदिन द्रौपदी की चीर को तरह ! बढ़ती ही जायेंगी। ऐसी दशा में मनुष्य की आत्मा को वास्तविक शान्ति स्वप्न में भी नहीं मिल सकेगी। हे संसार के रहने वालों ! नयन पर पड़ा हुआ अज्ञानता का पर्दा हटा कर देखो ! एक दीन, हीन, मलीन एवं दुर्बलावस्था का ग्रामीण किसान भी ! एक भव्य रमणीय तथा एवरेस्ट के उच्च शिखर से होड़ लगाने वाली अट्टालिका में रहने-वाले धन-पशुओं से लाख गुनो चैन की नींद सोता है.......।

[सहसा कौशल्या आकर चरण पकड़ती है, तो भास्करानन्द प्यार जतलाता हुआ वक्षस्थल से लगाता है।]

आ गयी कौशल्या ! रानी बिटिआ आओ !! आओ मेरी बच्ची !!!

कौशल्याः—आज इतनी देर कहाँ हुई यही पूछना चाहते हैं न? जाइये मैं आप से नहीं बोलूँगी ।

भास्करानन्दः—पगली कहीं की ! [कौशल्या को मनाते हुए] अपने बच्चों की देखभाल करना ही तो माता—पिता का कर्त्तव्य है।

कौशल्याः—तो...कल ही आप से कहा था न ! कि मैं कल इनाम पाऊँगी !! सभा की कार्यवाई में बिलम्ब होने की आशंका है, इसलिए देर से आऊँगी !!!

भास्करानन्दः—[सिर हिलाते हुए] हाँ, हाँ, बिटिया ! बुढ़ौती में

सब के साथ स्मरण शक्ति भी शिथिल पड़ जाती है, इसलिए बिटिया! रूठकर और शिथिल न बनाओ।

कौशल्याः—पिता जी! मैं एक बात आप से कहना चाहती हूँ।

भास्करानन्दः—हाँ, हाँ, बिटिया! एक नहीं सौ बात खुशी से कहो?

कौशल्याः—मैं हमेशा के लिए विद्यालय से बिदा कर दी गयी?

भास्करानन्दः—क्या कहा? अध्यापिका ने तुझे निकाल दिया!

कौशल्याः—[मुँह बनाकर हँसना] नहीं पिता जी!

भास्करानन्दः—स्पष्ट—स्पष्ट कहो बेटा!

कौशल्याः—मैं प्रथम श्रेणी में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण हुई हूँ पिता जी!

भास्करानन्दः—[प्रसन्नता से गद्गद् होकर] युग युग जियो बिटिया!

कौशल्याः—आप तो पूरी बात भी नहीं सुनते हैं और मारे खुशी के नाचने लगते हैं।

भास्करानन्दः—कहो, कहो बिटिया!

कौशल्याः—प्रधानाध्यापिका ने यह मुझे पारतोषिक दिया है। विद्यालय की बालिकाओं के सम्मुख—मुझे सबका साधुवाद भी मिला है। पिताजी! मेरा इतना सत्कार कभी नहीं होता था और प्रधाना ध्यापिका ने समस्त बालिकाओं को मेरे सदृश्य होने का आशीर्वाद दिया है।

भास्करानन्दः—[उत्साह से] सच!

कौशल्याः—[रोनी सूरत बनाकर] नहीं तो क्या झूट?

भास्करानन्दः—तो, तुम फिर रूठ गयी........!

कौशल्याः—[खिल-खिलाती हुई] नहीं! नहीं!! पिता जी!!! मेरी सहेलियाँ महा विद्यालय में पढ़ने जायँगी मेरा भी नाम लिखवा दीजिए!

भास्करानन्दः—[अर्द्ध मूर्छित अवस्था में] अभागिनी कौशल्या! यह तेरा बूढ़ा बाप अब नहीं पढ़ा सकता! मेरी वृद्धावस्था के साथ-

साथ धन भी बुड्ढा हो गया बेटी ! तेरे अरमानों का संसार कैसे बसाऊँ ? हे मेरे भगवान !

[मूर्छित होकर भास्करानन्द गिरना ही चाहते हैं कि कौशल्या सँभालती है।]

भास्करानन्दः—छोड़ो पढ़ाई को ! तुम्हारी अवस्था विवाह करने योग्य हो गयी है। किसी युवक से तुम्हारा पाणिग्रहण कराकर तुमसे उऋण हो जाऊँ बेटी ! मुझ पीले पत्ते का कौन भरोसा !! कब और किस समय ? टपक पड़ूँ ....?

हाय ! इसके बाद तुम्हारा सहारा देनेवाला कोई नहीं रहेगा बेटी ! इसीलिए निर्धनता में ही तेरी उम्र भी सोलह वर्ष की हो गई। इस निर्जीव झोपड़ी में कैसे रह सकोगी ? आधुनिक समाज पाप वासनाओं के वशीभूत होकर; कलुषित हो गया है, उसके कलंक का टीका शताब्दियों तक नहीं धुल सकेगा ! [जनता की ओर संकेत करके] इन्हीं में से समाज के कर्णधार बनने की डींग हाँका करते हैं। साम्प्रदायिक दंगे में माँ-बहनों का सतीत्व अपहरण किये। अरे ये कामी कुत्ते ! बीच बाजार में निर्ममतापूर्वक उनके साथ व्यभिचार और बलात्कार किये ! नन्हें-नन्हें बच्चों को मौत के घाट उतारे !!........

कौशल्याः—बस पिता जी ! अब नहीं सुना जाता !!

भास्करानन्दः—ओह ! ओह !! युग-युग से पूजनीया देवियों का नग्न जुलूस निकाला गया। भावी भारत-भूमि के कर्णधार बच्चे ! जिनको यदि उचित शिक्षा मिले; तो वे गाँधी, सुबास, प्रेमचन्द, दयानन्द, निराला, बर्नाडशा, मिल्टन, लेनिन और वीर सावरकर हो सकते हैं, लेकिन उन्हें शिक्षा से वंचित रखकर उनके कोमल गले पर कुठाराघात किया जा रहा है।

कौशल्याः—शान्त होइये पिता जी !

भास्करानन्दः—[व्यंग से] शांत होइये पिताजी ! पूँजीपति ! ऐश्वर्य का प्रलोभन दे कर; सम्भोग के लिए महाकाली को देखकर जिह्वा से लार टपकाया करते हैं। ये बहेलिए ! सामाजिक श्वान !! अत्याचारी !!! मानव की वेश-भूषा में रहनेवाले जीवधारी भंयकर भेंड़िये ! तुम्हें अपने चंगुल में लाने के लिए नाना प्रकार का षड़यन्त्र रचेंगे बेटी !! रानी बिटिया कौशल्या ! तुम्हीं सोचो !! तुम्हीं सोचो !!!

कौशल्याः—अक्षरशः सत्य कहते हैं पिता जी !

भास्करानन्दः—तो तुम्हीं सोचो बेटी ! कि मैं क्या करूँ ?

कौशल्याः—[श्रद्धामयी शब्दों में] लेकिन पिता जी ! मैं पढूंगी ! अवश्य पढूंगी !! आप के चरणों की शपथ खाकर कहती हूँ कि साक्षरता का प्रचार करूँगी। जात-पात, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के बीच की खाई को मिटाऊँगी ! भिखमंगी जो देश के मार्ग में रोड़ा अटका रही है उसका नाम तक न रहने दूँगी और विवाह शिक्षोपरान्त करूँगी !!

भास्करानन्दः—[आश्चर्य से] ऐसा कठिन व्रत ! क्या तुम निभा सकोगी ?

कौशल्याः—वर्तमान समाज की कुरीतियों, ढोगों, पाखण्डों और विडम्बनाओं को आमूल नष्ट करूँगी ! [अभिमान पूर्वक] नारी विश्व के अन्दर क्या नहीं कर सकती पिता जी ? पिता जी ! नारी के अन्दर माता का उज्ज्वल प्रेम, युवकों के प्यास की तृप्ति और विश्व के संहार करने की शक्ति निहित है। ध्यान से सुनिये पिता जी ! नारी तो सीता, गायत्री, मदालसा, मैत्रेयी, झाँसी वाली रानी, पद्मिनी, जोन आफ आर्क, एलिजा बेथ, मेरी ट्यूडर,

सुल्ताना बेगम, विजयलक्ष्मी पण्डित, सरोजनी नायडू, मीरा, महादेवी वर्मा और पन्ना दाई भी थीं और हैं।

भास्करानन्दः—[गर्व से] आज मैं धन्य हूँ! तुम्हारी जैसी कन्या पाकर आज मैं धन्य हूँ!! तुम संघर्षों से लड़ो बेटा! संघर्ष ही जीवन है!!! भारतवर्ष में एक मिनट के अन्दर चौदह बच्चे उत्पन्न होते हैं। एक न एक दिन इस जगती-तल से बिदा हो ही जायँगे! उनको कौन जानता है? विद्वानों की मति है कि उतनी ही सन्तानें पैदा करनी चाहिए जितनी का भरण-पोषण कर सकें अथवा शिक्षित, योग्य और अध्यवसायी बना सकें, जो नर ऐसा नहीं करता वह नरक-गामी होता है! [हँसते हुए] मगर ये भारतीय! स्त्री को बच्चा उत्पादक केन्द्र बना रक्खे हैं। असंख्य नर-नारी ऐसे हैं, जिनके घर में चूहे दंड पेलते हैं और जिधर देखो उधर नन्हें-नन्हें बच्चे नंगे लोट रहे हैं और टें-टें में-में करके रो रहे हैं। सरकार को चाहिए कि जन्म-नियन्त्रण करे। अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाले के ऊपर अधिक राजकर लगाये; नहीं तो कुछ ही दिनों में भारतवर्ष में नपुंसकता का एक छत्र-साम्राज्य स्थापित हो जायगा। ध्यान से सुनिए! भारतवर्ष का उज्ज्वल इतिहास पुकार-पुकारकर कह रहा है। "भीष्म" जो त्यागी, ब्रह्मचारी, विजेता एवं स्वेच्छा से मरनेवाले पुरुष थे। ऐसे नर-पुङ्गव की मृत्यु का कारण एक सिखण्डी हुआ। आज ऋषियों की तपोभूमि पर जन्म लेनेवाले लाखों हिजड़ों से भगवान बचाये!

कौशल्याः—शांति रखिए, पिता जी!

भास्करानन्दः—निश्चय! तुम्हें जाना चाहिए!! शुभ कार्य में बिलम्ब ठीक नहीं होता। लो यह मेरी अन्तिम पूँजी जिसे सँजोकर रखा था।

[भास्करानन्द पोटली से बहुमूल्य हार निकालकर कौशल्या को देता है, जिसे कमर में बाँधे था ।]

भास्करानन्दः—लो बिटिया ! [देते हुए] हाँ, सब सामान ठीक कर लो ।

कौशल्याः—मैं तो पहले से ही सब सामान ठीक कर चुकी हूँ पिता जी !

[अन्दर जाकर गठरी लाती है और भास्करानन्द हँसते हैं ।]

भास्करानन्दः—[हँसते हुए] कितनी उत्साही बच्ची है !

[कौशल्या का सजल नेत्रों से पिता की पद-धूल लेना और हरिण के बच्चे की भाँति दुखी भाव में प्रकम्पित पावों को धीरे-धीरे बढ़ा कर जाना ।]

भास्करानन्दः—सौभाग्यवती हो बिटिया !

[भास्करानन्द का निर्निमेष सजल नेत्रों से निरखते रहना ।]

—ःपट परिवर्तनः—

——×——×——

अंक प्रथम दृश्य तीसरा

[नगर की लम्बी-चौड़ी सड़क। राहगीरों का आवागमन हो रहा है। ठग भिखारी लोढूचन्द दुलारे के साथ लम्बे थैले में तेल-बिक्री का सामान लेकर आता है। आने के साथ ही थैला रख कर उपानह शास्त्री को पीटना शुरू करता है। दुलारे खड़ा होकर तमाशा देखने लगता है। मध्यान्ह काल।]

लोढूचन्दः—[भीड़ इकट्ठी होते ही गाना प्रारम्भ करता है]

[गीत]

ये न पूछो मुसाफिर! मैं क्या बेंचता हूँ?
तेरे दर्द दिल की दवा बेंचता हूँ!!
ये न जादू, न टोना, नहीं खेल है!
तेरे काम आये, वही तेल है!!
क्या आपने सुना तेल का नाम है!
प्योर!
हिमराज ही इसका शुभ नाम है!!

—"किशोर"

भाइयो, बहनों और बुजुर्गों!! आप लोग मेरे पास इतना बड़ा थैला और इसमें लाल-पीले लेबिल की शीशी देखकर; जो लम्बी, बड़ी, चौड़ी और मोटी है, इसके नमूने को देखकर आप दंग रह जायँगे। मैं आप लोगों को चकमें का चूरन नहीं चटाने आया हूँ। यह जादूई अँगूठी नहीं है। मेरे इस तेल को लगाने से बूढ़ा जवान और बच्चा सयान हो जाय ऐसी करामात नहीं........

इन्नाः—तब इस भानमती के पिटारे में क्या है पण्डितजी!

लोढूचन्दः—इसमें है विश्व-विख्यात "हिमराज सुन्दर तैल" जिसको लगाने से आँखों में तरावट, बालों में चमक, मस्तिष्क एकदम ताजा और काला बाल सफेद हो जाता है।

मदनः—[घबड़ाकर] अरे पण्डित जी महाराज ! सब गुण तो ठीक है; मगर काला बाल सफेद हो गया, तो सब गुड़ गोबर हो जायगा !

लोढूचन्दः—[दाँत निपोरते हुए] हाँ, हाँ, ऐसी बात नहीं ! चमड़े की जबान लड़खड़ा गई भाई ! इसको लगाने से दिन में आकाश के तारे नज़र आने लगते हैं। इतना ही नहीं हिमराज सुन्दर तैल के लगाने से सिर दर्द, सबलवाई, अधकपारी, दिमाग़ की कमजोरी, आँखों से पानी आना, कीचड़ जाना, सिर में चक्कर आना, कम दिखाई देना, रतौंधी, हिस्ट्रिया, मिरगी, उनमाद, पागलपन इत्यादि-इत्यादि रोग हवा हो जाते हैं। न विश्वास हो तो लगाकर देखते जाइये ! हाथ कंगन को आरसी क्या ?

मंगली:—वाह पड़ितजी ! इसमें जादू सा गमक आवत बा ! ला ला पड़ित जी ! मोका भी एक मोटी शीशी दा !

इन्नाः—पतली शीशी मुझे गुरू !

मदनः—छोटका हमऊ के दे दा हो लोढूचन्द !

लक्ष्मनः—चौड़ावाला इकड़े दे दो तिकड़े !

भोलाः—लम्बावाला हमरा का देवल जाय वैद्यजी महराज........!

लोढूचन्दः—[शीशी देने के बाद] भाइयो ! अब नमूने का तेल समाप्त हो गया ! अब सिरफ एक ही शीशी है !

गोपालः—ये लीजिए एक रुपये और इधर बढ़ाइये !

लोढूचन्दः—यह नमूने को शीशी मेरे पास रहेगी अब आप लोग वी० पी० से मँगाइये। इसका ट्रेडमार्क नम्बर एक लाख पन्द्रह हजार तीनसौ तिरसठ नोट कर लीजिए, इसका शुभ नाम है हिम-राज सुन्दर तैल ! मँगाने का पता पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्यभूषण

एकसौ छप्पन अपर सरकुलर रोड हरीशाहा मार्केट कलकत्ता छ !

[इकट्ठी जनता एक शीशी मुझे पण्डित जी, तेलवाला मुझे देना। आदि आदि चिल्लाती हुई टूट पड़ती है। तत्क्षण दुलारे कई आदमियों का पाकेट मारकर गोल हो जाता है।]

नरगिस:—[आते ही] हटिए ! आप लोग हटिए !! पण्डितजी का प्राण ही आप लोग ले लेंगे !

[भीड़ हटती है और मंगल सिंह ढोलक और रमजान अली हारमोनियम लेकर आता है।]

नरगिस:—[हाथ में तेल की शीशी लेकर] वाह ! इस शीशी में क्या है ओस्ताद !

लोटूचन्द:—इसमें हुस्न को बढ़ाने वाला हिमराज सुन्दर तैल है।

नरगिस:—[कार्ग खोलकर] अहा हा ! इतनी बढ़िया चीज़ ! [सूँघ कर] वाह ! वाह !! वाह !!! कितनी अनुपम वस्तु है।

लोटूचन्द:—और आप क्या बेंचती हैं ?

नरगिस:—हा हा हा हा मैं क्या बेचती हूँ ? मैं बेचती हूँ ! चकमें का चूरन !! ले ओ ओस्ताद जी !

रमजानअली:—दे दो बेटी !

नरगिस:—ये देखिए ! मैं ये बेंचती हूँ !!

[नरगिस का नखरे से जाना और मंगलसिंह तथा रमजानअली को संकेतों से कहना तथा भाव-भंगिमा से नृत्य करने लगना।]

[नरगिस का नृत्य गीत]

टनाटन की बोली, न बोल मोरे रजवा !
दिल की खिड़कियाँ न खोल मोरे रजवा ॥
टनाटन की बोली ने दिल मोरा छीना ।
तू ही बना है मोरे दिल का नगीना ॥
मोरे दिल की अंगियन में खेल मोरे रजवा ।
टनाटन की बोली न बोल मोरे रजवा ॥
चढ़ती जवानी है घायल जमाना, जमाना ।
मौसम सुहाना है दिल ना चुराना, चुराना ॥
डर मोहें लागे सूनी सेज मोरे रजवा ।
टनाटन की बोली न बोल मोरे रजवा ॥
नाजुक बड़ा ही मोरा दिल ओ प्यारे ।
ठेस लागे औ टूटै त कवन सँवारे ॥
आजा पुकारे दिल ओ मोरे रजवा ।
टनाटन की बोली न बोल मोरे रजवा ॥

—**"जोशी निर्मल"**

रमजानअली:—जियो ! बिटिया जियो !! लाख बरस तक जीयो !!!
मंगलसिंह:—ले लो बाबू लोगों से इनाम !
सब:—वाह ! वाह !! क्या कहने ?

[दुलारे इकट्ठी भीड़ में कई आदमियों की जेब कतरता है, इसी समय बाकर अली और कल्लू सिंह जाट नामक पुलिस वालों का आना ।]

कल्लूसिंहः—पकड़ो इन बदमाशों को ! रोज मजमा लगाते हैं। हम लोगों को देखते ही भाग जाते हैं। मुन्शी जी ! देखिए न कैसा भिखारी का स्वांग रचे हैं; इन लोगों का भी उस डाके से सम्बन्ध मालूम होता है।

नरगिसः—मुन्शी जी ! यह काहे बात है ? हम हन कय का गलती बाय दरोगा जी ?

बाकरअलीः—कल्लू सिंह ! इस नर्त्तकी को भी ले चलो, थाने में गाना सुना जायगा।

नरगिसः—मुंशी जी ! ऐसा जुलुम न ढाहो।

बाकरअलीः—जुलुम की बच्ची !

इन्नाः—छोड़ दो न दारोगा जी ! बेचारी माँगती खाती है। दीना है !

कल्लूसिंहः—अच्छा नरगिस ! एक फड़कता हुआ गाना सुनाओ। मुंशी जी गाना सुनिए !

बाकर अलीः—अमाँ ये क्या बके जा रहे हो ? बड़ा साहब अगर गस्त में आ गया, तो नौकरी से भी हाथ धोना पड़ेगा।

कल्लूसिंहः—जीवन भर तो नौकरी ही करनी है। चन्द घड़ी तो मौज ले लो चाचा ! नरगिस सुनाओ ! नखरे का मसाला, चोन्हा की चटनी, चितवन की चाट और मुसकान की मिठाई भरा मन मोहक गीत ! अमां ओस्ताद जी क्या देर दार है ?

मंगलसिंहः—अभीं लो बाबू साहब !

बाकरअलीः—नहीं, नहीं, पकड़ ले चलो इनको........

सबः—मुंशीजी....एक गाना....

बाकरअलीः—[नज़ाकत से] अच्छा जब सब लोगों की राय है, तो नरगिस सुना दो एक गाना ! अच्छा तो ओस्ताद जी छेड़ दो अपनी हारमोनियम !

रमजान अलीः—आपकी आज्ञा हो और हम न बजायें। बिटिया !

सुनाओ तो एक चहकता हुआ गाना और मुंशी दरोगा जी से भी लेलो इनाम !

नरगिसः—अभी लो ओस्तादजी !

[नरगिस का नृत्य गीत]

हाय ! हाय रे !! हाय रे हाय हाय हाय !!!
तेरी तिरछी नजर, करे दिल में असर, मोरी पतरी कमर बल खाये रे !
जोबन पर जवानी छाई रे, मस्ती भरी अँगराई रे !!
मोरे भोले सजन, नहीं काबू में तन मन, जिया ललच ललच रह जाई रे !!
हाय ! हाय रे !! हाय रे हाय हाय हाय !!!
ओ मोरे बटोही राजा........ओ राजा........

[इसी समय गोपाल की फाउनटेन-पेन दुलारे लपक कर निकाल लेता है वह चिल्लाने लगता है ।]

गोपालः—मुंशी जी ! मुंशी जी !! दरोगा साहब !!! मेरी फाउण्टेनपेन किसी ने उड़ा दी ।

बाकरअलीः—चुप बे ! रङ्ग में भङ्ग डालता है !! तेरा बाप भी फाउण्टेन लगाया था ! गाओ......गाओ........गाओ नरगिस........

[नरगिस का पुनः नृत्यगीत]

ओ मेरे बटोही राजा, बुझा जा, आ जा,
तपन मोरे जी की, जलन मोरे जी की ।
पिया तेरी कसम, तू ही मोर खसम,
दिल तुम बिन चैन न पाये रे ।।

मैं जमुना किनारे आऊँगी,
पिया तुमको गले से लगाऊँगी ।
कुछ दिन के ढले, पीपल के तले,
गल बहियाँ डाल मुसकाऊँगी ॥
हाय ! हायरे !! हायरे हाय हाय हाय !!!

"व्यथित प्रेमी"

——×——×——

[गाना समाप्त होते ही कई दर्शकों के अलावा बाकर अली की जेब से भी दुलारे पाँच रुपये का नोट उड़ा कर चम्पत हो जाता है ।]

बाकरअलीः—अमां गाना क्या सुना ? रोना हो गया ! ताज्जुब ! मेरी जेब से भी पाकिटमार पाँच रुपये ले लिया !

कल्लू सिंहः—अभी पता लगाता हूँ उस पाकिटमार का ! घबड़ाइये नहीं मुंशी जी ! मैं कब्र में से भी ढूंढ़ निकालूँगा !

बाकरअलीः—शाबाश !

[सब दर्शक गोल हो जाते हैं पीछे-पीछे लोट्टूचन्द थैला लेकर डरते-डरते भागता है ।]

लछमनः—मुंशी जी ! मेरा भी किसी ने पचीस रुपये काट लिया। अब मैं क्या करूँ रे मेरी मावा ! मेरी घरवाली जीने नहीं देगी........

[लछमन फूट-फूटकर रोता है ।]

बाकरअलीः—कल्लू सिंह ! नरगिस को पकड़ लो !!

नरगिसः—[हाथ जोड़कर] दरोगा जी ! मैं तो आप को गाना सुना रही थी !

मंगल सिंह:—[डरते हुए] मैं तो ढोलक बजा रहा था सरकार !

रमजान अली:—मैं तो हारमोनियम बजा रहा था परवर दिगार !

बाकरअली:—नरगिस ! तुम्हारे साथ और कौन था ?

नरगिस:—[इधर-उधर देखकर] कोई नहीं.......कोई नहीं........

मंगली:—एक लड़का मेरी पाकिट की ओर उचक-उचक कर देख रहा था।

कल्लू सिंह:—किधर गया बदमाश !

इन्ना:—[कल्लूसिंह से कहता है] इधर गया !

बाकरअली:—कल्लू सिंह ! पकड़ लो बदमाश को ! भाग कर जाने न पाये। नरगिस ! अब आज से तुम्हें गीत गाकर मजमा लगाते देखा तो तुम्हारी खैर नहीं !

[दर्शकों के पीछे-पीछे कल्लूसिंह जाट और बाकरअली का दौड़ कर जाना ।]

नरगिस:—[मुँह बनाकर] खैर नहीं !

[नरगिस का अठखेलियाँ करते हुए जाना, उसके पीछे रमजान-अली और मङ्गलसिंहका जाना।]

—पट परिवर्तन—

——×——×——

अंक प्रथम दृश्य चौथा

[दिल्ली में सेठ झाबरमल की भव्य अट्टालिका। कमरे में बिजली के पंखे चल रहे हैं। रंग-बिरंगे बल्ब अपने प्रकाश से कमरे को आलोकित कर रहे हैं। कमरा नवीन सजावटों से सजा हुआ है। सेठ झाबरमल नरम गद्दीदार तकिए के सहारे बैठे हुए हैं और आँख पर चश्मा लगाए हुए बही-खाते को उलट-पुलट रहे हैं।]

झाबरमलः—[उठकर टहलने लगते हैं] समय बड़ा बलवान होता है। गौराङ्ग महाप्रभुओं के युग में व्यवसायियों को राजकीय कठिनाइयों से शीघ्र छुटकारा मिल जाता था; मगर आज का समय ऐसा रुद्ररूप धारण किए हुए है कि पलभर में क्या से क्या हो जायगा, कुछ समझ में नहीं आता ! [दीर्घ उसासें लेकर] रात्रि को सोता हूँ, तो नींद किसी भी तरह आती ही नहीं और प्रातःकाल होते ही नित्य के गोरख-धन्धों में पड़ जाता हूँ। करोड़ों रुपये होने पर भी एक क्षण आराम नहीं मिलता। [नौकरों को पुकारता है] ओ मटनू, कटारू, फकीरा, खुशहाल, ओफ ! सब के सब मर गए क्या ?

[फिर अपने आप बड़बड़ाने लगता है।]

आजकल नौकरों का भी रंग-ढंग नहीं मिलता है, जिधर देखता हूँ, उधर से विपत्तियों का बादल मँडराता हुआ दृष्टि-गोचर होता है ! नाई संघ, ब्राह्मण संघ, नौकर संघ, परिषद्, क्लब, सभा, सोसायटी, दल, कला-मन्दिर, शिक्षालयों आदि

अन्य अनेकों से तो मेरे नाक में दम आ गया है। ये धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक पार्टियाँ एवं संस्थायें! हमीं पूँजीपतियों से चन्दे लेकर ही चलाते हैं और अपनी-अपनी दफली—बजाकर कहते हैं—पूँजीवाद का नाश हो! सामन्तशाही मुर्दाबाद!! सामन्तशाही मुर्दाबाद!!! मेरे जी में आता है कि इन फटीचरों को नंगा करके जी भर कोड़े लगाए जाँय! जिससे ये फिर कभी भी उठने का नाम न ले सकें!! मगर चन्दा न देने से भी कल्याण नहीं है।

अब तो पता चला है कि वेश्याओं ने भी "गायिका संघ" खोल रक्खा है। सभी गीध की तरह धनवानों के धन पर आँखें लगाए बैठे हैं; अगर हम लोगों ने थोड़ी सी भी गलती की, तो जीवन अन्धकार में पड़ जायगा। मेरी कुछ समझ में नहीं आता! कि क्या करू? और कहाँ जाऊँ........?

एक लड़का है! वह भी आवारा निकल गया!! [अपने दोनों हाथ आकाश की तरफ उठाते हैं] ऐसे लड़के को भगवान मौत दे दे तो अच्छा है। दिन-रात कंगला एवं भिखारियों के साथ घूमा करता है। मालूम होता है, इसने सबको सुधरने का ठीका ले रक्खा है। सन्ध्या हुई तो ठाट-बाट से घर आ जायगा; मालूम होगा बेटा पढ़कर ही आ रहा है! वह तो सोचता है कि मैं कुछ समझता ही नहीं! बाप भिखमंगी बढ़ाना चाहता है, तो नालायक लड़का उसको, जड़ ही से नष्ट करने पर तुला हुआ है!

[खुशहाल का दौड़ते हुए आना।]

खुशहालः—[आकर] क्या आज्ञा है? बाबू जी!

झाबरमलः—[मुँह बनाकर] बुलाया कब और अब आकर कहता

है ! क्या आज्ञा है बाबू जी ? [डपटकर] जाकर देखो कैसा हल्ला हो रहा है ?

खुशहाल:—[घबड़ाए हुए] अबहीं गइली सरकार !

[काँपते हुए जाना ।]

झाबरमल:—[टहलता हुआ] मैं सेठ झाबरमल हूँ। मैंने कितनों को सूद पर रुपया दिया और सूद दर सूद वसूल किया ! कितने रुपये लेने को तो ले गए; लेकिन जब भुगतान करने का समय आया तो उनकी नानी ही मर गयी। वे बहुत रोये, गिड़गिड़ाये, पैरों पर गिरकर कुछ दिनों का मौका माँगा; मगर मैंने उनके रोने, गिड़गिड़ाने, बिलखने की कोई परवाह नहीं की ! साड़ियाँ, मकान, नथिया, झुलनी और उनके तन का वस्त्र उतरवाकर अपने रुपये चुकती करवाया ।

एक महाशय पाश्चात्य-सभ्यता के पुजारी थे, वे डी० एम कालेज की नई, नवेली, कोमलाङ्गी कमनीय बाला से सिविल मैरेज करने के लिए मुझसे पाँच हजार रुपये ऋण ले गए हा-हा-हा-हा ! [ठहाका मारता है] मैंने इतनी निर्दयता से रुपये का भुगतान कराया कि उसका विवरण सुनकर सारा विश्व चीख उठेगा........!

और जो भी उन प्रेमी-प्रेमिकाओं के हृदय-विदारक समाचार को सुनेगा, तो वह क्षुधा की पीड़ा से तड़फ-तड़फकर प्राण गँवा देना अच्छा समझेगा; मगर जीवन-पर्यन्त ऋण लेने का नाम तक न लेगा ! उसी का परिणाम है कि आज ये इन्द्रपुरी से टक्कर लेने-वाला राज-भवन खड़ा है हा-हा-हा-हा....!

मैंने अपने जीवन में सात दिवाले मारे और मालामाल हो गया। आज हमारे पास करोड़ों की माया है। मैं सेठिया गिना जाता हूँ। [गम्भीर होकर] उसी अमूल्य निधि को छोकड़े

के कहने से भिखमंगों में बाँट दूँ। आज कुल कलंकी लड़के को अन्तिम चेतावनी दे दूँगा कि बेटा! क्यों अपना जीवन भिक्षुकों के साथ नष्ट कर रहा है। हर एक प्राणी धनवान बनना चाहता है, तू भी पिता की कमाई हुई सम्पत्ति का जी भर कर आनन्द लूट! क्यों कंगाल बनना चाहता है? भोग-विलास कर! इस संसार में क्या लेना-देना है? अगर वह अपने मार्ग से विचलित न हुआ, तो उसे हमेशा-हमेशा के लिए, इस भवन को छोड़कर जाना होगा!

[खुशहाल दौड़कर आता है।]

बोल! बोल!! कैसा कोलाहल हो रहा है?

खुशहालः—भिखारियों! साधुओं और गरीब विद्यार्थियों का झुण्ड का झुण्ड आ रहा है।

झाबरमलः—[क्रोध से] ओह! पधारने दो! हाँ, गुमानीलाल से कह दो। दस मन आँटे की पूड़ियाँ और पाँच मन लड्डू वितरित कर दे।

खुशहालः—अबहीं गइली सरकार!

[खुशहाल का जाना।]

झाबरमलः—खाओ! प्रेम से उड़ाओ!! मगर ये नहीं मालूम कि मैं सेठ झाबरमल हूँ! ये पूड़ियाँ नहीं बहेलिए द्वारा फैलाए गए चारे हैं!

जब तक ये स्त्री-पुरुष मेरे दिये हुए टुकड़ों पर भूखे शृगालों की तरह झपटेंगे तब तक अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ सकते। अरे! हमीं पूँजीपतियों ने साठ लाख बङ्गाल के नर-नारियों को दाने-दाने के लिए तड़फा-तड़फाकर मार डाला; मगर हमलोग मोटर से आवागमन करते थे। होटलों में जाकर ह्विस्की और ब्राण्डियों की बोतल पर बोतल उड़ाया करते थे। अप्सराओं

के नित्य तराने हुआ करते थे। कहाँ तक वर्णन करूँ? अकबर की तरह हमलोगों के यहाँ भी मीनाबाजार लगा करते थे, जिसमें असंख्य ललित-ललनाएँ! अपने रूप-सौन्दर्य का बिक्रय करने आया करती थीं·······!

दूसरी ओर हमलोगों के जूठे अन्न और उगले हुए नेवालों के लिए कलकत्ता जैसी विशाल नगरी में! एक रोटी के टुकड़े के लिए भूखे नर-नारी श्वान की तरह लड़ा करते थे। फुटपाथ पर असंख्य नर-नारियोंकी शव पर शव पड़ी रहती थी; मगर हमलोगों ने उसकी कोई चिन्ता नहीं की! ध्यान से सुनो!! अगर धनवान बनना चाहो तो, तो मनमाना अत्याचार करो। फिर तुम चन्द दिनों में मालामाल हो जाओगे।

अपने नयन के कपाट को हटाकर देखो निर्धनता कितनी बुरी वस्तु है! इसी के कारण आज लाखों नव-यौवना! सुन्दरता की देवी!! थोड़े ही रुपयों के लिए; अपने तनका सौदा करने के लिए खड़ी रहती हैं।

[खुशहाल हँसता हुआ आता है।]

खुशहालः—बाबू रणवीर! बाबू आवत हयन!

भाबरमलः—[रोब से] हाँ, तूने समझाया!

खुशहालः—[प्रसन्न होकर] हम आप कय बहुत पुराना नौकर हयी। आप के बाप के बाप के समय से आप लोगन कय सेवा करत आवत हयी। आप को भी गोद में खिलौली! रणवीर बाबू को गोद में खिलौली! अऊर आप के पोता को भी खेलाइब! हम तय रणवीर बाबू के बहुत समझौली, लेकिन ऊ नाहीं मानत बाटय! ऊ कहलय—हम बाबा! आपकी बात टाल नाहीं सकित! [अभिमानपूर्वक] उह कहलैय हम जवन काम करत हई ओमे मनुष्य-मात्र का कल्यान बाय!

झाबरमल:—[आश्चर्य से] ऐसा ?

खुशहाल:—हाँ, हाँ, मालिक ! आखिर बाँस के जर में बाँसय न पैदा होई, न त आऊर का होई ! आप अइसन पुण्यात्मा का लड़का ! इतना भी नाहीं कर सकत !

झाबरमल:—पुण्यात्मा ! कौन पुण्यात्मा ? हा-हा-हा-हा ! वाहरे अन्धा संसार ! लाखों रुपये मिलों से पैदा करता हूँ। अरे रोटी बटवाने से मेरा क्या बनता बिगड़ता है ? रुपये तो इसलिए बँटवाता हूँ कि समाज में ख्याति उत्पन्न हो जाय। कुछ रुपये चापलूसों को इसलिए देता हूँ कि मेरी प्रशंसा के पुल बाँधने लग जायँ और चारो ओर से पुण्यात्मा ! महादानी !! देश-सेवक !!! और महान रक्षक झाबरमल हो जायँ।

मगर मैं समझता हूँ कि संसार में मैं सबसे बड़ा पापी हूँ हा-हा-हा-हा !

[रणवीर आकर चरण स्पर्श करता है। झाबरमल मुँह फिरा लेता है।]

रणवीर:—पिता जी ! ये कैसा आशीर्वाद ? ऐसा तो संसार में कभी नहीं हुआ न होने की सम्भावना ही है पिता जी ? पिता जी पुत्र के साथ ऐसा नृशंस एवं अमानुषिक व्यवहार ! कुछ तो सोचिए पिता जी !

झाबरमल:—ओह ! सब सोच चुका हूँ ! अब तुम्हारे सामने दो समस्यायें हैं। घर का काम-काज सँभालोगे या समाज-सेवा ! समाज-सेवा की रटन लगाओगे।

रणवीर:—पिता जी !

झाबरमल:—खामोश !

रणवीर:—मैं अपने कर्त्तव्य-पथ से एक पग भी पीछे नहीं हट सकता पिता जी !

झाबरमलः—[क्रोधित होकर] ओह ! नहीं हट सकता !—तो निकल जा मेरे घर से !

रणवीरः—पिता जी ! मैं फिर आप से कह रहा हूँ। समझदारी से काम लीजिए !

झाबरमलः—मैं सब समझा चुका हूँ।

रणवीरः—पिता जी...........!

झाबरमलः—बकवास बन्द कर ! किसका लड़का ? कौन पिता ? मेरा लड़का तो रुपया है, जिससे चैन की बाँसुरी बजाता हूँ। हजारों बी० ए० एम० ए० हमारे कार्यालय में खट रहे हैं, जिसके सर पर चाँदी का जूता मारता हूँ, उसकी बुद्धि ही उल्टी हो जाती है। जानता नहीं रे मैं तो रुपये के बाहुबल से कितनी हत्यायें करके पचा गया हूँ।

रणवीरः—आपकी नस-नस में विष कूट-कूटकर भरा है। आप इसी करणी के अपराध में कुढ़-कुढ़कर मरेंगे। आपके तन से कोढ़ फूट-फूटकर निकलेगा।

झाबरमलः—इतना दुस्साहस ! मेरी आज्ञाओं की अवहेलना !! मेरे प्रश्नों का प्रत्युत्तर !!! आज की इस घड़ी से इस भवन से तुम्हारा कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा ! खुशहाल हीरामणी से जाकर कह दे, इस नालायक को घर में घुसने न दे।

झाबरमलः—उहो भाषण देवय जालीं सरकार !

खुशहालः—हाय ! हाय !! इसने तो मेरा बना बनाया घर ही उजाड़ दिया।

रणवीरः—इतने में ही घबड़ा गए पिता जी ! लाखों हीरामणी रुक्मिणी, सीता, सावित्री अपने प्राणों को हँसते-हँसते देश की पवित्र बलि-वेदी पर चढ़ा देंगी। आप ऐसे सभ्य महापुरुषों के षडयन्त्र एवं कुचक्रों का वीरतापूर्वक सामना करेंगी। भारत की

देवियाँ ही भारतवर्ष की भिखमंगों को मिटा देंगी। मैं फिर डंके की चोट से कहता हूँ कि आपको एक न एक दिन झुकाकर ही छोड़ेंगी।

झाबरमलः—मैं भी घोषणा करता हूँ कि तुम्हारे दल के नेताओं को गुण्डों द्वारा मौत के घाट उतरवा दूँगा।

हीरामणीः—[प्रवेश करके द्विगुने वेग से कहती है] मौत के घाट उतरवा दीजिएगा, किसको ! पिता जी !

"जाको राखे साइयाँ, मार न सकिहैं कोय।
बाल न बाँका करि सकैं, जो जग बैरी होय॥"

झाबरमलः—व्यंग से जो जग बैरी होय। नादान लड़की !

हीरामणीः—समझदार पिताजी !

रणवीरः—समझदारी से कदम उठाइयेगा पिताजी !

झाबरमलः—सब समझ चुका हूँ, अपने रहने का ठिकाना ढूँढ़ो।

हीरामणीः—आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं ?

झाबरमलः—हा हा हा हा ! कोई आवश्यकता नहीं ? तो निकाल दो ये हीरक हार, मोतियों की मालायें, सोने-चाँदी के आभूषण !

हीरामणीः—लीजिए पिताजी ! इन कृत्रिम अलङ्कारों से नर-पुङ्गव की शोभा बढ़ने की अपेक्षा घट जाती है।

झाबरमल—[मुँह बिचकाकर ताने से] ओह ! ठीक कह रही हो ! जब लोमड़े को अंगूर नहीं मिलता है, तो वह वटमार उसे खट्टा कहकर चला जाता है ! हा हा हा हा ! मैं फिर कहता हूँ बेटी मान जाओ।

हीरामणीः—भाई का अपमान करके मेरा जेवर उतरवाकर आप हँस रहे हैं ? अपने किए पर लज्जित होइये पिताजी ! धिक्कार है ऐसे धन को ! जिसने अपने पुत्र और पुत्री को बिछुड़ा दिया।

झाबरमलः—किसका पुत्र और किसकी पुत्री? हमारी सन्तानें तो चाँदी-सोने के टुकड़े हैं टुकड़े! हा-हा-हा-हा!

[हीरामणी और रणवीर वस्त्र उतारते जाते हैं और उसका पिता अट्टहास करता है।]

हीरामणीः—[व्यंग से] पिताजी प्रणाम!

[हीरामणी का जाना।]

झाबरमलः—[घृणा से] ऊँह!

रणवीरः—अच्छा तो पिताजी! मैं भी चला अब अन्तिम आशीर्वाद दीजिए!

झाबरमलः—आशीर्वाद! तुम जैसे बागी पुत्र को आशीर्वाद! हा हा हा हा!

[रणवीर आतंकित नेत्रों से झाबरमल को देखते हुए जाता है और झाबरमल हँसता हुआ भवन में चला जाता है।]

—:पट परिवर्तनः—

——×——×——

अंक प्रथम दृश्य पाचवाँ

[स्थान नगर का राजपथ । सघन-सुखद-श्रेणी-बद्ध वृक्षों के नीचे लोगों का आवागमन हो रहा है ।]

ज्ञानचन्दः—[परिस्थिति से त्रस्त अचेतनावस्था में बकता हुआ आता है] मैं कौन हूँ ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता । हा-हा-हा-हा ! सब कुछ समझ में आता है । मैं एम० ए० एल० एल० बी० वकील हूँ । [नीचे ऊपर देखकर] नहीं, नहीं, मैं भिखारी हूँ । पागल हूँ । आवारा हूँ । नहीं, मैं गुण्डा हूँ । हा-हा-हा-हा ! किसने कहा कि मैं गुण्डा हूँ ! मैं तो वैरिस्टर हूँ ! वैरिस्टर हूँ !! वैरिस्टर हूँ !!! हा-हा-हा-हा ! हाँ, वैरिस्टर साहब आपकी पाकिट में क्या है ?

[फटी हुई कोट की पाकिट में हाथ डालता है और उसका हाथ बाहर निकल आता है, उसे ज्ञानचन्द आश्चर्य से देखकर ।]

कुछ नहीं, कुछ नहीं, हि-हि-हि-ही ! सिर्फ फटा पुराना कोट ! पूँजी मात्र यह केवल फटी पुरानी कोट !

[ज्ञानचन्द बेहोश होकर गिरता है ।]

मुझको वह दिन याद है जब मैं हांगकांग से मिला था । उसको मल्लयुद्ध के लिए ललकारा, तो वह बेचारा हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । हि-हि-हि-हि ! मैं देश के बड़े-बड़े नेताओं से मिला हूँ । उनको भाषण देने के लिए कहा, तो वे कायर कहने लगे—भला मैं आपकी बराबरी कर सकता हूँ । मैं मार्टिन लूथर से कम नहीं हूँ । अगर इस समय लेनिन भी होते, तो उन्हें भी हराकर छोड़ता, उनकी इज्ज़त बच गई कि वे नहीं रहे....।

[कागज पेन्सिल लेकर राजनीति लिखता है। इसी समय मदन और इन्ना मुस्कराते हुए आते हैं।]

मदनः—गुड नाइट सर !

इन्नाः—गुड मार्निंग सर !

ज्ञानचन्दः—[प्रसन्नता से] गुड नाइट ! गुड मार्निंग !! व्हाट डू यू वान्ट ?

इन्नाः—[हँसते हुए] नथिंग ! कुछ नहीं !!

ज्ञानचन्दः—[बिगड़कर] नथिंग ! तो हट जाओ मेरे सामने से हि-हि-हि-हि ! नथिंग ! मैं तो तुम लोगों को मालामाल करनेवाला था।

मदनः—आपके पास तो कुछ नहीं है।

ज्ञानचन्दः—[घूरकर] क्या कहा ! कुछ नहीं है। मैं वकील हूँ वकील ! मेरा नाम है ज्ञानचन्द सिंहानियाँ एम० ए० एल० एल० बी० प्लीडर !

इन्नाः—[बात काटते हुए] बस, बस, रहने दीजिए ! रहने दीजिए !!

मदनः—आप वकील हैं हा-हा-हा-हा !

ज्ञानचन्दः—[आवेश में] क्यों हँसते हो ? मैं तो भूला भाई देसाई को वकालत में हराने का संकल्प किया था। एक दिन समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ कि वे सुरधाम चले गए; अगर वे जीवित होते, तो मैं उनको ऐसी मात देता ! ऐसी मात देता !! वे जीवन-भर नहीं भूलते हा-हा-हा-हा....!

इन्नाः—अगर आप ऐसे ही होते तो मारे-मारे क्यों फिरते ?

मदनः—ठीक कहा पार्टनर ! अरे हाँ, अभी तो हाँगकाँग से लड़ रहा था। लेनिन से बातें कर रहा था। मार्टिन लूथर को मात दे रहा था।

ज्ञानचन्दः—[बिगड़ कर] सब कुछ कर रहा था तेरे बाप का क्या ?

मदनः—अरे भाई मेरे ऊपर क्यों खफ़ा हो रहे हो।

ज्ञानचन्द:—तुम कौन है जी ?

इन्ना:—आदमी हूँ आदमी।

ज्ञानचन्द:—तुम हमको चिढ़ाता है। दूँ एक थाप।

मदन:—हि-हि-हि-हि।

[ज्ञानचन्द क्रोधित होकर मारने के लिए बड़ा पत्थर उठाता है।]

दोनों:—[हाथ जोड़कर] नहीं, नहीं, हुजूर ! हमलोग आपलोगों को नहीं छेड़ते।

[ज्ञानचन्द उनके पीछे-पीछे पत्थर लेकर पिल पड़ता है। मदन और इन्ना भाग जाते हैं। दूसरी ओर से हीरामणी और रणवीर का गाते हुए प्रवेश।]

[रणवीर और हीरामणी का गीत]

[दोनों] *आवो, आवो, चलें हम, महलों को छोड़कर*
कुटियों को सजाने।
इन दीन अनाथों को गले से लगाने ॥आवो०

[बहन] *ओ देने वाले इनको ना दौलत की भीख दो।*
मेंहनत ये करेंगे, इन्हें हिम्मत की भीख दो ॥
धन दे दे कर, इनको ना कमजोर बनाओ।
अपने हाथों से अपने भाई को ना मिटाओ।

[दोनों] *आवो हमारे साथ चलो, चलें जगाने,*
कुटियों को सजाने ॥

[भाई] सुन लो, सुन लो, ये मेरा तराना।
ये बिछुड़े हैं, इनको ना भुलाना ॥
इनके दिल को बढ़ाना, नहीं ये डर जायँगे।
तो रण से भाग जायेंगे, फिर बिछुड़ जायेंगे ॥

[दोनों] इन सोते हुए को हम चलें जगाने,
कुटियों को सजाने ॥

[बहन] इन दीन अनाथों को इक काम दिला दो।
इतनी दया करके इनके जीवन को बचा दो ॥
फिर देखो भारत में नया स्वराज आयगा।
चहुं ओर नये दौर का जलवा दिखयेगा ॥

[दोनों] आवो चलें देश का यह रोग भगाने,
कुटियों को सजाने ॥

—"**किशोर**"

——×——×——

हीरामणी:—भइया ! चारों ओर घूम आये; मगर आज भिखारियों का पता नहीं चला।

रणवीर:—[दिखाकर] देखो ! सामने से आ रहे हैं।

हीरामणी:—[भिखारियों से] सुनो भाइयों ! सुनो !!

मधुकण:—जानता हूँ। तुम लोग यही कहोगे कि भीख न माँगो। अरे भीख नहीं माँगेगे, तो खायेंगे क्या ?

रणवीर:—जो भीख नहीं माँगता है वह क्या खाता है ?

मधुकण:—उनके पास मकान है ! दुकान है !! खेत है !!! जगह, जमीन्दारी, रुपया, पैसा, आमोद-प्रमोद के साधनों के साथ-साथ उनके सगे—सम्बन्धी भी हैं। उनको नाना प्रकार की सुविधायें हैं।

हीरामणीः—भाई आप भी मनुष्य हैं। मनुष्य के लिए संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं, जो सच्चे मन से प्राप्त करने की चेष्टा करता है, उसे अवश्य ही मिलती है। यह निर्विरोध सत्य है; मगर उसके लिए खून को पसीना करना पड़ता है। मार्ग में नाना प्रकार की आँधियाँ और तूफान आयेंगे, उसका डटकर सामना करना होगा, फिर अवश्य अपने साहिल तक पहुँच जायेंगे।

मधुकणः—मैं तो चाहता हूँ, लेकिन मुझे मिलता ही नहीं।

रणवीरः—आपको अवश्य मिलेगा। आपलोग मेरे साथ आइये।

हीरामणीः—भाई! पैदा होते ही भिखारी तो नहीं हो गए। समय ने करवट बदला और परिस्थिति ने अपने निर्मम पञ्जे में जकड़ा, तो आप भीख माँगने पर उतारू हो गए। हाँ, कुछ ऐसे अभागे भी हैं, जिनकी जन्मजात देन है। कुछ समाज के स्वार्थी, लोलुप, कामी लोगों के गुप्त व्यभिचारों से त्रस्त हो इस पावन वसुन्धरा पर भिक्षाटन करने के लिए वाध्य होते हैं।

हर्षचन्दः—जाइये! जाइये!! हमलोग आपके साथ नहीं जायँगे।

रणवीरः—हमलोग आप लोगों की सेवा करना चाहते हैं?

कामिनीः—देखो भाइयो! इनके बहकावे में मत आना। हाँ, अगर आप इस समय हमलोगों को कुछ जिमायें, तो समझूँगी कि आप हम लोगों के लिए कुछ कर सकते हैं और आगे भी कुछ करेंगे।

हीरामणीः—तो चलिए हमारे साथ।

किशनः—[झुंझला कर] जा जा लड़की! हमलोग तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे!

रणवीरः—हमलोग आप ही लोगों को सुधारने के लिए सेवक रूप में निकले हैं।

मधुकरण:—तुम सेवक हमारा क्या भला कर सकते हो ? सुनो भाइयो ! ये हमारा सुधार करेंगे ! हा-हा-हा-हा !

[सभी भिखारियों का हँसना]

किशन:—[समझाते हुए] जा भाई जा ! अपना रास्ता नाप ! नहीं तो हमलोगों की तरह माँग खा ।

हीरामणी:—हमलोग आप लोगों के साथ ले कर जायेंगे ।

हर्षचन्द:—तो आप हमारी क्या सहायता करेंगी ? [व्यंग से] नंगी क्या नहाय क्या निचोड़े ?

रणवीर:—भाइयों ! तुम भी मनुष्य हो !

सब भिखारी:—[बिगड़ कर] हमलोग मनुष्य नहीं, तो क्या जानवर हैं ।

हीरामणी:—[समझाती हुई] भाइयो ! ऐसी बात नहीं !! अब भारतवर्ष स्वतन्त्र हो गया है । आप लोग स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं । सरकार आप लोगों के लिए नया कदम उठाने वाली है । ये ही सरकार हमारी भारतमाता की नइया के होनहार खेवनहार हैं ! उनकी त्रुटियों को दूर करते हुए उनको तन-मन-धन से सहयोग देना हर एक भारतीय का कर्त्तव्य होता है । दुर्भाग्यवश अवसरवादियों के कारण आप ही लोग नहीं समस्त भारतवर्ष आक्रान्त है ।

मगर वह नागरिक जो अपने पुरुषार्थ की कमाई से अपनी जीवन नौका को चलाता है वह राष्ट्र का सबसे बड़ा हितैषी है । इसको मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ वह नागरिक जो दूसरों के ऊपर भार बनकर अपना जीवन निर्वाह करता है, उस अकिंचन पुरुष को इस पावन जगती-तल पर रहने और बसने का कोई अधिकार नहीं ।

किशन:—आप बिल्कुल ठीक कह रही हैं ।

रणवीरः—स्वतन्त्र भारतवर्ष में जितना अधिकार एक नेता, अभिनेता, लेखक सम्पादक, करोड़पति, कृषक, कुली और व्यापारी आदि लोगों को है, उतना ही अधिकार आप लोगों को भी है। अगर आप लोग अपने अधिकारों के लिये नहीं लड़ेंगे, तो स्वार्थी मानव ! आप लोगों का शोषण निरङ्कुशता-पूर्वक करते रहेंगे तब तक भारत-वर्ष की दुर्दशा का अन्त न होगा। विश्व पूज्य बाबू के रामराज्य का सपना अधूरा ही रह जायगा।

हर्षचन्दः—समझ बूझकर कदम बढ़ाना भाइयो ! "अति भक्ति चौर लक्षणम्"

किशनः—तुम ठीक कह रहे हो भाई ! एक कहावत है–"आधी छोड़ सारी को धावे। आधी रहे न सारी पावे॥"

हीरामणीः—ऐसी बात नहीं भाइयो ! ध्यान से सुनो !! धनिकों की मोटर को ओढ़ानेके लिए सैकड़ों रुपये वस्त्र लगते हैं और निर्धनों को ओढ़ने के लिए टाट की टुकड़ी भी नहीं मिलती, पूँजीपतियों की मोटर को विश्राम करने के लिए सुन्दर-सुन्दर गैरेज हैं और गरीबों को पृथ्वी पर भी रहने की जगह नहीं मिलती। वाहरे मुनियों की सन्तान ! तेरा इतना तिरस्कार !!

सब भिखारीः—[हाथ जोड़ कर] देवी तुम सच कह रही हो !

रणवीरः—कहाँ रामराज्य के वर्णन में गोस्वामी तुलसीदाजी ने कहा है—"राम सरिस सदन सब केरे" अर्थात् भगवान रामचन्द्र जी के मकान के सदृश्य ही सब के मकान हैं।

मधुकणः—आखिर हमलोग कर ही क्या सकते हैं ? पूर्व जन्म के पापों का परिणाम तो भोगना ही पड़ेगा।

हीरामणीः—ऐसी बात नहीं भाई ! संसार में जो अपने पैरों पर खड़ा होता है वह कठिन से कठिन कार्यों को कर सकता है। मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।

मधुकण:—तो बहन जी ! इसकी उपाय !!

रणवीर:—चर्खा चलाइये, टोकरी बनाइये, सूत रँगाई कीजिए, हस्त-कला सीखिए, खेतीबारी के काम में जुट जाइये, नाना प्रकार के उद्योग-धन्धे हैं। हाथ की कारीगरी में भारतवर्ष विख्यात रहा है और रहेगा। विदेशियों की सौन्दर्य वृद्धि में भारतीय वस्त्रों का उच्च स्थान रहा है। ढाका के कुशल कारीगरों ने इतना बारीक वस्त्र बनाया था कि साठ गज मलमल एक अंगूठी में समा गया। सोचने की बात है कि वह वस्त्र कितना बारीक रहा होगा ? आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि मिल के बने कपड़े हाथ के बने कपड़े की बारिकी और सुन्दरता की होड़ में नहीं ठहर सकते।

मधुकण:—[आश्चर्य से] मिल के कपड़े से हाथ का कपड़ा अच्छा होगा !

हीरामणी:—इसमें भी सन्देह किया जा सकता है। हाँ, अगर स्वतन्त्र मस्तिष्क से विचार किया जाय, तो मिल का अधिकांश पैसा लिपस्टिक, पाऊडर, मदिरा-सेवन, वेश्यागमन, वायुयान भ्रमण, जुआ, रेश आदि कुकर्मों में व्यय किया जाता है। उसका थोड़ा अंश ही श्रमिकों को पारिश्रमिक-स्वरूप मिलता है। इसी भारतभूमि में दूसरी ओर चर्खा उद्योग अथवा अन्य हस्त-निर्मित सामग्रियों की आमदनी विधवाओं, अनाथों, लूलों, अपाहिजों, अकाल पीड़ितों तथा शरणार्थियों आदि की धधकती क्षुधा की ज्वाला को शान्त करने में व्यय की जाती है और उन्हीं की ठण्डी आहों का परिणाम है कि हमारे राष्ट्र की नौका अपने ध्वजा को अनन्त अन्तराल में लहराती हुई, अपने पथ पर निर्विघ्न चली जा रही है। नहीं तो महर्षि मनु की सन्तान, जो सभ्य-मानव के चोले में भयंकर भेडिया जैसा कुत्सित एवं जघन्य पाप छिपाकर किए जा रही

है और ऐसा ही रवैया इन सभ्य चाण्डालों का रहा, तो इस पवित्र भारतभूमि पर प्रलय की उत्ताल-तरंगें-अट्टहास करेंगी।

भास्करानन्दः—[आकर] तुम ठीक कह रही हो बेटी ! मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा ? चोटी के नेता कहते हैं – वस्तुओं की कमी है। मशीनों की वृद्धि करो और उत्पादन बढ़ाओ, साथ ही वाह्य उपकरणों की ओर विशेष ध्यान रक्खो।

एक बूढ़ा था। उसने कहा था। बाहर नहीं भीतर की ओर देखो ! हिंसा को मन से दूर करो, विश्व के हितार्थ अपने हृदय में शान्ति को स्थान दो और कठिन से कठिन आपदाओं को झेलो। भोग-विलास, आमोद-प्रमोद को मत सोचो। आत्म-पोषण तो पशु भी कर लेता है। उसने जोश में कहा—"जगत् में प्रेम सबसे उत्तम वस्तु है; क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृङ्खलता पशु-प्रवृत्ति है। 'स्व' यानी अपना का बन्धन मनुष्य का स्वभाव ही है। ध्यान से सुनो ! उस बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं; मगर उस बूढ़े को गोली मार दी गयी !"

सब भिखारीः—[घबड़ाकर] गोली मार दी गयी।

भास्करानन्दः—हाँ, हाँ, उस बेचारे बूढ़े को गोली मार दी गयी। सच्ची बात तो कड़ुवी होती ही है बेटा ! मगर इसका परिणाम मीठा होता है। यह युग ही ऐसा है। देखो न ! वर्तमान युग में जब वैज्ञानिक यन्त्रों की ओर दृष्टिपात किया जाता है, तो उसके रोमांचकारी परिणाम को हृदयंगम करते ही कलेजा सिहर उठता है। कहाँ धातु का प्रयोग सेवा कार्यमें किया जाता था और आज उसी धातु के बने हुए हथियार निर्ममतापूर्वक जीवों के ऊपर घुमाये जाते हैं। आजकल एटम बम, हाइड्रोजन बम, नर-संहार के लिए बनाये गए हैं। अरे इन आविष्कारों से भगवान बचाये।

हीरामणीः—ठीक कह रहे हो बाबा।

भास्करानन्दः—बेटा ! अज्ञान और अन्ध-विश्वास मनुष्य को सवत्र पछाड़ता है। मूर्ख मनुष्य वही है, जो अज्ञान और अन्ध-विश्वास को अपना मित्र बनाता है; अगर विश्व में अमर नाम पाना है, तो जगती-तल के जीवधारियो सज्ञानी बनो !

रणवीरः—बाबा भारतवर्ष की भिखमंगी का अन्त कैसे होगा ?

भास्करानन्दः—बच्चों ! इसमें असंख्य नर-नारियों के सहयोग की आवश्यकता है। प्यारे बच्चों ! अभ्यास और तप से प्राप्त सामग्री मनुष्य की महिमा की घोषणा करती है; अगर भिखमंगी को नष्ट करने पर भारतीय युवक-युवतियाँ तुल जायँ और तन, मन, धन से इस पवित्र कार्य में हाथ बँटायें, तो निश्चय ही भिखमंगी प्रथा का अन्त हो जायगा और बेचारे भिखारियों का कल्याण हो ज.यगा।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

[भास्करानन्द का आशीर्वाद देते हुए जाना।]

हीरामणीः—भाइयो ! आपलोग महात्मा जी की बात मानने को तैय्यार हैं।

सबः—[एक साथ] हम सब तैय्यार हैं।

रणवीरः—आपलोग असंख्य नर-नारियों के रक्षार्थ हँसते-हँसते प्राणों की बाजी लगाने को तैय्यार हैं।

सबः—हाँ, हाँ, हम सब तैय्यार हैं।

[भिखारियों का समुदाय जाने की तैयारी करता है गुमानी लाल का आना।]

गुमानीलालः—ठहरो ! भाइयो ठहरो !!! [सब ठिठक जाते हैं] इनके बहकावे में मत आना। ये दोनों घर से निकाले हुए बेकार एवं

आवारा हैं और अभी तक आपलोग नहीं जानते। देश-सेवी, पुण्यात्मा, महादानी, धर्म-रक्षक सेठ झाबरमल के पुत्र और पुत्री हैं।

हर्षचन्दः—[कौतूहल से] ये सेठजी के लड़के हैं?

गुमानीलालः—हाँ,हाँ, जो तुम लोगों को रोटियाँ और लड्डू खिलाते हैं; अगर इन लोगों का साथ दोगे, तो रोटियों के लाले पड़ जायँगे। ठण्डे दिल से सोचो, इनके पास क्या मिलेगा?

किशनः—[क्रोधित होकर] तुम लोग चले जाओ। हमलोग तुम्हारे साथ नहीं जायँगे।

गुमानीलालः—[रणवीर और हीरामणी से] नादान छोकरी और छोकरे! जाओ, हमलोगों के सामने से हट जाओ।

रणवीरः—[प्यार से] मामा! रोटी के टुकड़े पर मनुष्य को कुत्ते न बनाओ। नहीं तो, एक न एक दिन तुम्हारी कुत्ते से भी बुरी हाल होगी, क्योंकि भगवान के दरबार में न्याय होता है!

गुमानीलालः—[मुँह बिचकाकर] भगवान के दरबार में न्याय होता है। भगवान की दुहाई देने वाले छोकरे को देखते क्या हो? धक्का देकर खदेड़ दो।

हर्षचन्दः—निकालो इसे! हमलोगों की मण्डली को व्याख्यान खिलाने आया है। [बिगड़कर] क्या व्याख्यान से पेट भरेगा?

[सब गुमानीलाल के साथ जाने को तैय्यार होते हैं।]

गुमानीलालः—[प्रसन्नता से] बोलो सेठ झाबरमल की·······।

सब भिखारीः—जै!

[इसी समय कौशल्या स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं के साथ आती है।]

कौशल्याः—[प्रवेश करते ही] ठहरो! ठहरो! भाइयो ठहरो!!

[सब ठिठक जाते हैं।]

इस दुष्ट दलाल की बातों में मत आओ। यह जादूगर रोटी का टुकड़ा दिखाकर फँसाना चाहता है, तुम लोगों को भिखारी बना कर अपने को धनवान् की गणना में आना चाहता है। चलो भाइयो मेरे साथ चलो। मेरे यहाँ शिविर में रहने के लिए स्थान, पहनने के लिए वस्त्र और उद्योग धन्धों का पूरा-पूरा प्रबन्ध है।

किशन:—हमलोग कहाँ चलेंगे ?

कौशल्या:—भिखारी सुधारक समिति में।

हर्षचन्द:—वहाँ क्या-क्या मिलेगा ?

कौशल्या:—रहने के लिए स्थान, पहनने के लिए वस्त्र, अध्ययन करने के लिए पुस्तकें, दवा के लिए चिकित्सालय और उद्योग धन्धोंका पूरा सामान मिलेगा।

मधुकण:—फिर हमें चाहिए ही क्या ? चलो भाइयो चलो।

गुमानीलाल:—क्यों बीच में रोड़ा अटका रहा है ? जानता नहीं मैं करोड़पति सेठ झाबरमल का साला गुमानीलाल हूँ। हा-हा-हा-हा!

ज्ञानचन्द:—[आते ही] साला ! ही-ही-ही-ही....

[इन्ना और मदन को बड़ा-सा पत्थर लेकर मारने के लिए दौड़ाता हुआ ज्ञानचन्द आता है। इन्ना रणवीर को और मदन कौशल्या को पकड़कर बचाओ ! बचाओ की रटन लगाते हैं।]

कौशल्या:—मारो साले को ! यह पूँजीपतियों का दलाल है। इन्हीं चापलूसों की करणी से भावी भारत का सर्वनाश हो रहा है।

माया:—[चलते-चलते] बहन जी ! हमलोगों को भोजन करने को मिलेगा ?

कौशल्याः—सब कुछ मिलेगा !

मायाः—[प्रसन्नता से नाचती हुई] पेट भर भोजन करने को मिलेगा, चलो भाइयो !

हीरामणीः—कौशल्या देवी !

सब भिखारीः—जिन्दाबाद !

रणवीरः—भिखारियों के सपने !

सब भिखारीः—पूरे होंगे ।

मायाः—जब सभी भिखारी !

सब भिखारीः—एक होंगे ।

हर्षचन्दः—मेरा फैसला !

सब भिखारीः—लाल किले में होगा ।

रणवीरः—चलो दिल्ली !

सब भिखारीः—बन्दे मातरम् !

[सब भिखारियों का समुदाय हीरामणी, रणवीर और कौशल्या के पीछे-पीछे जाता है और गुमानीलाल को ज्ञानचन्द मारने को दौड़ाता है ।]

—:पट परिवर्तनः—

——×——×——

अंक प्रथम दृश्य छठवाँ

[नगर की भव्य अट्टालिका से सटा हुआ अर्द्ध जर्जरित उद्यान। जहाँ पर भिखारियों का नेता नाना प्रकार की ठग-विद्यायें सिखाता है। अभी तक वह नहीं आया है। भिखारियों का दल प्रतीक्षा कर रहा है। समय सायंकाल ।]

मायाः—[करुण स्वर में] हे भगवान ! मैं अपनी करुण कहानी किसे सुनाऊँ ? मेरा इस संसार में कौन है ? मेरे लिए तो प्रत्येक द्वार ही बन्द है। मेरे माता-पिता भिखारी थे। मैं भी किसी समय सुन्दरता की देवी थी ! मेरी इस दशा को देखकर, मेरे माता-पिता ने विवाह करने की पूरी कोशिश की; लेकिन भिखारी की पुत्री ! चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न हो ! अथवा सद्विचार एवं पवित्रता का जीवन ही व्यतीत करती हो ? मगर आज का ढोंगी समाज ! कभी भी स्वीकार नहीं करता ! स्वीकार नहीं करता !! ओफ ! स्वीकार नहीं करता !!!

रेखाः—बहन ! तुम्हें आज क्या हो गया है ? जो बहकी-बहकी बातें कर रही हो ? वह मोटा आयगा, तो मार पड़ने लगेगी !

मायाः—बहन ! तुम्हें आज क्या हो गया है ? [हँसते हुए] मार पड़ेगी ? पगली ! मैं तो मार खाने को आदी हो गयी हूँ और मेरी जीवन कहानी ही एक मार है !

रेखाः—मार है ! [प्रेम से] तो बहन ! आज अपनी कहानी सुनाओ।

मायाः—देखो रोना नहीं ! नहीं, नहीं, बहन ! मैं अपनी कहानी नहीं सुनाऊँगी। तुम इस व्यथा को सुनकर रो पड़ोगी।

रेखाः—बहन जब तुम कहती हो तब मैं नहीं रोऊँगी।

माया:—[गम्भीर होकर] तो सुनो !

रेखा:—[उत्सुकता से] हाँ, हाँ, सुनाओ बहन !

—:चकरी:—

माया:—मेरा जन्म ! एक भीख माँगने वाले माँ-बाप के संसर्ग से हुआ था। [आहें भरते हुए] एक दिन की बात है। कई दिन भूखों रहने के उपरान्त भी उनके पास कहीं से कुछ पैसे नहीं आये और दूसरी ओर मैं भूख से व्याकुल हो गला फाड़-फाड़ कर रो रही थी। मेरा रोना उनसे न देखा गया बहन!····वे अपनी धधकती भूख की ज्वाला के कारण! विवश होकर मुझे एक ढोंगी सन्यासी के हाथ कुछ ही पैसों पर बेंच दिये। सन्यासी बाबा ने मुझे रोना सिखलाया और मेरे पैरों में विचित्र प्रकार का रोगन लगाया, जिससे बड़ी दुर्गन्ध आती थी। मालूम होता था—मेरा पैर ही सड़ गया हो। मुझे देखकर लोग घृणा से मुँह बिचका लेते थे। कभी पाँच रुपये, कभी सात रुपये किराये पर सन्यासी बाबा भिखारियों को देते थे, जो भिखारी मुझे ले जाते थे। वे मुझको दिखा-दिखाकर करुण-क्रन्दन करते थे। मेरी बच्ची भूखी है ! इसका पैर सड़ गया है !! बाबू कुछ दया कीजिए, नहीं तो यह मेरी भोली बच्ची ! हमलोगों को छोड़कर चली जायेगी। वे नयनों से नीर बहाते थे········।

रेखा:—[जिज्ञासा से] आगे क्या हुआ बहन ?

माया:—आगे ! एक दिन की बात है ! एक वृद्ध दम्पत्ति मुझे पन्द्रह रुपये किराये पर मोल लिए, उस दिन कोई मेले का पर्व था, जो याद नहीं आता; लेकिन वे रो-रो कर एक सै इक्यावन रुपये पैदा किए। रात्रि को लौटाने की बेला में वे आपस में मन्त्रणा

करने लगे कि मेरे कोई सन्तान नहीं है। यह लड़की भी तो सुन्दर है, इसका कोमल शरीर सड़ा नहीं है, केवल रोगन मात्र है; इसलिए वे अपने साथ ले गए। मैं सर पटक-पटक कर रोती रही; मगर वे माने नहीं····?

रेखाः—बहन ! तुम रोई क्यों ?

मायाः—सन्यासी बाबा ! मुझे बहुत प्यार करते थे। मैं जो कुछ माँगती थी, उस वस्तु को वे अवश्य लाकर देते थे; लेकिन मैं उन दोनों के साथ जाने के लिए मजबूर थी····।

रेखाः—[प्यार से] फिर क्या हुआ बहन ?

मायाः—वे लोग मुझे भीख माँगते समय साथ नहीं ले जाते थे। उनकी अन्तरात्मा में भी सन्तान का प्रेम हिलोरे मारने लगा तब वे लोग मुझे एक पाठशाला में भर्ती कर दिये जब भीख माँगने के लिए जाते थे, तो पाठशाला में पहुँचा देते थे, और लौटते समय साथ लाते थे, इसी तरह जीवन-नौका चलने लगी····।

—: चकरी :—

रेखाः—[माया को पकड़ कर हिलाती हुई] माया बहन ! इसके बाद क्या हुआ ?

मायाः—सुनो ! कुछ दिन बाद मैं समझदार होने लगी, मेरी नस-नस में जवानी मस्ती भरने लगी, मेरे भिखारी माता-पिता मेरा विवाह करके अपना जीवन सुखमय बनाना चाहते थे·······जब कोई भी मुझसे विवाह करने के लिए नहीं मिला तब मेरी ही पाठशाला का मेरा सहपाठी, जिसको मेरी दयनीय दशा पर तरस आयी वह मुझे अपनी अर्द्धांगिनी बनाने के लिए समाज की थोंथी जञ्जीरों को तोड़कर, सीने को ताने हुए आगे आया, मगर एक शर्त पर···!

रेखाः—[आश्चर्य से] वह कौन सी शर्त थी ?

मायाः—शर्त्त थी ! मेरा भावी पति मेरे भिखारी माता-पिता को भिक्षाटन न करने देगा वह स्वयं कमाकर उनको खिलायेगा, इस दुनियाँ से दूर एक नई झोपड़ी बसायेगा, उसमें हमारा प्रेम-फूले-फलेगा और मेरे माता-पिता भगवन भजन करेंगे ! मगर वह दिन भी देखना मेरे भाग्य में नहीं था........!

रेखाः—यह क्या कह रही हो बहन ? क्या जीजा जी को कुछ.........!

मायाः—नहीं जीजा जी को कुछ नहीं हुआ ।

रेखाः—फिर.......।

मायाः—[सोचते हुए] एक मोटा सेठ मुझे रोज देखता था । शायद उसका नाम सेठ झाबरमल था । एकादशी के दिन मेरे माता-पिता हरिकिर्त्तन सुनने गए, उसने मुझे अकेला देखा और तुरन्त अपने साला गुमानी लाल को गुण्डों के साथ भेंजा, वे लोग मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस कर उटा ले गए । नीच ! नर-राक्षस झाबरमल मुझे नाना प्रकार का प्रलोभन देकर; मुझे अपनी काम वासना का शिकार बनाना चाहा; परन्तु मैं उसके प्रेमालिङ्गन में नहीं गई ।

रेखाः—[आश्चर्य से] ऐसा ?

मायाः—मैंने कहा—'मेरी ओर एक इंच भी आगे बढ़े, तो मैं कुछ कर बैठूँगी, अगर आप मेरे साथ बलात्कार करना चाहें—प्रसन्नता से कर सकते हैं; परन्तु याद रखिए मैं उसके बाद विष खाकर; यह अपना कलंकित—कंकाल सदैव-सदैव के लिए समाप्त कर दूँगी इसका पाप आप के ऊपर घहरायेगा ।'

उसने लालच दी, समझाया, धमकाया; मगर मैं अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ थी और उससे कहा—'सेठ जी नारी नारीत्व को खोकर लोक-परलोक कहीं की नहीं रहती । आप ऐसे ढोंगी सेठ का पाप भरा पानी तो पी नहीं सकती, प्रेमालिङ्गन तो स्वप्न की बात है

वह सात दिनका समय देकर चला गया····। धीरे-धीरे बिना अन्न-जल के सात दिन व्यतीत हो गए। मैं मरणासन्न अवस्था के निकट पहुँच गई वह भयभीत होकर अपनी रखैल वेश्या के पास भेंज दिया···।

रेखा:—[सोचते हुए] वहाँ उसने क्यों भेजा ?

माया:—एक बुढ़िया, जिसको सभी लड़कियाँ नानी-नानी कहा करती थीं वह आई और साथ में मिठाई भी लाई तथा मुझे खाने को दिया। मैं भोजन करने में हिचकती थी। मेरा हिचकना देखकर, उन लड़कियों ने कहा—जाओ नानी हम लोग समझाती हूँ, उन लोगों का समझाना और भूख की जलन के कारण वाध्य होकर मिटाई खाली···।

मेरी दशा बलिदान के बकरे के सदृश्य थी, सान पर चढ़ने के लिए विवश किया जाने लगा अब मैं रात्रि को कोठे पर आने वाले महानुभावों को पान, इलायची, मिटाई, मदिरा खिलाने—पिलाने लगी। आगन्तुक लोग मेरे नव यौवन को टुकुर-टुकुर देखते और जाते समय भी घूर-घूर कर देखते जाते थे। मेरे अल्हड़ रूप-सौन्दर्य की चर्चा आपस में करते और नानी को हजार-दो हजार—नथिया उतारने के लिए देने को कहते थे, मगर नानी भी पूरी घाघ की बच्ची थी ! वह कहती थी मेरी रानी बिटिया की नथिया वही उतारेगा, जो नगद पचीस हजार देगा जब वह मेरे से पूछती तो मैं हँ में हँ मिला देती और वह प्यार से चुम्बन करके चली जाती थी····।

मेरे मन में वहाँ के वातावरण से बिल्कुल घृणा हो गयी। वहाँ की अन्य लड़कियाँ भी चाहती थीं कि इस भोली-भाली लड़की को कुमार्ग पर जाने से बचाना चाहिए, उन सभों की देख रेख में मैं

नौ दो ग्यारह हो गयी और पापी पेट के कारण इस चाण्डाल के शरण में पल रही हूँ !

रेखा:—बहन ! तुम्हारी जीवन कहानी भी एक अनमोल किस्सा है ! हाँ, बहन ! तुम्हें तो नानी के यहाँ हर तरह का सुख था, लेकिन घृणा क्यों हुई ?

माया:—हाँ, मैं उस दिन वेश्या के घर में थी ! परस्थितियों ने आकर धर दबोचा तब मैं वेश्यालय में रहने के लिए बाध्य थी। वहाँ नित्य-प्रति रात को नये-नये लोग आते, गाना-बजाना सुनते और हमारी मदमाती जवानी को ललचायी आँखों से निरखते, गन्दे-गन्दे संकेत करते और मैं सब कुछ सहन करती थी। वहाँ वे चूसे हुए नीबू का तरह बिमारियों से घुले हुए पूँजीपति साफ-साफ धूले हुए कपड़े पहनकर आते। उफ ! जिसने उनका इठलाना नहीं देखा ! वह पूँजीवाद और साम्राज्य बाद का दूर व्यापी परिणाम नहीं समझ सकता। धन के आधिक्य से ही कितनी बुराइयाँ समाज में आ जाती हैं, इसको देखने के लिए वेश्यालय देखना आवश्यक है !

—: चकरी :—

[तत्क्षण महन्थ धूर्त्तानन्द शिष्यों के साथ पदार्पण करते हैं। राजशी पोशाक, मोतियों की मालायें, कंठी, रेशमी वस्त्र, जटा, त्रिपुण्ड, मृग छाल बगल में दबाये लम्बा सँड़सा गाड़कर बघ-चर्म पर बैठते हैं।]

सब:—जय !

मधुकण:—महन्त धूर्त्तानन्द की····

सब:—जय !

धूर्त्तानन्दः—बैठो ! हाँ, अब तुम लोग अपने लेखा-जोखा का आदान-प्रदान करो ! और सटक नारायण हो जाओ ।

माया:—बाबा ! आज हमारी शरीर में मीठा-मीठा दरद हो रहा है आज मैं काम करने न जाऊँगी ।

धूर्त्तानन्दः—दरद हो रहा है । हा हा हा हा जाओ !

[जब माया जाने लगती है तब वह डपटकर बुलाता है ।]

यहाँ आओ । हा-हा-हा-हा !

[धूर्त्तानन्द सँड़से से मारता है और माया चिल्लाती है ।]

क्यों ? अब दरद कैसा ?

माया:—[चोट को सहलाते हुए] बाबा ! अब थोड़ा-थोड़ा अच्छा हो रहा है ।

[चाण्डाल चौकड़ी के सदस्य हँसते हैं ।]

धूर्त्तानन्दः—लो ! एक रुपये मिठाई खाना और आज ठीक से तिकड़म दम चलाना । समझ गई न ? क्यों ? बोलती क्यों नहीं ?

[माया डरते-डरते कहती है ।]

माया:—बिल्कुल समझ गई गुरुदेव !

धूर्त्तानन्दः—[बिगड़कर] समझ गई की बच्ची ! खड़ी-खड़ी मुँह क्या देखती है ? जाती क्यों नहीं चुड़ैल की नानी ?

माया:—मैं रेखा बहन के साथ जाऊँगी ।

धूर्त्तानन्दः—अच्छी बात है ! रेखा ! आज तुमने क्या कमाया ?

रेखा:—[पाँच रुपये चरणों पर रखते हुए] लो बाबा ! अब मैं जाऊँ ?

धूर्त्तानन्दः—[मुँह चिढ़ाकर] अब मैं जाऊँ ? सिर्फ पाँच रुपये !

रेखाः—एक-एक करके चलती बस में दो बाबुओं के पाकिट की सफाई की। पहले आदमी के जेब से एक रुपये का नोट और दूसरे आदमी के जेब से पाँच रुपये का नोट निकला !

धूर्त्तानन्दः—[सोचते हुए] सिर्फ पाँच ही रुपये निकले ! कितनी मेहनत से तुम्हें जेब कतरना सिखलाया सब मेरे परिश्रम पर पानी फिर गया। अच्छा, एक रुपये क्या हुआ ?

रेखाः—[दुलार से] मैं मिठाई खा गई गुरुदेव !

धूर्त्तानन्दः—[बिगड़कर] मैं मिठाई खा गई गुरुदेव ! बिना मुझसे पूछे तूने रुपये क्यों खर्च किए ?

[धूर्त्तानन्द का रेखा को पीटना, रेखा का चीखना।]

रेखाः—[हाथ जोड़कर] ना बाबा ! ऐसी गलती नहीं करूँगी।

धूर्त्तानन्दः—जा ! धन्धे पर जुट जा !

रेखाः—[श्रद्धामयी शब्दों में] बाबा कुछ पैसे तो दीजिए न ! मार इतनी पड़ी है कि भूख दूनी हो गई है।

धूर्त्तानन्दः—[प्यार से] यहाँ आओ !

रेखाः—[दुलराकर] मैं नहीं आऊँगी, आप मारेंगे !

धूर्त्तानन्दः—लो बेटा दुलारे ! दो रुपया रेखा रानी को दे दो !

[दुलारे महन्थ जी से रुपये लेकर रेखा को देता है। रेखा और माया साथ में जाती है।]

धूर्त्तानन्दः—बेटी नरगिस !

नरगिसः—हाँ, अब्बाजान !

धूर्त्तानन्दः—लाओ बेटी, तुम क्या लाई ?

नरगिसः—[चोली में से नोट निकालकर देती है] लो बाबा !

धूर्त्तानन्दः—[नोट गिनकर] पच्चीस ही रुपये क्यों ? तुमने गाना ठीक से नहीं गाया होगा ?

नरगिसः—[समझाती हुई] यह क्या कह रहे हैं अब्बाजान ?

दुलारेः—महन्थ जी ! गाते-गाते एक आदमी से नजर लड़ाती थी।

नरगिसः—[दुलारे का मुँह दबाकर] चु····प····।

दुलारेः—बाबा ! मना कर रही है कहने नहीं देती।

[दुलारे का चिल्लाने की कोशिश करना।]

नरगिसः—[चुम्बन करते हुए] चुप हो जा मेरे दुलरुवा ! तुम्हें मिठाई खिलाऊँगी ।

दुलारेः—आओ, हाथ मिलाओ ।

धूर्त्तानन्दः—क्या बात है बेटा दुलारे ?

दुलारेः—कुछ····नहीं····कुछ····नहीं····बाबा !

धूर्त्तानन्दः—रमजान अली ! तुमने बिस्मिला खाँ अढ़तिये का खून किया ! दूसरी बात सेट धनपतलाल से दो हजार रुपये खून करने का लाया या नहीं ?

रमजान अलीः—उस्ताद ! कल बिस्मिल्ला खाँ को कत्ल करूँगा और सेठ से रुपये लेकर आपके कदमों में ला दूँगा।

धूर्त्तानन्दः—[रमजान अली को जोर से पीठ ठोकते हुए] शाबाश ! हा-हा-हा-हा····!

[धूर्त्तानन्द की थाप से रमजानअली धम्म से जमीन पर गिर जाता है।]

हाँ, मंगलसिंह ! नरगिस के साथ तुमने ढोलक ठीक से नहीं बजाया होगा ?

मंगलसिंहः—[अँकड़कर] महन्थ जी ! आप मुझे क्या समझते हैं ? मैं तो ऐसा-ऐसा तबले का हाथ जानता हूँ कि क्या कहूँ····?

[मंगलसिंह का ढोलक को खुड़-
काना ।]

धूर्त्तानन्दः—रहन दे! रहन दे!! मैं समझ गया। हाँ, कल डाँका डालने जाओगे न ?

मंगलसिंहः—मैं कोई मामूली भिखारी नहीं ! महन्थ धूर्त्तानन्द का चेला हूँ !! आज दिन में मोटे बकरे की टोह लगाऊँगा और कल दल-बल के साथ पहुँच जाऊँगा ! गिरोह के आदमियों को ठीक कर रहा हूँ !

रमजान अलीः—अबे ये क्या-क्या तरंग में बकता जा रहा हूँ !

मंगलसिंहः—[धीरे] रह गए बिल्कुल दाढ़ी ही वाले । अरे ! मारता कम है, खिलाता ज्यादा है ।

दुलारेः—बाबा ! ये लोग काम बहुत कम करते हैं और बात ज्यादा करते हैं ।

धूर्तानन्दः—तुम ठीक कहते हो बच्चे ! अच्छा ये तो बताओ, नरगिस ने कल कौन-कौन सा गाना गाया ?

दुलारेः—बाबा ! वही !! वही !!!

नरगिसः—बताना मत ! पहले मिटाई के पैसे ले ले ।

धूर्तानन्दः—अच्छा ये लो ! पाँच रुपये नरगिस ! दो रुपये मंगल सिंह, दो रुपये रमजान अली और एक रुपये दुलारे !

दुलारेः—वाह बेटा दुलारे !

[दुलारे महन्थ धूर्त्तानन्द की थैली
में से बैठकर, धीरे से दो रुपये का
नोट निकालता है ।]

धूर्तानन्दः—[मधुबाला से] क्यों रे छोकरी ! तूने किसी का माल घुमाया या नहीं ?

मधुबालाः—दादा ! एक आदमी का पच्चीस रुपये का जूता लेकर

भग गई वह मुझे दौड़कर पकड़ लिया; मगर मैं भागते-भागते जूते को झाड़ी में फेंक दी हा-हा-हा-हा ! वह बेचारा खाली हाथ देखकर चला गया।

धूर्तानन्दः—खाली हाथ देखकर भग गया ! मधुबाला बेवकूफ न बना ! कल की छोकरी और हमीं को चकमा देने चली है। रुपये निकाल ! रुपये !!

मधुबालाः—[धीरे से] लो बाबा !

धूर्तानन्दः—हा-हा-हा-हा बीस रुपये ! और रुपये लाओ !!

मधुबालाः—अब नहीं है दादा !

धूर्तानन्दः—दादा की बच्ची ! तेरा बाप मुझसे तीन हजार रुपये ले करके तुझे बेच गया। अभी तक तुम हजार रुपये उड़ाकर लाई और सैकड़ों का माल खा गई !

मधुबालाः—मेरा बाप लिया मैं तो नहीं !

धूर्तानन्दः—अभागिन लड़की ! सुन ! तेरा बाप राजनीति का प्रोफेसर था और तुम्हारी माँ उस कालेज की छात्रा थी। 'प्रोफेसर छात्रा को प्रेम का स्वांग रचाकर अपनी कामवासना का शिकार बनाया !' जब तेरा जन्म हुआ तब तेरी फूल सी माँ जिसने आशाओं का महल बनाया था ! फूट-फूटकर रोने लगी—उसने कहा—'मुझे, मेरी बच्ची को अस्पताल से ले चलो डियर !' उसने मुस्कुराते हुए कहा—'वह तुम्हारी भूल थी, तुमने माँ-बाप की इज्ज़त पर डाका डाला, हा-हा-हा-हा ! जो अपने माँ-बाप की नहीं हुई, जिन्होंने खिला-पिलाकर इतना बड़ा किया वह मेरी नहीं हो सकती ! जा ! चली जा !! और अपने पापों का प्रायश्चित कर !!!' वह रोई, गिड़गिड़ाई, दया की भीख माँगी। मगर उस

निर्दयी को जरा सा भी तरस न आया। फिर उसने तुमको माँगा तब वह बोला—'ये मेरे परिश्रम का फल है, इसे मैं नहीं दे सकता। जा! दुष्टे!! चली जा!!!' वह बेचारी वेश्या बनने के लिए वाध्य हुई!

मधुबाला:—ओह! भगवन्! माता-पिता के पापों का परिणाम उसकी मासूम बच्ची को भोगना पड़ रहा है।

धूर्तानन्द:—मेरे सामने भगवान का नाम मत लो! भगवान नहीं है यह एक ढकोसला है, जिसकी आड़ में हमलोग गुलछर्रे उड़ाते हैं हा-हा-हा...

मधुबाला:—अरे पापी! चाण्डाल!! मुझ मासूम बच्ची पर तो तरस खा! क्या तेरे कोई भी सन्तान नहीं है? इसीसे तू दूसरों के बच्चों के साथ अत्याचार कर रहा है।

धूर्तानन्द:—अत्याचार की बच्ची! मेरा अत्याचार कहाँ देखा? यहाँ आ, आज से तुमको भोले-भाले यात्रियों को ठगना होगा, तुम्हें मिठाई बेचनी होगी, जिस यात्री के पास माल देखा, उसको विष से भरी मिठाई खिलानी होगी, ज्योंही बेहोश हुआ, त्योंही तुमने अपनी करामात दिखाई।

मधुबाला:—ना बाबा! ये मुझसे नहीं होगा!! कदापि नहीं होगा!!!

धूर्तानन्द:—नहीं होगा! हा-हा-हा-हा...!

[धूर्त्तानन्द सँड़से से मधुबाला को पीटता है। वह चिल्लाती है।]

धूर्तानन्द:—बोल! स्वीकार है!!

मधुबाला:—नहीं! नहीं!! नहीं!!!

धूर्तानन्द:—ले जाओ, इसे काल कोठरी में बन्द कर दो जब तक यह हाँ न कहे तब तक इसका दाना-पानी बन्द कर दो!

[भिखारी मधुबाला को घसीटते हुए ले जाते हैं ।]

मधुबाला:—छोड़ दो ! छोड़ दो !!....छो....ड़....दो !!!

धूर्तानन्द:—बेटी नरगिस ! आज कौन सा गीत गाकर मजमा लगाओगी ?

नरगिस:—उस्तादजी ! तैयार हो जाइये !!

मंगलसिंह-रमजान अली:—गाओ, गाओ नरगिस !

[नरगिस का मनमोहक गीत]

हिम गिरि के उतुङ्ग शिखर से टक्कर लेने वाली !
ये मेरी मस्त जवानी है, हाय ! ये मेरी मस्त जवानी है !!

मस्त जवानी, नई-नई है, नहीं पुरानी नई कली है ।
खिली हुई ओ, घिरी हुई, भौरों से अनजानी ॥

ओ दुनियाँ वालो, होश में आओ, हो न सके तो जोश में आओ ।
आँख मिलाओ, मौज उड़ाओ, मूरख और गियानी ॥

तीर चलाने वाली आँखें, मद से भरी गुलाबी आँखें ।
दिल की कली खिलाती आँखें, जानी औ पहिचानी ॥

ये मेरी मस्त जवानी है, ओ बाबूजी-ये मेरी मस्त....

—"व्यथित प्रेमी"

——×——×——

धूर्तानन्द:—कल कौन सा गीत गाओगी !

नरगिस:—अभी लीजिए महन्थ जी !

[नरगिस का दूसरा गीत]

पहले तैनूं अपनी अखियाँ दा निशाना मारियाँ ।
पिछ्छे मैनूं पागल कहके, जमाना मारियाँ ॥

तू सुन ली तेरी कौड़ी बोली, सीने बिच सेन्धी गोली ।
हुस्नूं वाली रइफल दाँ निशाना मारियाँ ॥

तैनूं आशिकज़ार है, मैनूं बेकरार है ।
काली जुल्फों वाली, शम्माँ ने परवाना मारियाँ ॥

मैंनूं पूछ्छा हाले दिल, उसने बोला, ऐ कातिल !
तैनू तीरे नज़रशाही से दीवाना मारियाँ ॥

मैंनू आई हुस्नूं वाली, होय न तेरा पाकिट खाली ।
मैंनूं जँगला बिच घेर के पैमाना मारियाँ ॥

पहले तैनूं अपनी अँखियाँ दा निशाना मारियाँ !

—"**नाज बनारसी**"

——×——×——

धूर्तानन्दः—शाबाश बिटिया नरगिस ! जाओ बेटा दुलारे ! आज ऐसी करामात दिखाना कि रहे नाम साईं का !

दुलारेः—मैं ऐसा हाथ दिखाऊँगा कि मेरे उस्ताद भी हार मान जायँ!

[दुलारे का नोट दिखाते हुए मंगलसिंह, रमजान अली, लोट्टूचन्द और नरगिस के पीछे-पीछे जाना । धूर्तानन्द का घूरना ।]

धूर्तानन्दः—लो भाई ! गुरू गुड़ ही रह गए और चेला चिन्नी होगए ।

[हर्षचन्द नामक पतले-दुबले भिखारी से ।]

हाँ, तू पाँच वर्षों से कुछ ठग-विद्या सीखा या नहीं ?

हर्षचन्दः—यही तो कमी रह गयी उस्ताद !

धूर्तानन्दः—बेटा ! तू दिन को राजेन्द्र मल्लिक की खिचड़ी खाया करो और रात को इस चाण्डाल के अखाड़े में आ जाया करो।

हर्षचन्द्रः–[संकेत करके] बाबा ! पुलिस !

[धूर्तानन्द तत्क्षण सँड़सा बजाना प्रारम्भ करता है।]

धूर्तानन्दः—जय सिया राम जय जय सिया राम !

सबः—जय सिया राम जय जय सिया राम !

धूर्तानन्दः—रघुपति राघव राजा राम, जय सिया राम
जय जय सिया राम !

सबः—जय सिया राम जय जय सिया राम !

धूर्तानन्दः—अल्ला अकबर तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान !

सबः—जय सिया राम जय जय सिया राम !

कल्लूसिंहः—क्यों औघड़नाथ ? क्या हाल-चाल है ?

धूर्तानन्दः—बच्चा! आजकल तो भगवान के भक्त कुछ लाते ही नहीं....

कल्लूसिंहः—आज कुछ भोजन भाव हुआ कि नहीं !

धूर्तानन्दः—[फूट-फूट कर रोते हुए] क्या कहूँ बच्चा आज तो कुछ खाना ही नहीं खाया।

[कुछ भिखारी रोते हैं और कुछ रोनी सूरत बनाते हैं।]

कल्लूसिंहः—लो बाबा !

[कल्लूसिंह पाँच रुपये का नोट देकर चला जाता है।]

धूर्तानन्दः—[ऐंठते हुए] मैं हूँ धूर्त्तानन्द हा-हा-हा-हा !

सबः—वाह उस्ताद ! वाह महन्थ जी !! वाह पिता जी ! धन्य हैं गुरुदेव !

[हर्षचन्द महन्थ धूर्त्तानन्द के चरणों पर माथा टेकता है ।]

धूर्त्तानन्दः—चलो मेरे साथ ! मैं दूसरे अड्डे पर रुपया पैदा करने की ट्रिक बताता हूँ और धर्म की छूरी से धर्म के पीछे फिरने वाले महामूर्ख बकरों को बलि चढ़ाता हूँ !

हर्षचन्दः—महाराजाधिराज श्री एक हजार आठ परमपूज्य महन्थ धूर्त्तानन्द महाराज को····!

सबः—जय !

मंगलसिंहः—महन्थ धूर्त्तानन्द की····!

सबः—जय !

[महन्थ धूर्त्तानन्द के पीछे-पीछे सभी भिखारियों का जाना ।]

—पट परिवर्तन—

———×———×———

अंक प्रथम दृश्य सातवाँ

[नगर की ऊँची गली, जिसमें जनता का आवागमन विशेष रूप से होता है। अर्द्धनग्नावस्था में एक भिखारिन अपने बच्चों के साथ आती है।]

कामिनी:—[चिल्लाते हुए] माई ! बड़ी जोरों की भूख लगी है। एक रोटी गिरा दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा माई !

नीलकान्त:—[प्यार से] माँ ! माँ !! भूख लगी है माँ !!! कुछ खाने को दो न माँ ! तुम तो रोज हमें खाने को देती थी। माँ ! आज तुम नाराज हो गयी हो। [माँ को पकड़ कर] बोलो न माँ !

कामिनी:—[आश्वासन देते हुए] बेटा ! रोओ मती !! आज तुम देख ही रहे हो कि अभी तक कुछ खाने को नहीं मिला। मैं तुमको कहाँ से दूँ मेरे लाल ! [गालों पर हाथ फेरते हुए] घबड़ाओ नहीं ! अभी कोई भगवान का प्यारा ! दया करके कुछ न कुछ दे ही देगा।

नीलू:—[रूठकर] माँ तुम तो हमें कुछ खाने को नहीं दे रही हो। हम रोने लगूँगी। अगर आज मारीं तो हम चली जाऊँगी।

कामिनी:—नहीं बिटिया ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

नीलकान्त:—चलो न माँ ! तुम उधर चलकर माँगो [दिखाकर] देखो माँ ! कल वाले लड़के आ रहे हैं !

कामिनी:—माई ! फटी पुरानी एक साड़ी दिला दो ! बच्चे जाड़े में नंगे घूम रहे हैं। सर्दी से काँप रहे हैं माई ! भगवान तुम्हारा भला करेगा।

भास्करानन्द:—[आकर] लो देवी ! ये मेरा चादर बच्चों को उढ़ा दो, नहीं तो सर्दी लग जायेगी।

कामिनीः—बाबा ! ये तो बेचारे मेरे अनमोल लाल ! सर्दी-गर्मी सह लेते हैं। भगवान का लाख-लाख गुन गाती हूँ; इसलिए सर्दी-गर्मी में भी इनको कोई रोग नहीं सताता।

भास्करानन्दः—पगली कहीं की ! ले लो न ! इन कोमल बच्चों को उढ़ा दो ! बेचारे जाड़े से काँप रहे हैं।

कामिनीः—बाबा आपको ठण्डक लग जायेगी।

भास्करानन्दः—मैं दूसरी चादर ले लूँगा।

कामिनीः—अच्छा बाबा ! हम भी तो भारतमाता की ही सन्तान हैं। आपके ही बच्चे हैं।

भास्करानन्दः—कौन कहता है कि तुम भारतमाता की सन्तान नहीं हो?

कामिनीः—बाबा ! आपका भगवान भला करे।

भास्करानन्दः—इसमें भला की कौन सी बात है ? मेरी पुत्री भी एक दिन उमंग में आकर चली गई और तुम्हारा बाबा ! [करुण स्वर में] उसको जाने का आशीर्वाद भी दे दिया। मालूम नहीं वो कहाँ होगी ? क्या करती होगी ? कहाँ-कहाँ भटकती होगी ?

कामिनीः—आप ऐसे दयालु व्यक्ति की सन्तान को कोई कष्ट नहीं हो सकता बाबा !

भास्करानन्दः—हरि इच्छा !

[भास्करानन्द जाता है।]

कामिनीः—माई ! एक रोटी गिरा दो !! भगवान तुम्हारा भला करेगा। माई ! बच्चे भूख से रो रहे हैं।

शिरोमणीः—[ऊपर से] ले ! ये रोटी गिरा रही हूँ।

नीलू-नीलकांतः—माँ ! माँ !! देख ! ऊपर देख !!

कामिनीः—गिरा दो माई !

[शिरोमणी रोटियाँ ऊपर से गिराती है। नीचे दूसरे कंगले के बच्चे ले लेते हैं। नीलू और नीलकान्त उससे लड़ जाते हैं। कामिनी रोटी छीन कर चारों को बाँट देती है। इसी समय नगेन्द्र गाता हुआ आता है।]

[नगेन्द्र का करुण-गीत]

रोटी रोटी की यहाँ, मची है हाहाकार !
अब भी रोटी दो हमें, ओ मालिक करतार !!

रोटी भी ग़र ना मिले, भगवान क्या करें?
भूखे रह रह कर, तेरी दुनियाँ में यूँ मरें ॥

सोने को भी बिस्तर हैं, न रहने को जगह है।
भगवान हमको छोड़कर, तू भी भगा है ॥

गर बात ऐसी हैं, प्रभू मुझसे ना छुपाओ?
हुई है ख़ता क्या? जरा आके बतलाओ ??

ले ले के तेरे नाम को गली-गली फिरें !
भूखे रह रह कर, तेरी दुनियाँ में यूँ मरें ॥

ऊँचे महल में रहने वालो, सुन मेरा दुखड़ा।
ऊँचे महल से फेंक दे, रोटी का दो टुकड़ा ॥

खायेंगे उसे भी क्या करें, भूख लगी है।
मुझको तो छोड़कर, मेरी किस्मत ही भगी है ॥

ले ले के, तेरे नाम को, गली गली फिरें।
भूखे रह रह कर, तेरी दुनियाँ में यूँ मरें ॥

सुन लो मठाधीश, मिल-मालिक, गऊओं के व्यापारी।
हम दुख सहे बहुत काल, तेरी है अब बारी॥

ईश्वर का कोप तेरे ऊपर ऐसा होयेगा।
पल भर में तेरा सोना, मिट्टी में मिल जायेगा॥

ले ले के तेरे नाम को गली - गली फिरें।
भूखे ही मर ना जायें तो क्या करें॥

पावों में पड़े छाले हैं, चला न जाता है।
उदर पै लात प्रभू जी सहा न जाता है।

आये हैं तेरे द्वार पै, तू दूर ना करो।
घायल से मेरे दिल को, प्रभू चूर ना करो॥

ले ले के तेरे नाम को, गली-गली फिरें।
भूखे रह रह कर तेरी दुनियाँ में यूँ मरें॥

—"**किशोर**"

——×——×——

[नगेन्द्र का गाते हुए जाना। बाकरअली और कल्लूसिंह जाट नामक पुलिस वालों का डाकू मंगल सिंह और चोर रमजानअली को भिखारी के वेश में हथकड़ी लगाए हुए लाना।]

मंगल सिंहः—[गिड़ गिड़ाते हुए] बाबू हमका छोड़ दा। हम तोहरा हाथ जोड़त हयी। पाँव पड़त हयी सरकार ! हम तय एक भिखारी

हयी। कवनों तरह भीख माँग के आपन जीवन बीतावत हयी सरकार! छोड़ देवल जाय सरकार।

बाकरअली:—[मारते हुए] तू भिखारी है। झूठ बोलने की कोशिश न करो, नहीं तो मारे डण्डों के तुम्हारी चमड़ी उधेड़ लूँगा।

मंगल सिंह:—नाहीं सरकार! हम झूठ बोलय कय कोशिश नाहीं करत हयी सरकार! गजब मत ढावा सरकार!

कल्लू सिंह:—अच्छा! सच-सच बता! कितनो बार सजा काट चुका है। [कुछ उत्तर न मिलने पर] बोल! जल्दी बोल!! नहीं तो मारे डण्डों के कचूमर निकाल लूँगा।

मंगल सिंह:—[काँपते हुए] मारा मत सरकार! हम बतावत हयी। सिरीफ दुई बार चोरी करय के अपराध में आऊर एकबार लड़का भगावे के अपराध में सजा पवले बाड़ी सरकार! हमरा के छोड़ दा सरकार!

कल्लू सिंह:—[बाकरअली से] यह तो शातिर बदमाश मालूम होता है।

मंगलसिंह:—देखिए सिपाही जी मैं आप लोगों से अधिक बदमाश नहीं हूँ!

बाकरअली:—चुप बे! अच्छा अब आप अपनी तारीफ कीजिए।

रमजानअली:—बाबू! जब आप लोग पकड़ लेते हैं तब बड़ी हैकड़ी दिखाते हैं। किसी तरह माँग-खाकर जी ने भी नहीं देते।

कल्लूसिंह:—तुम को तो बेटा! मैंने अली पुर जेल में देखा था।

रमजानअली:—[मुस्कुराते हुए] तो काका! आपकी भी सजा हुई थी क्या?

बाकरअली:—हाँ, बेटा! तभी तो तुम्हारी तारीफ कर रहा हूँ।

मंगलसिंह:—सिपाही जी! इस बेचारे को छोड़ दीजिए।

कल्लूसिंहः—चुप बदमाश !

[कल्लूसिंह जाट का मङ्गलसिंह को डण्डे से मारना। मङ्गलसिंह का घिघियाना।]

रमजानअली:—देखिए सिपाही जी ! अगर हमलोग चोरी न करें। डांका न डालैं, हत्या या बलात्कार न करैं अथवा अशान्ति न फैलाए, तो आप लोगों की आवश्यकता ही न पड़े और आप लोगों को तो कुछ........ ...!

बाकरअली:—[बात कटाते हुए] चलो थाने में बन्द करके पुरस्कार दिलवाता हूँ।जीवन भर याद करोगे।

मङ्गलसिंहः—उहवाँ तय हमहन कय ससुरालय हव। आऊर आप लोग हमहन कय....।

कल्लूसिंहः—[डँपटते हुए] फालतू बकवास बन्द कर !

रमजा अली:—[मङ्गलसिंह से] अबे बाबू दारोगा जी से क्यों उरझ रहा है ? कुछ दे ले के जान बचा !

मङ्गलसिंहः—अच्छा सिपाहीजी ! सौ रुपया ले लीजिए और हमलोगो को छोड़ दीजीए।

रमजानअली:—हाँ सरकार ! हमलोगों को छोड़ दीजिए।

बाकरअली:—चुप बदमाश ! सरकार का बच्चा !!

मङ्गलसिंहः—आप लोग तो झूठे ही नखरे दिखाते हैं। सौ नहीं तो दो सौ ले लीजिए।

कल्लूसिंहः—हम लोग तुम्हारे जैसे जालिम डाकूको नहीं छोड़ सकते ! हम स्वतन्त्र भारतवर्ष के सैनिक हैं। घूस लेना पाप है ! महा पाप है !! जितने रुपये तुमलोग घूस दोगे, उससे अधिक हमलोगों को इनाम मिलेगा और पद बृद्धि भी होगी।

रमजानअली:—उस्ताद आप पक्की बात कर रहे हैं, अगर मैं भी

किसी तरह बचकर अपने सरदार के पास चला गया, तो आप का दस गुना पुरस्कार मुझे मिलेगा।

मङ्गलसिंहः—छोड़िए इन बातों को रुपये ले लीजिए और हम लोगों को छोड़ दीजिए।

बाकरअलीः—अबे चुप रह!

रमजानअलीः—तो आप लोग नहीं छोड़ेंगे?

कल्लूसिंहः—सीधे से थाने में चलो नहीं तो गोली से उड़ा दूँगा।

[रमजानअली बाकरअली को दाँत से काँटता है। हथकड़ी की रस्सी छूट जाती है। बाकरअली गिर जाता ह। कल्लूसिंह जाट मङ्गलसिंह को रस्सी बाकरअली को पकड़ाकर रमजानअली का पीछा करता है। मङ्गलसिंह हाथ की रस्सी खींचता है। बाकरअली घसीटता हुआ सीटी बजाता है। पुलिस का दल आता है!]

—:पट परिवर्तनः—

अंक प्रथम दृश्य आठवाँ

[नगर का विशाल मैदान। जहाँ पर सार्वजनिक सभायें हुआ करती हैं। आज उसी स्थान पर कंगला, भिखारी, भूखमरी के शिकार, अकाल पीड़ित, साधु, फकीर, लूले, लँगड़े, गूंगे, कोढ़ी, बेकार आदि-आदि लोगों की सभा हो रही है। स्वयं सेवक एवं स्व्यं-सेविकाओं का दल सेवा-कार्य कर रहा है। झाबर मल और गुमानी लाल वेश बदल कर बैठे हुए हैं। समय सायंकाल।]

हीरामणीः—उपस्थिति सज्जनों! भाइयों और बहनों!! आज की सभा का सभापति माननीय सेठ हीराचन्द जी को बनाया जाय। मैं आप लोगों के सम्मुख यह प्रस्ताव रख रही हूँ।

[सबका ताली बजाना।]

रणवीरः—मैं इस प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करता हूँ, साथ ही आप लोगों के सम्मुख सेठ हीरा चन्द जी के विषय की कुछ गूढ़ बातें भी प्रस्तुत करता हूँ; क्योंकि उनके रहस्य को जानने के लिए हर एक प्राणी उत्सुक है और उनके जीवन के सम्बन्ध में कुछ आप लोगों को जानकारी प्राप्त कराना भी आवश्यक है। आदरणीय सेठ हीराचन्द जी! राजस्थान के अमर-दानी भामा-शाह के बंशजों में से हैं। इन्होंने अपनी सम्पत्ति का आधा भाग देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। परम प्रसन्नता का विषय है कि इन्होंने कंगला-सेवा-सदन भी खोल रक्खा है।

जिसमें असंख्य भिखारियों के खाने-पीने, रहने और उद्योग-धन्धों का पूरा-पूरा प्रबन्ध है। सभी भिक्षुक अपने हाथ की बनी हुई खादी को पहनते हैं। सेठ जी की जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। आप जो भी कार्य करते हैं गुप्त रूप से करते हैं; क्योंकि नाम के भूखे नहीं हैं। लेकिन भक्त भगवान को ढूँढ़ ही निकालता है। आज जनता की सच्ची सेवा करने वाले परम पूज्य सेठ हीराचन्द जी को पाकर हर एक भारतीय का रोम-रोम प्रफुल्लित हो गया है, उनका हृदय स्वागत करने के लिए लालायित है। अब मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि आज की सभा का सभापति बनकर; हम लोगों के भाग्य को मुस्कराने का अवसर प्रदान करें।

[सब जनता ताली बजाती है। गुमानी लाल और झाबरमल क्रोधित होकर ताली बजाते हैं। कुमारी हीरामणी फूलों का हार और एक गुण्डी सूत हीराचन्द जी को पिन्हाती हैं। सब करतल-ध्वनि करते हैं।]

हीराचंदः—[उठते हुए] श्रद्धालु जनता एवं उत्साही कार्य-कर्त्ताओं की कर्मठता की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। भाइयों! बहनों!! और बुजर्गों!!! आज आप लोगों ने जो मेरा भव्य स्वागत किया है, उसके लिए मैं आप लोगों का जीवन पर्यन्त तक आभारी रहूँगा। मुझे आशा है कि समय-समय पर मेरी तुच्छ सेवाओं को स्वीकार करते हुए, मुझ कर्महीन मानव को उत्साहित करते रहेंगे।

[सबका ताली बजाना।]

रणबीरः—अब आप लोगों को शान्ति पूर्वक सभा की कार्यवाही में हाथ बटाना चाहिए और मैं आदरणीय सभापति जी से प्रार्थना करता हूँ कि सभा की कार्यवाही को प्रारम्भ करें।

हीराचंदः—मैं आप लोगों के सम्मुख सभा के कार्यक्रम को प्रस्तुत करता हूँ।

(१) कुँकुम और कुँवर बहादुर नामक बालक वंदना गीत गायेंगे।

(२) भिखारियों के सम्बंध में कुमारी हीरामणी अपना ओजस्वी भाषण देंगी।

(३) श्री ज्ञानचंद सिंहानियाँ अपने विचार एवं हृदय के उद्‌गारों को प्रगट करेंगे।

(४) स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाओं की अध्यक्षा कुमारी कौशल्या देवी का सार गर्भित वक्तव्य होगा।

(५) रणवीर बाबू अपने कार्यक्रम की सफलता एवं देश के भविष्य के ऊपर दृष्टिपात करते हुए, अपने विचारों को जनता जनार्दन के सामने पेश करेंगे।

(६) अंत में सभापति का भाषण होगा और आज की सभा विसर्जित की जायगी। अब दोनों बच्चों से अनुरोध करता हूँ कि अपने कोमल-कण्ठ से वंदना गीत गायें।

[कुँकुम और कुँवर बहादुर का खड़ा होना। कौशल्या देवी का पुष्प-हार पिन्हाना। सबका ताली बजाना। सभा की कार्यवाही का प्रारम्भ होना।]

[कुंकुम और कुँवर बहादुर का वन्दना गीत]

भगवान ! भगवान !! भगवान !!! भगवान…
भगवान तेरे चरणों में, मेरा पहुँचे प्रणाम !
भगवान ! भगवान !! भगवान !!! भगवान…
ना जाने तुम कहां सोते हो ? बीज गरीबी बोते हो।
कंगाल बनाया किसे कहीं, और कहीं खजाना देते हो ॥
भगवान ! ये भेद कैसा है, जब सब हैं इन्सान !
भगवान ! भगवान !! भगवान !!! भगवान…
वस्त्रों की कमी है मेरे लिए, खाने के लिए न रोटी है।
खाने के लिए माँगूँ माँ से, मुँह ढांक सिसककर रोती है ॥
खाने को ग़म, पीने को लहू, रहने को शमशान !
भगवान ! भगवान !! भगवान !!! भगवान…
मैंने देखा श्वानों के लिए, कोई महल बनाया करते हैं।
यह भी देखा कोई मानव, उसकी साया में रहते हैं।
यह भेद बनाया जिसने हो, वो कैसा है बेइमान !
भगवान ! भगवान !! भगवान !!! भगवान…

—"किशोर"

———×———×———

[सबका ताली बजाना।]

हीराचन्दः—अब आप लोगों के सम्मुख कुमारी हीरामणी भिखारियों के सम्बन्ध में ओजस्वी भाषण देंगी।

हीरामणीः—श्रीमान् सभापति जी एवं उपस्थिति सज्जनों ! आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में जिधर भी दृष्टि दौड़ाकर देखिए "बेचारे भिखारी" सड़ी-गली गलियों एवं फुटपाथों पर करुण-क्रन्दन करते

हुए दिखलाई पड़ते हैं। यह स्वतंत्र भारतवर्ष के लिए कलंक की वस्तु है और स्वतंत्र भारतवर्ष के नागरिकों का कर्त्तव्य हो जाता है कि इस कलंक को मिटायें !

मेरी राय है कि भारतवर्ष के नवयुवक एवं नवयुवतियाँ इस पवित्र कार्य में सहर्ष हाथ बटायें। मेरा अनुभव कहता है; अगर भिखारियों को उद्योग-धंधों में लगाया जाय, ग्रामों में बसाया जाय और उनको कृषि के कार्यों में दक्ष बनाया जाय, तो देश की भुखमरी, बेकारी और भिखमंगी प्रथा का अंत हो जायगा।

[जनता की करतल ध्वनि।]

हीराचन्दः—अब ज्ञानचंद सिंहानियाँ अपने विचार एवं हृदय के उद्‌गारों को प्रगट करेंगे।

[सब ताली बजाते हैं।]

ज्ञानचन्दः—पूज्यनीय सभापति एवं सज्जन वृन्द ! लोग मुझे पागल कहते हैं ! समय की चपेट को खाकर एवं बेकारी से घबड़ाकर; मुझे पागल का पद ग्रहण करना पड़ा। लेकिन मैं वास्तव में पागल हो गया, उस करुण कहानी को आप लोगों को सुनाता हूँ।

'मेरा लालन-पालन उच्च वैश्य-वंश में हुआ। मेरे माता–पिता मुझे वैद्य बनाना चाहते थे, लेकिन विधि के विधान को कौन टाल सकता है ? मेरी धर्मपत्नी मेरे जीवन में नया उल्लास लेकर आईं। उनके पिता ने दबाव डालकर एम० ए० एल० बी० कराया ! मैं गरीबों की ओर से निःशुल्क बहस करता और धन-वानों के झूठे मुकदमे की पैरवी पैसा देने पर भी नहीं करता, इसका भयावह परिणाम हुआ कि मेरी प्रेक्टिस समाप्त हो गई। ऐसे ही समय में मेरे पूज्यनीय पिता एवं प्राणों से प्यारी धर्मपत्नी

का स्वर्गवास हो गया। [दीर्घ उसासें लेकर एकाएक विपत्तियों का बादल टूट पड़ा और मैं पागल हो गया।'

इसी तरह आज भारत-भूमि पर न मालूम कितने युवक मेरे समान पागल कहे जाते हैं। जानते हैं क्यों? अवश्य जानते होंगे! परन्तु जानकर अनजान बने हुए हैं। अंगरेजों का राज्य गया! मांस को खाकर; लहू को चूसकर, अंग्रेज सात समुन्द्र पार चले गये और भारतीयों के पास बचा कङ्काल! कङ्काल को मांस—लहू से परिपूर्ण करने की भावना, जिस युवक के हृदय में प्रविष्ट हुई, वह पागल ठहराया गया! अंग्रेज-काल से कालाबाजार करने वालों का माथा ठनका, वे उनके ऊपर पत्थर और ईंट फेंकवाए; परन्तु स्वतन्त्र भारत के नागरिकों घबड़ाओ नहीं, सह लो! सुन लो!! और दिखा दो!!! पूज्य बापू के सपने पूरे होंगे।

[जनता करवल ध्वनि करती है।]

भारत की गरीबी चली जायगी, बेचारे भिखारियों के कुम्हलाये हुए मुख पर गुलाबी आ जायगी, उन्हें भी गौरव प्रतीत होगा कि हम भी महर्षि मनु की सन्तान हैं। भाईयो! विशेष क्या कहूँ? मनुष्य जीवन ही कटंकाकीर्ण है; मगर घबड़ाओ नहीं, एक दूसरे को सहारा देते हुए फिर से भारत-भूमि पर दूध-दही की नदियाँ बहाने की कोशिश करो और मार्ग में जो आँधी, तूफान, भूचाल और रोड़ा अटकाने वाले आयें, उन्हें इतने जोरों का धक्का दो कि वे हिन्द महासागर में जाकर डूब मरें। जय जगत्!

[जनता करतल ध्वनि करती है।]

हीराचन्द्रः—अब आप कुमारी कौशिल्या देवी का भाषण सुनिए!

[सबका ताली बजाना।]

कौशल्याः—माननीय सभापति जी एवं उपस्थिति सज्जनों! आज बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सेठ हीराचन्द जी पधारे हुए हैं। गङ्गा माँ

के पवित्र एवं उज्ज्वल जल की तरह इनके जीवन-चरित्र से भारतीय धनिकों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए; अगर भारतीय धनवान देश की भिखमंगी, गरीबी, बेकारी को दूर करने में सेठ हीराचन्द जी की तरह हाथ बटायें, तो भारतवर्ष के प्रत्येक मनुष्य कुबेर हो जायँ।

प्यारे भाइयों! हम लोगों में भी कमजोरी है! हम लोग सोचते हैं—हम तो असहाय हैं, भीख ही माँगना हमारे ललाट में लिखा है। सचमुच ऐसी बात नहीं! भगवान ने ऐसा किसी को नहीं बनाया! कर्म करो, कर्म का फल अवश्य मिलेगा। संसार में मनुष्य कर्त्तव्य करने के लिए आता है अत: मनुष्य को काम करना चाहिये पशु की तरह! दूसरे के ऊपर भरोसा नहीं करना चाहिए।

नगर की फ़ुटपाथ पर मुर्झाए हुए फूल की अपेक्षा ग्रामों में अधिकांश ग्रामीणों की स्थिति भी दर्दनाक है जब तक उन ग्रामों में जाकर, उनका सुधार नहीं होगा तब तक भरत का भारत, भारत नहीं कहा जा सकता!

[सबका ताली बजाना।]

वहाँ जाइये! कृषि के कामों में सहयोग दीजिए; अगर समय-समय पर ग्रामीण भाइयों को आर्थिक सहायता दी जाय, तो मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ कि उनकी दशा अमेरिका, रूस आदि देशों के किसानों से द्विगुनी अच्छी हो जायगी और ग्रामों में स्वर्ग उतर आयेगा।

आज से कई वर्ष पहले विलियम हण्टर ने लिखा था कि भारत भूमि के चार करोड़ आदमियों को भरपेट भोजन नहीं मिलता, वे संतापित जन पानी से क्षुधा-पीड़ को दबाकर सो जाते हैं। सन् अट्ठारह सौ पचास से लेकर उन्नीस सौ तक यानी पचास वर्षों में दो करोड़ अस्सी लाख व्यक्ति अकाल के विकराल गाल में समा

गए और आज भी बाढ़, अनावृष्टि, अकाल, तपेदिक, महामारी, भूखमरी चारों ओर गावें में हाहाकार मचाये हैं....।

सीधे-सादे निर्दोष, निष्पाप, ग्रामीणों को योगदान देना हमारा प्रमुख कर्त्तव्य होता है और साथ ही भारत की भिखमंगी प्रथा का समाधान हो जाता है ।

बन्दे मातरम्

[जनता करतल ध्वनि करती है ।]

हीराचन्दः—अब रणवीर बाबू अपना ओजस्वी भाषण देंगे ।

[सब ताली बजाते हैं ।]

[रणवीर का खड़ा होना । बालिका का पुष्प-हार पिन्हाना । गुमानीलाल का सलाई से सिगरेट सुलगाना । झाबरमल का पलीता उधर करना । गुमानीलाल का उसमें आग लगाना । सभा-मण्डप के पीछे से जोरदार धड़ाका होना । सभा में खलबली का मचना । बम विस्फोट । भगदड़ । चित्कार और इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों से—सभा-मण्डप का गूँज उठना ।]

[ड्राप का शनैः शनैः आना ।]

[जनता का करतल ध्वनि करना ।]

[ड्राप का धीरे-धीरे खुलना ।]

[भारतमाता का तिरंगे के साथ प्रगट होना ।]

[ड्राप का वेग से आना]

—: प ह ला अं क स मा प्त :—

——×——×——

अंक द्वितीय दृश्य पहला

[विशाल सेट लक्ष्मीनारायण का मन्दिर। तीव्र संगीत के साथ घड़ी, घण्टा, शंख, घड़ियाल, मृदंग, धौंसा, बिगुल, नगारा, झाँझ, तुती आदि का एक साथ बज उठना। दर्शनार्थियों का समूह इकट्ठा हो जाता है। पुजारी जी का घण्टी बजाते हुए आरती प्रारम्भ करना। दर्शनार्थियों का भगवान के चरणों में पुष्प बिखेरना। इसी समय दूसरे अंक का शुभारम्भ होता है। समय प्रातःकाल।]

[वन्दना गीत]

प्रभू जी तेरी माया जान न जाई।
राई से पर्वत करते, पर्वत मिट्टी में मिल जाई ॥ प्रभू०

कभी तुम राम, कभी नटवर हो, कभी गोवर्द्धन धारी।
मरा मरा कह बाल्मिक ने, जग में महिमा पाई ॥ प्रभू०

कर्म व्यथित को कर्म सिखाते, पापी को तू दूर भगाते।
जब जब पाप धरनी पर बढ़ते, ज्ञान की ज्योति जगाते ॥ प्रभू०

राई से पर्वत करते, पर्वत मिट्टी में मिल जाई।
प्रभू जी तेरी माया जान न जाई....

—"व्यथित प्रेमी"

——×——×——

[पुजारी जी का आरती समाप्त करके दर्शनार्थियों के सम्मुख रखना। उनका आरती लेकर पत्र-पुष्प भेंट चढ़ाना। पुजारी जी का प्रसाद देना और भक्तजनों का प्रसाद लेकर वापस जाना और पुजारी जी का डलिया लेकर जाना। नगेन्द्रकुमार का लड़खड़ाते हुए आना।]

नगेन्द्रः—जय हो ! जय हो !! भगवान लक्ष्मीनारायण की जय हो !!! भगवन् ! मेरी दशा की ओर भी तो देखो ! पैर में टूटा हुआ जूता, जिसके तलवे फुटपाथ की चक्कर काटते-काटते घिस गए हैं, पायजामा भी फट गया है, ये कोट कमीज चिथड़े-चिथड़े हुई जा रही है, एक सप्ताह से स्नान नहीं किया, पृथ्वीमाता की गोद में बिना बिछावन सो जाता हूँ। आज चार दिन से अन्न का एक दाना भी नहीं मिला, बाल और नाखून भी बढ़ गए हैं, बालों ने महीनों से तेल के दर्शन भी नहीं किए, एक पैसे भी पास में नहीं है प्रभू ! भूख के कारण रास्ता भी नहीं चला जाता है नाथ ! वाह ! वाहरे बेकारी !! सारी पढ़ाई-लिखाई धूल में मिल गई ! हे अन्तर्यामी ! दयामय !! दीनबन्धु !!! दिन रात रोते-रोते व्यतीत कर देता हूँ !

कहाँ मैं एक पग भी बिना मोटर के नहीं चलता था। सैकड़ों मुझसे रुपये ले जाते थे जब मेरे पास पैसे थे तब न मालूम कितने मिलने आते थे, निमंत्रण देते थे और आज वही नगेन्द्र ! द्वार पर जाता है, तो वे द्वार बन्द कर लेते हैं तथा नौकर से कहला देते हैं—कह दो साहब नहीं है। वाहरे स्वार्थी संसार ! बिना प्रयोजन कोई एक प्याली चाय भी नहीं पिलाता। लोग मेरी सूरत को

मनहूस बताते हैं और उन्हें मेरे सभी लक्षण बुरे नजर आते हैं। हाय! हायरे मेरा समय!! भगवन्! मेरा समय तड़फते ही कट जायगा? क्या इसमें नवप्रभात नहीं आयेगा? जैसी तेरी इच्छा! कल फिर दर्शन करूँगा!

[शिरोमणी पूजा करने आती है। पूजा करके कुछ फल और मिठाई नगेन्द्रकुमार को देती हुई चली जाती है और नगेन्द्रकुमार फल खाता हुआ चला जाता है। कौशल्या-देवी पूजन की सामग्री से भरा हुआ थाल लेकर आती है और पूजन करने के बाद कहती है।]

कौशल्याः—भगवन्! तूने मेरी प्रतिज्ञा पूरी की। मुझ निर्धन बालिका को वह गौरव प्रदान किया, जिसके लिए लोग तरसते हैं। विद्या से परिपूर्ण किया, देश-सेवा करने का अवसर दिया, जिससे हरएक प्राणी मेरी प्रशंसा के पुल बाँधते हैं; लेकिन प्रभू! तुम अन्तर्यामी हो! घट-घट की बातें जानते हो!!! मेरे मन-मन्दिर की पुकार तुमसे छिपी नहीं है और मर्यादा के बन्धन में बँधकर रहने वाली बालिका को एक जीवन साथी की आवश्यकता पड़ती ही है; इस-लिए मेरी भी प्रार्थना है कि मेरा मनचाहा मीत मुझे मिल जाय; मगर वह भी मेरे ही जैसा समाज-सेवी हो। एक नवजवान बालिका बिना पति के एक पल भी जीवित नहीं रह सकती! भगवन्! मुझे कुछ नहीं चाहिए और कुछ नहीं चाहिए!! केवल मेरा मनचाहा मीत मुझे चाहिए!!!

[कौशल्यादेवी का हाथ जोड़, नयन मूँद, आत्म-विभोर हो स्तुति में तन्मय होना।]

[रणवीर आकर लक्ष्मीनारायण के सम्मुख नत मस्तक हो मन के उद्गारों को प्रगट करता है।]

रणवीरः—हे नाथ ! मैं आपका तुच्छ सेवक !! आपको प्रणाम करता हूँ। मेरा प्रेम-पुष्प स्वीकार कीजिए !

[रणवीर का पुष्प को लक्ष्मी-नारायण के चरणों में बिखेरना।]

नाथ ! मेरा धन गया !! धाम गया और माँ-बाप ने भी ठुकरा दिया। सब कुछ होते हुए भी भिखारी हो गया। असंख्य भिखारियों का उद्धार किया। क्या मेरा जीवन इसी तरह बीत जायगा ? कोई भी परिवर्तन नहीं होगा ? माँ-बाप बिछुड़े सन्तान को गले से नहीं लगायेंगे ? जैसी तेरी इच्छा !

[रणवीर का लक्ष्मीनारायण को नमस्कार करते हुए जाने लगना। सहसा कौशल्या देवी को देखकर।]

हैं ! ये तो कौशल्या देवी हैं !!

कौशल्याः—[मुड़कर शरमाते हुए] ओ आप !

रणवीरः—कौशल्या देवी ! आप क्या सोच रही थीं ?

कौशल्याः—[नखरे से] कुछ तो नहीं !

रणवीरः—कुछ न कुछ तो अवश्य सोच रही थीं, मुझसे भी छिपाती हैं।

कौशल्याः—[इठलाकर] अच्छा जी ! ये बात है, तो बता दूँगी।

रणवीरः—[आहें भरते हुए] कब ?

कौशल्याः—[रूठकर] मैंने कहा बता दूँगी, इतने आतुर क्यों हो रहे हो ?

रणवीरः—[अँकड़कर] अगर मुझसे नहीं बताओगी, तो मैं तुमसे नहीं बोलूँगा, कभी नहीं बोलूँगा !

कौशल्याः—[गभूराकर] ये बात है! तो जाइये मैं आपसे नहीं बोलती !

[कौशल्या देवी का रूठकर खड़ा होना । रणवीर का मनाना । तत्क्षण हीराचन्द का आना। लक्ष्मीनारायण को माला पिन्हाकर लौटना । कौशल्या देवी रणवीर का प्रणाम करना ।]

हीराचन्दः—[आशीर्वाद देते हुए] क्या बात है ? आज तुम उदास क्यों हो ?

रणवीरः—[भावों को दबाने का नाट्य करते हुए] उदास तो नहीं हूँ पापाजी ! ऐसी कोई बात नहीं !

हीराचन्दः—[स्वगत] दाल में काला मालूम होता है। [प्रगट] मैं समझता हूँ, तुम दोनों·······।

रणवीरः—[बात काटते हुए] पापाजी ! कौशल्या देवी कुछ सोच में पड़ी थी मैंने कहा कौशल्या देवी क्या सोच रही हो ! एकाएक यह रूठ गईं ।

हीराचन्दः—और तुम मनाने लगे । क्या बात है कौशल्या रानी ?

कौशल्याः—[सकुचाते हुए] कुछ तो नहीं पापाजी !

हीराचन्दः—मालूम होता है तुम दोनों किसी मर्म-वेदना से घायल हो। बताओ मेरे योग्य कोई भी सेवा होगी, उसे मैं अवश्य करूँगा ।

रणवीरः—[उत्सुकता से] बताओ न कौशल्या देवी ! पापाजी क्या पूछ रहे हैं ?

कौशल्याः—[गम्भीर होकर] मेरे पिताजी की याद अचानक आ गई ! मैं रो उठी । मालूम नहीं वो कहाँ चले गए ? अब इस क्षणभंगुर संसार में मेरा कोई सहारा नहीं । रात-दिन इसी चिन्ता के कारण चिन्तित रहा करती हूँ पापाजी !

हीराचन्दः—मेरे भी दो बच्चे हैं; लेकिन कोई लड़की नहीं है। मेरे दिल का अरमान अधूरा ही रहना चाहता है, अपने जीवन में हाथी, घोड़ा, धन, धाम, अन्न, वस्त्र सब कुछ दान किया; मगर कन्या-दान नहीं किया। आओ! आज के शुभ दिन मैं तुमको अपनी धर्म बेटी बनाता हूँ और भगवान लक्ष्मीनारायण के सम्मुख प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारा विवाह करके अपना जीवन सार्थक बनाऊँगा।

[कौशल्या देवी पिताजी कहकर और हीराचन्द बेटी कहकर आनन्द-विभोर हो एक दूसरे के अंक में लिपट जाते हैं।]

आओ रणवीर, तुम भी मेरे भवन को चलो वहीं पर भोजन करो, आज मेरी प्रसन्नता का दिन है! कौशल्या की नई माँ और इसके दो भाइयों से मिलो!

रणवीर:—जैसी आपकी आज्ञा!

[हरीचन्द का रणवीर और कौशल्या-देवी के कन्धे पर हाथ रखकर शनैः शनैः प्रस्थान।]

——×——×——

[मधुकण तान पूरे पर गाता हुआ बेहाल आता है।]

[मधुकण का दर्द भरा गीत]

भगवान तेरे द्वार पे आया है भिखारी!
दिल में हजारों दर्द छिपाया है भिखारी!!

इक बाँस की टेढ़ी सी खपाची लिए कर में,
मैली सी, फटी सी, लपेटे चीर कमर में।

हाथों को पसारे फिरा, गलियों में डगर में,
पर पेट भरा नाथ, न गावों में, न नगर में ॥

जिस ओर गया मार ही खाया है भिखारी !
भगवान तेरे द्वार पे आया है भिखारी !!

चाहे जमीं पे आग उगलता हो आसमाँ !
बन करके बर्फ याकि पिघलता हो आसमाँ ॥
या इन्द्र के गुमान को दलता हो आसमाँ !
जमीं भी रोती हो, औ रोता हो आसमाँ !!

नंगे बदन ही माँगने धाया है भिखारी !
दिल में हजारों दर्द छिपाया है भिखारी !!

ठोकरों पे ठोकरों का खिलाना नहीं अच्छा ।
रोते हुए को और रुलाना नहीं अच्छा ॥
नीमजाँ पै ग़रदिशों का ढहाना नहीं अच्छा !
क्या मुफलिसों पै तरस का खाना नहीं अच्छा ॥

भगवान दर्द सुनाने आया है भिखारी ।
नंगे बदन ही माँगने धाया है भिखारी ॥

क्या सुन सकोगे नाथ ? भिखारी की कहानी ।
लफ्जों में समायेगी नहीं, दर्द की बानी ।
खाने को प्रभो अन्न दो, पीने को दो पानी ।
ताकत दो, मिटा डालें, गरीबी की निशानी ॥

भगवान तेरे कदमों पे शीश नवाया है भिखारी ।
भगवान तेरे द्वार पे आया है भिखारी ॥

—"व्यथित प्रेमी"

——×——×——

[हलबल झाबरमल का प्रवेश]

झाबरमलः—[मधुकण को देखते ही] क्यों रे गज पिलण्ड ? नीच ! चाण्डाल !! दुष्टराज तेरी इतनी हिम्मत ! भगवान के मन्दिर को भ्रष्ट कर दिया ! बरदन्तऊ ! तुम्हारा दाँत तोड़ दूँगा !

मधुकणः—[गिड़गिड़ाते हुए] सेठजी ! भगवान सबके लिए हैं ! अमीर,गरीब,राजा, रंक, भिखारी सभी उनका दर्शन कर सकते हैं।

झाबरमलः—हा-हा-हा-हा ! दरशन कर सकते हैं ! तू नीच चमार ! भंगी की सन्तान !! तुमको मन्दिर के बाहर से दरशन करना चाहिए था न !

मधुकणः—प्रभू के दर्शन हेतु मन ललचाया और मैं यहाँ चला आया।

गुमानीलालः—[क्रोध से] क्यों चला आया ? तेरे बाप का मन्दिर है !

मधुकणः—मेरे बाप का ही है। जनता की सरकार ने मन्दिर का द्वार सबके लिए खोल दिया !

झाबरमलः—[व्यंग से] सबके लिए खोल दिया ? ये मेरे वंश का प्राचीन मन्दिर है, इसमें किसी को आने का अधिकार नहीं; अगर आ सकता है तो मेरे अनुमति से ! ये सार्वजनिक देव-स्थान नहीं!

मधुकणः—भगवान के ऊपर किसी का अधिकार नहीं !

झाबरमलः—मेरा अधिकार है ! डण्डों से मारकर इसकी चमड़ी उधेड़ लो। दरबान ! खड़ा-खड़ा क्या मुँह देखता है ? गुमानी-लाल ! मारो मारो बदमाश को !

[झाबरमल मधुकण को धक्का देकर गिरा देता है। वह चीख उठता है। दरबान और गुमानी-लाल खूब पीटते हैं। वह करुण-क्रन्दन करता है।]

झाबरमलः—जय ! जय !! भगवान लक्ष्मीनारायण की जय !

गुमानीलाल–दरबानः—जय !

भोगीलालः—[टानकर बोलता है] लीजिए, मैं जाता हूँ और अभी आता हूँ । समझें !

झाबरमलः—क्या करने आयगा ?

भोगीलालः—[त्योरी चढ़ाकर] मालूम हो जायगा !

[भोगीलाल का पैर गाड़ी पर चढ़-कर जाना ।]

गुमानीलालः—जीजा जी ! ये तो छँटा हुआ बदमाश मालूम होता है ।

झाबरमलः—इसका नाम !

गुमानीलालः—भोगी लाल ।

झाबरमलः—ओफ ! इस नाम को पहले भी सुन चुका हूँ, यह नामी गुण्डा है ।

गुमानीलालः—जीजा जी ! जल्दी से भाग चलिए घर चलकर पढ़ेंगे ।

झाबरमलः—[सोचकर] ठीक है ! लेकिन देखो न सरकार भी भिखारियों की ओर ध्यान दे रही है और देश की संस्थाओं ने भी वीरता पूर्ण कदम बढ़ाया । भिखारी समस्या का समाधान होकर ही रहेगा । ये भिखारी भी अपने अधिकारों के लिये लड़ेंगे । मगर ये लोग हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं । [चौंकना] ये देखो ! एक नेता ने घोषणा की है कि बम बिस्फोट से बदला लेंगे !

गुमानीलालः—[भयभीत होकर] जीजा जी ! गज़ब हो गया । इन नेता और अभिनेता से भगवान बचाये । ये सब उल्टी खोपड़ी के होते हैं, जिस काम के पीछे पड़ जाते हैं, उसे करके ही छोड़ते हैं ।

झाबरमलः—साले साहब अब हम लोगों को क्या करना चाहिये ?

गुमानीलाल:—महल के पीछे गुप्तचरों को तैनात रखिए और महल के चारों ओर संगीनी पहरा लगवा दीजिए; कोई भी व्यक्ति महल में घुसने की चेष्टा करे, उसे तुरन्त गोली से उड़वा दीजिए।

झाबरमल:—बिल्कुल ठीक कहा साले साहब! मिल के दरबान खाली हैं और मकान के भी दरबान खाली हैं।

गुमानीलाल:—फिर देरदार क्या है? सबको बन्दूक, तलवार, बल्लम, गँड़ासा देकर, रात-दिन पहरे पर तैनात कर दीजिए।

झाबरमल:—कोई महानुभाव मिलने के लिए आयें तो उनके लिए?

गुमानीलाल:—उनके लिए प्रवेश पत्र बनवाइये, जिसके पास प्रवेश पत्र हो आप से मिलने पाये जब दरबान सूचना दे तब आप गुप्त महल एवं आन्तरिक बैठक खाना में मिलिए।

झाबरमल:—बिल्कुल ठीक कहा साले साहब!

गुमानीलाल:—[माथा ठोकते हुए] मगर जीजा जी! जो जाना चाहे वो कैसे जायगा?

झाबरमल:—हा-हा-हा-हा जो जाता है, उसे जाने दो।

गुमानीलाल:—हा-हा-हा-हा जो जाता है, उसे जाने दो; मगर जीजा-जी! कई वर्ष व्यतीत हो गए कोई उत्सव या नाच-रंग का प्रोग्राम नहीं हुआ और कोई मोजरा या सोजरा का भी आयोजन नहीं हुआ!

झाबरमल:—[प्यार से] साले साहब! आपने तो कभी कुछ कहा नहीं, तुम्हारे लिए तो जान हाजिर है, मेरी बुलबुल! "सारी खुदाई एक तरफ और जोरू का भाई एक तरफ।" जो जी में आये करो।

गुमानीलाल:—तो जीजा जी! थियेटर देखने चलिए।

झाबरमल:—[प्रसन्नता से] अहा! क्या याद दिलाई? अभी जाओ और आगे वाली सीट सुरक्षित कराओ।

गुमानीलाल:—मैं हवाई जहाज की तरह जाता हूँ जीजा जी !

[गुमानीलाल का नखरे से जाना।]

झाबरमल:—अगर साले साहब! तुम किसी नायिका के कोठे पर होते, तो इस बाँकी अदा पर चक्कू चल जाते !

[झटके से झाबरमल का जाना।]

—: पट परिवर्तन :—

——×——×——

अंक द्वितीय दृश्य तीसरा

[नगर से दूर जंगली स्थान जहाँ पर आधुनिक ढंग के बँगले बन गए हैं। उसके मध्य में जंगली मार्ग। मार्ग पर लोगों का आवागमन अवरुद्ध है। समय सायंकाल।]

भोगीलालः—[आते ही] मच गई! मच गई!! देश भर में हलचल मच गई!!! देखिए दो आने में !

[कौशल्या देवी, हीरामणी, रणवीर मधुकरण, ज्ञानचन्द, माया, रेखा आदि का आना।]

ताजा समाचार! 'आज का संसार !!'

रणवीरः—देना भाई एक ताजा समाचार !

भोगीलालः—[समाचार पत्र देते हुए] बाबू! आप लोग जो कुछ कर दें; थोड़ा ही है। जिस काम के पीछे आप ऐसे धनी-मानी लोग खड़ा हो जाँय वह काम भला अधूरा रह जाय।

हीरामणीः—लो भइया! ये दो आने पैसे।

भोगीलालः—बहन जी! मैं आप लोगों से पैसे न लूँगा।

कौशल्याः—[सोचते हुए] क्यों ?

भोगीलालः—[श्रद्धामयी शब्दों में] मैं सम्पूर्ण समाचार पत्र आप की सभा को दान करता हूँ और एक समाचार पत्र नित्य-प्रति आप लोगों की सेवा में दे जाया करूँगा। मेरे भाग्योदय हो गए जो आप ऐसे महानुभावों के दर्शन हो गए।

रणवीरः—[गम्भीर होकर] तुमने तो मेरा जान मारने के लिए चुन्नीमल सेठ से एक हजार रुपये लिया; मगर मारा नहीं !

भोगीलालः—बाबू ! ये तो मेरा पेशा है। वह मक्खी चूस सेठ माँगने पर एक दमड़ी भी नहीं देता एक दिन कहने लगा—'भोगीलाल तुमने उनका काम तमाम नहीं किया? मेरा रुपया वापस कर दो?' झटपट मैंने कहा—'रणवीर बाबू ने तुम्हारा जान मारने के लिए दो हजार रुपये दिया है और ऐसे सुनहले मौके की बाट जोह रहा था अब जीवित बचकर मेरे सामने से नहीं जा सकता। मरने के पहले ईश्वर का नाम ले लो और झूठे अँकड़कर कहा—'अरे ओ शनिचरा ! मेरी भुजाली तो ला।' सेठजी तुरन्त मेरे पैरों पर गिर गए और दाँत निपोरते हुए कहने लगे—''उसे मत बुलाओ, जो कुछ माँगो मैं देने के लिए तैयार हूँ, मुझे जीवन दान दो भोगीलाल !'' स्वांग करते हुए कहा—'ओ शनिचरा भुजाली रहन दे।' सेठजी लाइये पाँच हजार दक्षिणा। वह गिड़-गिड़ाता हुआ बोला—'भोगीलाल अभी एक हजार ले लो और विश्वास रक्खो मैं चार हजार तुम्हारे घर पर ही पहुँचा दूँगा।' मगर आज तक चार हजार की जगह चार पैसे भी नहीं दे गया। एक दिन मैं रुपये माँगने के लिए उसके निवास स्थान पर गया तो पुलिस में सूचना देने की धमकी दी। मुझे हँसी गई। अब तो एक दूध की दुकान खोल रक्खी है और समाचार पत्र बेचकर अपनी पेट पूजा करता हूँ। उस खोटे धन्धे को तिलांजलि दे दी है रणवीर बाबू !

रणवीरः—अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा किया !

भोगीलालः—राम राम बाबू !

रणवीरः—राम राम। [भोगीलाल का पैरगाड़ी पर जाना।]

ज्ञानचन्दः—भाइयो ! आप लोग सड़क के दूसरी ओर बैठ जाइये आज की कार्यवाही को जल्द समाप्त करके अपने-अपने काम पर डट जाना है। [सबका बैठना।]

कौशल्याः—प्रियवर ! आज की गुप्त मिटिंग बुलाने का प्रधान कारण

है, उस दिन की सभा का विध्वंस होना और उस नर-पिशाच को उचित दण्ड दिलवाना !

ज्ञानचन्दः—आप ठीक कह रही हैं।

मधुकणः—[आवेश में] तो उसका बदला कैसे लिया जा सकता है ?

ज्ञानचन्दः—[अभिमान पूर्वक] उसका बदला। हा हा हा हा खून का बदला फाँसी से लिया जायगा; जैसे को तैसा परिणाम चखाया जायगा। भाई मधुकण ! टिट फार टैट ! ओ ईट का जवाब पत्थर से दिया जायगा।

हीरामणीः—मैं कुछ कहना चाहती हूँ..........।

रणवीरः—[बात काटते हुए] खामोश ! हीरामणी ! कर्त्तव्य की बलि-वेदी पर अपना पराया नहीं देखना चाहिए। न्याय, न्याय है ! जो जैसा बीज बोयेगा; वैसा फल खायगा। बोये पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से खायगा। ठीक ही है ज्ञानचन्द जी ! जो आप उचित समझिए, उसे कीजिए।

कौशल्याः—आप अपने साथियों को चुन लीजिए।

ज्ञानचन्दः—एक नर्त्तकी और एक आदमी चाहिए।

मधुकणः—मैं पिट्रोल छिड़ककर आग लगाऊँगा।

रेखाः—मैं सात भाषाओं का गीत गाकर उन्हें भरमाऊँगी।

ज्ञानचन्दः—तो मैं अभी जाता हूँ। तीन प्रवेश पत्र उनके उत्सव में सम्मिलित होने का लाता हूँ। मैं निर्देशक का रोल अदा करूँगा और रेखा रानी मेरी शिष्या बनकर नृत्य दिखायेंगी तथा मधुकण-जी हम लोगों का नौकर बनकर चलिएगा। जब मैं आज्ञा दूँगा ह्विस्की और लेमन लाओ तब आप अपना कार्य प्रारम्भ कर दीजिएगा !

कौशल्याः—आज की गुप्त मिटिंग समाप्त की जाती है।

[सभी सदस्य जाने के लिए तत्पर होते हैं।]

—: पट परिवर्तन :—

अंक द्वितीय दृश्य चौथा

[नगर के मध्य भाग में विशाल मठ। बाहर से उजड़ा हुआ एवं भीतर से सजा हुआ है। महन्थ धूर्त्तानन्द शिष्यों के मध्य में उच्चासन पर विराजमान हैं। समय मध्यान्ह।]

धूर्त्तानन्दः— मेरे प्रिय शिष्यों ! तुम लोग दत्त-चित्त होकर हमारे सार-गर्भित वक्तव्य को श्रवण करो और उसके ऊपर मनन भी करो। आज मैं तुम लोगों को एक अनुपम वस्तु प्रदान करने वाला हूँ।

मंगलसिंहः—[उत्सुकता से] कौन सी चीज है गुरू जी !

नरगिसः—[पैर दबाते हुए] बताइये न महन्थ जी !

सबः—बताइये गुरू जी ! कहिए स्वामी जी !

धूर्त्तानन्दः—इतना घबड़ा क्यों गए ? बतलाता हूँ; मगर ध्यान से सुनना।

नरगिसः—[दुलराकर] गुरू जी पहले मिठाई खिलाईये तब हम लोग ध्यान से सुनेंगे।

दुलारेः—हाँ गुरू जी।

धूर्त्तानन्दः—[झोली में से निकालकर] ये लो पचीस रुपये की मिठाई लाओ।

दुलारेः—[नोट हस्तगत करने के बाद] महन्थ धूर्त्तानन्द की ....।

सबः—जय !

[दुलारे का प्रस्थान।]

धूर्त्तानन्दः—अच्छा, तुम लोग अपना हिसाब समझाओ।

नरगिसः— लीजिए पिताजी !

रमजानअलीः—लीजिए उस्ताद !

मंगलसिंह:—लीजिए स्वामी जी !

हर्षचन्द:—लीजिए कृपानिधान !

लोढ़चन्द:—लीजिए छुआमी जी ! हम आप के फूल चढ़ावत हयी बड़ी मेहनत से तोड़ के लियायल बाटी ।

धूर्त्तानन्द:—[व्यंग से] लियायल बाटी का बच्चा ! सयाना न बन ! देख ! मेरा भुजदण्ड !!

[धूर्त्तानन्द के सँड़सेसे आतंकित होकर लोढ़चन्द पचास रुपये देता है ।]

धूर्त्तानन्द:—[नोट गिनते हुए] हा-हा-हा-हा सीधे ऊँगली घी नहीं निकलता ।

हर्षचन्द:—हमको तो कुछ नहीं बतलाते हैं महाप्रभु !

धूर्त्तानन्द:—अखाड़े में आते रहो सब गोल माल ठीक हो जायगा ।

हर्षचन्द:—तो महाराज हम खायेंगे क्या ?

धूर्त्तानन्द:—क्यों तुम खाने भर भी नहीं पैदा कर सकता, तो तुम्हारा जीवन बेकार है । राम-राम, छिः छिः धिक्कार है तुम्हारे जीने पर ! कल से सग्गड़ चलाओ और अभी मिठाई खाकर जाओ ।

हर्षचन्द:—सत्य बचन है महाराज ।

नरगिस:—तू तो सग्गड़ देखकर ही मर जायगा और कहता है सत्य वचन है महाराज ! तुम कल से मेरे साथ चलना ।

धूर्त्तानन्द:—अरे बेटा दुलारे ! ओ दुलारे !!

दुलारे:—[मिठाई गटकते हुए] आया गुड़ू जी !

धूर्त्तानन्द:—ऊद का नाना ! क्या कर रहा था ?

दुलारे:—भोग लग रहा था गुरू जी !

धूर्त्तानन्द:—[क्रोध से] यहाँ आओ ।

[दुखभंजन को देखकर डरते-डरते आता है ।]

नरगिस:—[चरण दबाते हुए] जाने दीजिए अब्बाजान ! लड़का है ।

धूर्त्तानन्द:—लड़का नहीं, शत्रु है ! अच्छा, जाओ छोड़ दिया । आज से ऐसी गलती न करना । बेटी नरगिस ! मिठाई बाँट दो ।

[नरगिस कुछ मिठाई महन्थ जी को देकर सबको बाँट देती है और स्वयं टोकरी से लड्डू गटागट गटकती है, उसमें दुलारे भी सम्मलित हो जाता है ।]

धूर्त्तानन्द:—[डँकरते हुए] हाँ, मेरे प्रिय शिष्यों ! आज मैं एक अनहोनी बात कहने जा रहा हूँ, जिसकी तुम लोग स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते ।

नरगिस:—ऐसी बात ?

धूर्त्तानन्द:—हाँ, हाँ, ऐसी ही बात । आज भारतबर्ष कुछ अंशों में स्वाधीन हो गया है; इसलिए प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह देश की प्रगति में सहायक हो; अगर कोई नागरिक ऐसा नहीं करता है वह एक प्रकार से राष्ट्रद्रोही है और हम लोग भी कोई धन्धा न करके, केवल माया का जाल रचकर, भोली-भाली जनता से पैसे ऐंठ कर तरङ्ग लेते हैं, दिखावटी महात्मा बने बैठे हैं । लेकिन हम लोगों की ढोल में कितना बड़ा पोल है, सिवाय भगवान के और कोई नहीं समझ सकता । महात्मा का किसी राष्ट्र में जन्म लेना, उस देश के भाग्योदय का लक्षण माना जाता है ! आज भारत के दुर्दिन के कारण हो रहे हैं, कपटी-महात्मा, ढोंगी-साधु, नकली-भिखारी और इन्हीं समाज के फोड़ों के कारण असली महात्मा एवं वास्तविक साधुगण कष्ट पा रहे हैं ।

नरगिसः—[नत मस्तक होकर] सच कह रहे हैं महन्थ जी !

धूर्त्तानन्दः—बेटी ! आज के मंगलमय दिवस से इस खोटे धन्धे को अन्तिम प्रणाम करता हूँ और तुम लोगों से भी ऐसी आशा करता हूँ कि मेरी आज्ञाओं की अवहेलना नहीं करोगे।

सबः—[चौंककर] तो गुरू जी हम लोग खायेंगे क्या ?

धूर्त्तानन्दः—तुम लोग जीवन भर बैठकर मेरे साथ खाओ, पढ़ो, लिखो और राष्ट्र के हित के लिए कटिबद्ध हो जाओ। मैंने ठग-विद्या से जो लाखों रुपये कमाया है, उसको तुम लोगों को खिलाऊँगा और मेरे प्रिय शिष्यों ! तुम लोग अपना तन, मन, धन प्यारी जननी जन्म भूमि के चरणों में बिखेर दो।

रमजानअलीः—स्वामी धूर्त्तानन्द महाराज की

सबः—जय !

मधुकणः—श्री श्री एक हजार आठ महन्थ धूर्त्तानन्द महाराजाधिराज की

सबः—जय।

नरगिसः—हमारा भला होगा !

सबः—जब दूसरों का भला करेंगे।

भास्करानन्दः—[प्रवेश करके] ठहरो ! [धूर्त्तानन्द से] स्वामी जी ! आप को प्रणाम करता हूँ।

[धूर्त्तानन्द दौड़कर भास्करानन्द के चरणों पर गिर पड़ता है।]

धूर्तानन्दः—गुरुदेव ! ये आप क्या कर रहे हैं ? तुच्छ सेवक को लज्जित न कीजिए।

भास्करानन्दः—तूने जो आज कर दिखाया है वह एक आदर्श-त्याग है। बेटा, भगवान तुम्हें सफलता दे, ऐसी मैं कामना करता हूँ। देखो न ! जब विदेश के यात्री भारत भ्रमण के लिए आते हैं

और हमारे ही भाई जो भिक्षाटन करके अपनी जीविका चलाते हैं वे उनसे चन्द ही पैसों पर अपना चित्र खिंचवा लेते हैं और वे यात्री अपने देश में उन चित्रों द्वारा भ्रामक प्रचार करते हैं। आज विदेशों में जाकर उनकी भावनाओं को मिटाना है झूठे विज्ञापन से सावधान कराना है साथ ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति आध्यात्मिक एवं नैतिक भावनाओं का यथेष्ट प्रचार करना है।

धूर्त्तानन्दः—[अभिमान पूर्वक] अगर आप ऐसे महात्माओं की कृपा रही, तो अवश्य ऐसा ही होगा।

भास्करानन्दः—आज के शुभ दिन से मैं तुम्हारा मनहूस धूर्त्तानन्द नाम बदलकर स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती रखता हूँ और जगत में इसी नाम से सुविख्यात होंगे।

हर्षचन्दः—स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती की…

सबः—जय!

धूर्त्तानन्दः—स्वामी भास्करानन्द सरस्वती की…

सबः—जय!

मंगलसिंहः—धर्म की….

सबः—जय हो!

रमजान अलीः—अधर्म का….

सबः—नाश हो!

[जय जयकार के साथ आनन्द-विभोर होकर सबका नाचना।]

—ःपट परिवर्तनः—

——×——×——

+ − ÷ − + − ÷ − * ÷ − ÷ − + − +

अंक द्वितीय दृश्य पांचवां

+ − ÷ − ÷ − ÷ − * + − + − + − +

[सेठ झाबरमल का निजी बैठकखाना। नवीन प्रकार की सजावटों से सजा हुआ है। दो दरबान तलवार, गँड़ासा, बल्लम, बन्दूक लेकर सावधानी से पहरा दे रहे हैं। रात्रि आठ बजे झाबरमल और गुमानीलाल आपस में गम्भीरतापूर्वक विचार विनिमय कर रहे हैं।]

झाबरमलः—साले साहब! इन्द्रपुरी को भी अपनी चकाचौंध से लज्जित करने वाला भवन! अनुपम सजावट। सुरा-सुन्दरियों की कोई कमी नहीं; मगर मैं खोया-खोया सा रहता हूँ। कोई दैवी-शक्ति मुझे बार-बार यह नीचता-पूर्ण कार्य करने से विमुख कर रही है; लेकिन मैं वासना के वशीभूत होकर उधर ही दौड़ लगा रहा है। तुम्हारी बहन जी! लाखों बार समझाया, मगर मैं पतित, पापों की ही ओर अग्रसर हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं मेरा "हार्टफेल" न हो जाय। रात्रि को जब मैं सोता हूँ तब मेरे कुकर्मों के एक-एक दृश्य आँखों के सामने नङ्गा-नृत्य करते हैं। मैं भागना चाहता हूँ; परन्तु मैं भाग नहीं सकता.........।

गुमानीलालः—[सहारा देते हुए] जीजा जी! आज आपको क्या हो गया? जो उल जलूल बातें बक रहे हैं! मेरा मन आप की बातों को सुनकर डवाँडोल हो रहा है।

झाबरमलः—[आश्वासन देते हुए] नहीं, नहीं, गुमानीलाल! तुम्हें धीरज नहीं खोना चाहिए तुम्हें देख-देखकर कर ही तो मुझे

साहस मिलता है; क्योंकि तुम हमारे दाहिने बाजू हो ।

गुमानीलालः—जीजा जी ! आप ही कोई नवीन युक्ति ढूढ़िए ।

झाबरमलः—[सोचते हुए] धन के मिथ्या मोह-माया में फँसकर, देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं । सीधी सादी एवं ईश्वर भक्त जनता का निर्दयता पूर्वक गला घोटकर अपना उल्लू सीधा करते आ रहे हैं । मेरी तो राय है गुमानीलाल ! अगर राष्ट्र के साथ अच्छा व्यवहार न करें, तो उसके साथ गद्दारी भी नहीं करनी चाहिए ! [चिन्तित होकर] मगर ये राजभोग ! स्वर्गीय आनन्द !! सुरा-सुन्दरी एवं नाच रंग का मजा जाता रहेगा··· ।

गुमानीलालः—नहीं, नहीं जीजा जी ! ऐसी बात नहीं !! आप भला, तो जग भला ! इन पँचड़ों में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं ।

झाबरमलः—हा-हा-हा-हा तुम ठीक कहते हो साले साहब ! आप भला, तो जग भला ।

[सहसा लक्ष्मीनारायण की घटना का स्मरण होते ही बड़बड़ाने लगना ।]

उस दिन भगवान लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में दिव्य प्रतिमा मेरी भाव-भंगिमाओं को देखकर मुस्करा रही थी, चारों ओर से भयानक जन्तु मेरा पीछा कर रहे थे, आग की भीषण लपटें आ रही थीं, भूत-प्रेत नंगे नृत्य करते हुए धमका रहे थे, उस घटना को मैं भुलाना चाहता हूँ; मगर वह भुलाये नहीं भूलती, जिधर भी दृष्टि दौड़ाता हूँ वही दृश्य मेरे सामने आता है, उस दिन किसी तरह जान बच गई; मगर इस चिन्ताओं से मेरी जान नहीं बच सकती ।

गुमानीलालः—[माथा ठोंककर] हाय रे बाप ! आप को क्या हो गया ? मालूम होता है ये पागल हो गए ? क्या करूँ ? डाक्टर बुलाऊँ ?

झाबरमलः—उसी दिन का दृश्य मेरे सामने नाच रहा है।

गुमानीलालः—(झुँझला कर) ये आप का भ्रम है। कहीं पत्थर भी हँसता है। जीजा जी ! आप बिल्कुल बच्चों सी बातें करते हैं।

झाबरमलः—(अँकड़कर) बच्चों सी बातें नहीं बिल्कुल ठीक कहता हूँ। कान खोलकर सुनो। कल से भिखारियों को रोटी बटवाना बन्द कर दो और सबको मिल में भर्त्ती कर दो। काम करेंगे और चैन से खायेंगे।

गुमानीलालः—रोटी, मिठाई और पूड़ी न मिलने पर वे भूखे मर जायँगे।

झाबरमलः—नहीं, ऐसी बात नहीं, अगर उनको भीख नहीं मिलेगी, तो वे अवश्य कोई न कोई काम करके अपनी जीविका चलायेंगे। वे हट्टे-कट्टे हैं। हमी लोग उन्हें पूड़ी और मिठाइयाँ खिलाकर उनकी आदतें बिगाड़ रक्खे हैं। खाने के लिए पूड़ी और मिठाइयाँ मिल जाती है। नशा एवं रण्डीबाजी के लिए पैसे भीख माँग लेते हैं। बिना किराया दिये ही फुटपाथ पर सो जाते हैं, फिर उन्हें चाहिए ही क्या ? भीख देनेवाला देश का सबसे बड़ा दुश्मन है, भिखमंगी प्रथा का प्रचारक हैं, बेचारे भिखारियों का········।

गुमानीलालः—(बात काटते हुए) छोड़िए इन बातों को ! आज उत्सव के शुभ दिन भिखारियों को लेकर माथा चाट रहे हैं, मारिए भिखारियों को गोली········।

झाबरमलः—(पलटते हुए) अरे हाँ, मैं तो एक दम भूल ही गया था। मेहमान लोग आते ही होंगे, गुमानीलाल उनके सेवा-सत्कार में कोई कमी न रहने पावे।

गुमानीलालः—(प्रसन्नता से) जीजा जी ! अतिथियों को विदेश का नर्त्तकी मिस मिष्टो का नृत्य गीत सुनाकर एवं जिमाकर बिदा कर

दिया जाय और बाकी चहकती सुन्दरियों का गाना और रोना हम लोग सुनेंगे।

झाबरमलः—[उत्सुकता से] कितनी सुन्दरियाँ हैं ?

गुमानीलालः—दर्जनों।

झाबरमलः—(मुस्कराते हुए) उनकी वयस क्या होगी ?

गुमानीलालः—बीस वर्ष से कम ही की होगी जीजा जी !

झाबरमलः—[गुमानीलाल के कानों में] गुप्त कमरे में बिठा रक्खो, किसी को उनकी गन्ध भी न लगने पावे।

गुमानीलालः—जीजा जी ! मैं मामूली सयाना नहीं।

झाबरमलः—हा-हा-हा-हा....

गुमानीलालः—हा-हा-हा-हा....

[गुमानीलाल और झाबरमल हाथ मिलाते हैं। इसी समय खुशहाल दौड़ा हुआ आता है।]

खुशहालः—सेठजी ! सेठजी !!

झाबरमलः—क्या है ?

खुशहालः—बाहर तीन आदमी आयल बाटंय। उनहन उत्सव में समलित होयल चाहैलंय।

झाबरमलः—जाओ। दरबान से कह दो आने दे।

खुशहालः—अबहीं गइली सरकार !

[खुशहाल का दौड़ते हुए जाना।]

झाबरमलः—ठहरो ! [खुशहाल ठिठक जाता है] वे लोग कैसे मालूम होते हैं ?

खुशहालः—सरकार ! हम का बताई। हम अपनी इतना उमर मा आजतक ई फैशन कय आदमी तय देखबय नाहीं कइली।

झाबरमलः—क्या मतलब ?

खुशहाल:—का बताईं सरकार। एक मिला लम्बा कोट पहिनले बाय। फट-फट के नीचे कमीजिया फुसेरले बाय। अँखिया में चश्मा लगवले बाय। आऊर सेठ जी कपरा पै टोकरा ओन्हवले बाय। आधी मूँछ के अइंठले बाय। बकरन की नाईं दाढ़ी बाय। गरवा में चिरकुट बाँध के मुहवाँ से धुआँ उगलत बाय अपना के डाइ-रेक्टर साहब कहेला।

झाबरमल:—उसके साथ में और कोई है ?

खुशहाल:—हाँ सरकार ! ओकरा साथ में एक बन्दरिया जैसी औरत बाय। न ऊ मरदय मालूम होले, न मेहररूअय। न मालूम का गिट्पिट्-गिट्पिट् बोलत हव।

झाबरमल:—साले साहब ! ये क्या बला है ?

खुशहाल:—बला नहीं सरकार। एक नौकर भी बाय। ऊ तय ओका काका बोलतय बाय। ओकरा देखय बदे तमाम भीड़ लग गइल बाय।

झाबरमल:—गुमानीलाल ! जाकर देखना ये क्या मामिला है ?

[गुमानीलाल का जाना और शीघ्रता से आना।]

गुमानीलाल:—[प्रसन्नता से] जीजा जी ! डाइरेक्टर साहब आ गए और उनके साथ में बन्दरिया नहीं प्रसिद्ध डान्सर मिस मिण्टो है और साथ में उनका चाइनीज़ नौकर शां शू शां है।

झाबरमल:—ओ ! ये बात है !! खुशहाल ! जाओ, आदर के साथ लिवा लाओ।

खुशहाल:—अबहीं गइली सरकार !

[खुशहाल का जाना।]

झाबरमल:—साले साहब ! वो कौन सी परी आ रही है, जिसको देखने के लिए भीड़ इकट्ठी हो गयी ?

गुमानीलालः—जीजा जी ! इस नर्तकी के नखरे आप देखते ही रह जायँगे !

झाबरमलः—[आश्चर्य से] ऐसी बात ?

डाइरेक्टरः—[आकर] राम राम सेठ साहब !

झाबरमलः—[नीचे ऊपर देखकर] राम राम ।

डाइरेक्टरः—गुड इवनिंग छोटे सरकार !

गुमानीलालः—गुड इवनिंग डाइरेक्टर साहब ! हाउ डू यू डू ।

डाइरेक्टरः—आई एम क्वाइट वेल थैंक्स यू ।

गुमानीलालः—कहाँ हैं आप की मिस मिण्टो ?

डाइरेक्टरः—अभी नहीं आ सकीं, तमाम भीड़ घेरे हुए है ।

झाबरमलः—[गरजकर] दरबान भीड़ को भगाओ, जो नहीं माने उसे गोली से उड़ा दो ।

दुर्जन सिंहः—[लम्बी सलामी दगाते हुए] एशशर ।

[दुर्जन सिंह का जाना । तुरन्त मिस मिण्टों और मिं शां शूं शां के पीछे दुर्जन सिंह का आना ।]

मिसमिण्टोः—गुड इवनिंग शेट साहब !

झाबरमलः—[घूरते हुए] गुड इवनिंग !

मिसमिण्टोः—हल्लो मिस्टर गुमानीलाल !

[गुमानीलाल और मिसमिण्टो का नजरें लड़ाकर हाथ मिलाना मिं-शां शूं शां का चौंककर इधर-उधर देखना ।]

झाबरमलः—[भौंहें सिकोड़कर] ये कौन है ?

मिसमिन्टोः—सर दिस इज माई गुड सरवैण्ट । मिं शां शूं शां शेट साहब को सैलूट करो ।

शां शूं शांः—ऐश मैडम !

[मिं शां शूं शां का बाँकी अदा से चूतड़ हिलाकर सैलूट करना ।]

झाबरमलः—पहले आप लोग जीम लीजिए, इसके बाद अपना कार्य-क्रम प्रस्तुत करिए ! दुर्जन सिंह ! आप लोगों को महराज के पास ले जाओ ।

दुर्जनसिंहः—[सैलूट करते हुए] आप लोग चलिए ।

झाबरमलः—साले साहब ! देखना प्रवेश द्वार पर कोई महाशय पधारे हुए हैं; शायद मेहमान लोग आ रहे हैं ।

गुमानीलालः—अभी जाकर साथ लाता हूँ !

[गुमानीलाल का जाना और झाबर-मल का माथा ठोंककर बैठ जाना ।]

झाबरमलः—आज उत्सव मनाया जा रहा है । मेरे घर में नाच और गानों से धूम मच जायगी, सैकड़ों आगन्तुक भोजन भाव करेंगे; लेकिन मुझे सब मिथ्याडम्बर सा प्रतीत होता है जब मेरा लाल नहीं तब कुछ नहीं; जवान लड़की दर-दर भटक रही है, ये धन-धाम क्या होगा ? एक न एक दिन इसकी मोह-माया तजकर चला ही जाना पड़ेगा !

[चिंता से व्यग्र हो जाता है ।]

मैं जब भोजन करने के लिए बैठता हूँ तब उनकी याद आ जाती है । लड़कपन में उन दोनों को मैं कितना प्यार करता था, बिना उनके भोजन नहीं करता था जब मैं भोजन बन्द करता था तब वे कहते थे—'खालो न बापू !' वे रोटियाँ तोड़ कर मेरे मुँह में डालते थे, उनका कितना पावन प्रेम था !

ये नर्त्तकियाँ ! रुपयों की प्यासी एवं बिमारियों की घर !! जिसने इनसे प्रेम बढ़ाया, उसका सर्वनाश हो गया; लेकिन मैं अपनी आदत से लाचार हूँ !

[उसी समय सरलादेवी आती हैं।]

सरलादेवीः—क्या सोच रहे हैं? दिन-रात सोचते-सोचते पागल हो जायेंगे।

झाबरमलः—पागल होनेमें अब कोई कमी नहीं रह गई हीरामणी की माँ!

सरलादेवीः—घर फूँक कर तमाशा देखते हैं और कहते हैं पागल होने में कोई कमी नहीं रह गई हीरामणी की माँ! अतिथि लोग आ रहे हैं, उनका स्वागत कीजिए। पहले ही सोचना चाहिए था न!

झाबरमलः—तुम ठीक कह रही हो हीरामणी की माँ! [भानामल को देखकर] अहा! भानामल जी! आइये! आइये!! बैठिए!!!

सरलादेवीः—विराजिए!

भानामलः—धन्यवाद।

गुमानीलालः—[कोठारीमल के साथ आकर] जीजाजी! आप सेठ कोठारीमल जी हैं।

झाबरमलः—आप से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

कोठारीमलः—राम राम सेठजी!

सरलादेवीः—विराजिए।

कोठारीमलः—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं!

[कई आदमियों का साथ आना।]

गुमानीलालः—ओहो! पूनमचन्दजी! आइये, आइये, विराजिए!

झाबरमलः—ओहो! शमशेरबहादुर सिंह जी! जय गणेशजी की!

शमशेर बहादुरः—जय गणेश!

सरलादेवीः—बहन जी! आइये, आओ न माया!

गुमानीलालः—आइये, आइये, मैनेजर साहब!

झाबरमलः—ओहो साजन साहब! आइये, बैठिए!

सरलादेवीः—आइये श्यामनारायण जी, बैठो न शिरोमणी ! आप दोनों तो दुइज के चाँद हो गए !

शिरोमणीः—कविजी को कविता करने से अवकाश ही नहीं मिलता !

गुमानीलालः—आइये प्रोड्यूशर साहब ! आओ न पूर्णिमा ! बैठो न रेणुका !!

शर्माजीः—थैंक्स !

[आगन्तुक लोग बैठते हैं ।]

झाबरमलः—ओहो ! राय बहादुर !! विराजो मालकाँ !!!

राय बहादुरः—क्या विराजूँ ? [आहें भरते हुए] कहाँ हैं आपकी मिस मिण्टो ! बुलाओ न सेठ साहब ! दिल आपे से बाहर हुआ जा रहा है !

[सबका खिलखिला कर हँसना ।]

झाबरमलः—आ गई हैं, थोड़ा बनठन रही हैं, धीरज धरिए, आकर बिजली गिराती हैं !

राय बहादुरः—बड़ी प्रसन्नता की बात है ।

गुमानीलालः—मैं अभी बुलाकर लाता हूँ ।

[गुमानीलाल का जाना और हीराचन्द का आना ।]

हीराचन्दः—राम राम सेठजी !

झाबरमलः—आइये, पधारिये ! हमारे भाग्य कि आपके दर्शन होगए, कहिए क्या आज्ञा है ?

हीराचन्दः—मैं बैठने के लिए नहीं, आपसे कुछ आवश्यक बातें करने आया हूँ ।

झाबरमलः—कीजिए, शौक से कीजिए ।

हीराचन्दः—देखिए,आप भिखारियों के नेताओं से सुलह कर लीजिए, इसी में आपकी भलाई एवं बड़ाई है ।

झाबरमलः—मैं करोड़पति और भिखारियों से सुलह कर लूँ, क्या बेतुकी बातें कर रहे हैं? हा-हा-हा-हा—

हीराचन्दः—मैं फिर कह रहा हूँ, सोच लीजिए।

झाबरमलः—मैं सब सोच चुका हूँ, आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं!

हीराचन्दः—मैं फिर कहता हूँ आप सोच लीजिए, समझ लीजिए।

झाबरमलः—[झुँझला कर] ओह! सब सोच चुका हूँ।

गुमानीलालः—[आकर] आ गईं मिस मिण्टो! आइये डाइरेक्टर साहब!

डाइरेक्टरः—भाइयो! अब आप लोगों के सम्मुख सात भाषाओं का गीत गाकर मिस मिण्टो आपलोगों को सुनायेंगी, अपनी दिव्य दृष्टि को उधर घुमाइये····एक····दो····तीन····!

मिसमिन्टोः—अभी लीजिए डाइरेक्टर साहब!

हीराचन्दः—सेठ साहब! मैं जा रहा हूँ!

झाबरमलः—बैठिए नाच-रंग में भाग लीजिए। थोड़ा जलपान कीजिए!

हीराचन्दः—मेरे पास इतना बेकार समय नहीं है।

झाबरमलः—तो आपको बुलाने ही कौन गया था!

[सबका हँसना।]

सरलादेवीः—[चीखते हुए] उइ माँ! अतिथि का अपमान! आप ये क्या कर रहे हैं स्वामी जी!

झाबरमलः—चुपचाप बैठो! दुर्जन सिंह! साहब को रास्ता बताओ।

दुर्जनसिंहः—[संकोचवश] आइये सेठजी!

[दुर्जनसिंह के साथ हीराचन्द का जाना। सबका हँसना।]

डाइरेक्टरः—अब मिस मिण्टो अपना प्रोग्राम प्रारम्भ करेंगी।

[सबका ताली बजाना।]

मिस्टर शां शूं शां !

शां शूं शां:—ऐश डाइरेक्टर साहब !

डाइरेक्टर:—जाओ ! ह्विस्की और लेमन लाओ !

शां शूं शां:—अभी लाया डाइरेक्टर साहब !

[सैलूट करके मि. शां शूं शां का जाना ।]

डाइरेक्टर:—वन....टू....थ्री....

[मिस मिण्टों का नृत्य की मुद्रा में खड़ा होना ।]

अब आप लोगों के सामने गाँव की गोरी किस प्रकार आपस में गीत गाकर मन बहलाती हैं सुनिए....।

—:ग्राम्यगीत:—

हम छुअय न देबय जोबनवाँ, बलम मोर का करिहैं ।
न जाइब हम उनके गोहनवाँ, बलम मोर का करिहैं ॥
करे झुलनी कुलेल, मोरे ओठवा पे खेल ।
मुख चुमय नाहीं देब, बलम मोर का करिहैं ॥
हम काशी चल जइबय, बलम मोर का करिहैं ॥

——×——×—— **"नाज बनारसी"**

[सबका ताली बजाना ।]

डाइरेक्टर:—अब मिस मिण्टो मारवाड़ का गीत सुनायेंगी ।

—: मारवाड़ का गीत :—

क्या जादू भर लाई रे, मोरा आना देवरिया ।
सेर भर मिठाई लाओ मोरे देवरा, मैं बन जाऊँ थारी लुगाई रे, मोरा आना देवरिया ॥
धीरे-धीरे खिड़की खोल मोरे देवरा
देखो उठे न थारो भाई रे, मोरा आना देवरिया ।

बेधड़क बैठ चलेंगे सफर को,
पिऊ की बचा के नजर को।
बाँध दौलत करैं खाली घर को,
सूनी सेजा देख धणीं पीटे सर को ॥
हम मारवाड़ चल जइबय ! बलम मोर का करिहैं ?
——×——×—— —"नाज बनारसी"

डाइरेक्टर:—अब आप लोगों के सम्मुख मिस मिण्टो कटक का गीत सुनायेंगी ।

—: कटक का गीत :—

ओलो रोसो पती, कुआड़े जावचू !
नाकेर बेशर मुलाऊची,
ओलो रोसो पती, कुआड़े जावचू !
दोही कुनाई दिला, प्राण ते हड़े निला।
पाथ ते कड़ो मणो, कमरे चन्द हणो ॥
नाकेर बेशर मुलाऊची, ओलो रोसो पती कुआड़े जावचू !
हम कटकिन बन जइबय, बलम मोर का करिहैं !
——×——×—— —"नाज बनारसी"

डाइरेक्टर:—बंगालिन सुन्दरी के नखरे कैसे होते हैं, उसे मिस मिण्टो समझायेंगी।

तोमी कादेर कुलेर बऊ, गो दीदी कादेर कुलेर बऊ !
जाच्चो तोमी हेंसे, हेंसे, जाबे तोमार कोलशी भेषे !!
लागबे प्रानेर ढेऊ गोदी दी कादेर कुलेर बऊ !
हम बंगालिन बन जइबय बलम मोर का करिहैं !
——×——×—— —"नाज बनारसी"

डाइरेक्टर:—अब इरान देश की चक्कू मार बुलबुल का गीत सुनिए।

—: इरानी गीत :—

इक रोज़ बज़्में यार में मेरा गुज़र हुआ।
इक दिल जले से मुलाकात हो गया॥
उसने कहा सुनाइये कुछ अपना माजरा।
बहुत ज़िद्द किया तो सुनाना मुझे पड़ा॥
हम इरान चल जइबय, बलम मोर का करिहैं!

——×——×—— —"**नाज बनारसी**"

डाइरेक्टरः—अब सात समुन्दर पार की परी की करामात देखिए!

—: मेम साहब का गीत :—

आई लभ् यू—आई लभ् यू—भाग यहाँ से तू।
माई डियर! कम हियर—माई डियर—
डोन्ट फियर.....................

[डाइरेक्टर का डरते-डरते जाना। उसके पीछे-पीछे मिस मिरण्टो का भी जाना। इसी समय एकाएक धड़ाका की आवाज़ होती है। धुआँ, लपट, गुमानीलाल का टेलीफोन करना, हो हल्ला, भगदड़, चित्कार!]

[ड्राप का धीरे धीरे आना।]

(जनता का ताली बजाना।)

[ड्राप का धीरे-धीरे खुलना।]

(दमकल का बेग से आना)

—: ड्राप का शनैः शनैः आना :—

—: दूसरा अंक समाप्त :—

——×——×——

नीलकान्तः—जल्दी जाओ न माँ !

नीलूः—बड़ी भूख लगी है माँ !

नगेन्द्रः—नहीं, छूरी मुझे दे दो, मैं पहले अपना काम तमाम करूँ ! ये करुण दृश्य मुझसे नहीं देखा जाता।

कामिनीः—नहीं, पहले मैं मरूँगी !

[नगेन्द्र कुमार और कामिनी का एक दूसरे से छूरी छीनना। नीलकान्त और नीलू का रोना।]

कौशल्याः—[चौंककर] ठहरो ! छूरी इधर लाओ !!

कामिनीः—देवी तुम कौन हो ?

कौशल्याः—देवी-देवता करने की कोई आवश्यकता नहीं, ये लो दस रुपये; जाकर भोजन करो और ये लो पता कल इस पते पर मिलना !

नगेन्द्रः—देवी जी !

कौशल्याः—कुछ नहीं सुनना चाहती; अगर तुम लोग नहीं जाते हो, तो मैं पुलिस को बुलवाती हूँ।

नगेन्द्रः—जाता हूँ देवी !

कामिनीः—बहन जी ! कल हम लोग आपसे कब मिलें ?

कौशल्याः—प्रातःकाल आठ बजे ! अवश्य आना सब गोलमाल ठीक हो जायगा

[नगेन्द्र कुमार और कामिनी का श्रद्धा से अभिवादन करते हुए नीलकान्त और नीलू को गोद में लेकर जाना।]

कौशल्याः—हाय ! हाय !! हायरे बेबसी !! जब मनुष्य हाथ पैर दौड़ा कर थक जाता है तब वह विवेक शून्य हो जाता है, जो भी उसके उमंग में आता है, उसे वह कर बैठता है। उसका भीषण परि-

णाम होता है ! जब निर्धनता अपने बर्बर पंजों में जकड़ लेती है तब उसे लोग चोर, डाकू, भिखारी, आवारा, कुलच्छनी, देश-द्रोही आदि नामों से पुकारने लगते हैं आज ये भिखारी परिवार भी उसी के शिकार हुए हैं। ये सब प्रभू की माया है !

[सोच में पड़ जाती है]

अब मुझे क्या करना चाहिए ? रात्रि का समय नदी का किनारा, सुनसान वियावान बगीचा, झिन्गुर की झन्कार, जहाँ मनुष्य की गन्ध तक नहीं आती। जंगली जानवरों का आवागमन शुरू होगा। ये जगह डाकुओं की कयामगाह सी मालूम पड़ती है। रात्रि बेला में यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है।

लेकिन प्रियतम को जब प्रेमिका मिलने का समय दे देती है तब उसका प्रेमी अवश्य आता है; अगर वह नहीं आता है, तो उसका प्रेम झूटा है, बनावटी है, धोखे की टट्टी है, जिसका परि-णाम जीवन में चलकर भयावह हो सकता है।

मगर भारतीय ललना ! जिसको एक बार अपना पति मान लेती है वह उसी की होकर रहती है। स्वप्न में भी पराये पुरुष का स्मरण करने वाली स्त्री कुलटा, दुराचारिणी, वेश्या, डाइन न मालूम कितने नामों से पुकारी जाती है। अब मैं लौटकर जाऊँ तो कहाँ जाऊँ ? मेरे लिए संसार में कोई स्थान नहीं, सिर्फ एक स्थान है प्रियतम का ! मैं प्रतिज्ञा करती हूँ; अगर आज रात्रि के बारह बजे तक वो नहीं आये, तो इस भिखारियों की चमकती हुई छूरी को:सीने के पार कर दूँगी। मेरा प्रेमी मेरी शव को ही पायगा और अपनी भूलों पर सर पीट कर पछतायेगा। हे मन ! अभी तो उनकी प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी, इस नीरव स्थान में नीरव रहना ठीक नहीं, इसलिए गीत गा और अपना मन बहला——

—: कौशल्या का प्रतीक्षा गीत :—

दूर गगन में हँसते तारे, पायें तो कैसे पायें।
दिन में छाया घन अँधियारा, कैसे दीप जलायें॥
दूर बसाना था, दुनियाँ से अपनी प्रेम नगरिया।
अँधियारे में भूल गई हूँ, कैसे पाऊँ डगरिया॥
तुमसे मिलने को व्याकुल हम, रह रह कर ललचायें।
दूर गगन में हँसते तारे, पायें तो कैसे पायें॥
ग़म की लहरें, तेज हवाएँ, आँधी बनकर आईं।
चाँद उतर आवो पृथ्वी पर, दो अपनी परछाईं॥
दूर समुन्दर में है नइया, कैसे पार लगायें।
दिन में छाया घन अँधियारा, कैसे दीप जलायें॥
दूर गगन में हँसते तारे, पायें तो कैसे पायें।
दिन में छाया घन अँधियारा, कैसे दीप जलायें॥
आवो हम तुम दूर बसालें एक नया संसार।
ग़म की दुनियाँ छोड़ चलें हम, अम्बर के उस पार॥
आजा आजा और बताजा, कैसे तुम्हें मनायें।
दूर गगन में हँसते तारे, पायें तो कैसे पायें॥

—"व्यथित प्रेमी"

——×——×——

मेरे प्रियतम ! तुम जहाँ कहीं भी हो, जल्द आ जाओ ! मैं तुम्हारे प्रेम में अपनी सुध-बुध खो बैठी हूँ। एक पल एक वर्ष के समान लग रहा है। देखो ! देखो !! तुम्हारी प्यारी कौशल्या तुम्हारे लिए कितनी बेचैन है। मुझसे मिलने के लिए तुम भी तड़फते होगे; लेकिन कोई अड़चन आ गई होगी। आओ ! जल्द आओ !! और अपनी प्रियतमा को सीने से लगा लो।

[एक पेड़ के सहारे आँख मूँदकर बैठती है ।]

रणवीरः—आ गया ! आ गया !!

[कौशल्या का छिपना ।]

प्यारी कौशल्या ! मैं आ गया !!

[एक पैरमें चप्पल पहने, बिखरे हुए बाल, एक हाथमें शेरवानी पहने, बटन खुली है । हाथ में गुलाब का फूल लिए हुए जल्दी-जल्दी रणवीर का आना ।]

रणवीरः—[इधर-उधर देखकर] तुम कहाँ हो ? इस अँधियारे में नहीं दिखलाई पड़ती । कैसे ढूढ़ूँ ? कहाँ-कहाँ ढूढ़ूँ ?? मैं समय देकर उस समय न आ सका ! रास्ते में मोटर बिगड़ गई ! प्यारी कौशल्या मेरा कोई भी दोष नहीं ! मैं निर्दोष हूँ प्रियतमे ! कहाँ छिप गई हो ? आ जाओ न ! मैं तुमसे क्षमा माँगूँगा ! तुम्हें क्षमा करना ही होगा ! नहीं आती; तेरी इच्छा ! मैं भी जाता हूँ ।

ऐ प्यारी-प्यारी हरी घासों, कोमल लताओं, हरे-हरे वृक्षों, तुम लोग साक्षी रहना ! ऐ चाँद तुम पृथ्वी पर आ जाओ, मैं तुम्हारे शीतल प्रकाश में अपनी जीवन संगिनी को पाकर शीतल हो जाऊँ !

[चाँद का प्रगट होना । उसके प्रकाश में रणवीर का कौशल्या-देवी को ढूँढ़ना ।]

रणवीरः—प्यारी कौशल्या ! तुम मुझसे दूर क्यों हो रही हो ? उत्तर क्यों नहीं देती ?

[हाथों से उसे अपनी ओर घुमाकर।]

आज क्यों नहीं बोलती ?

कौशल्याः—[रूठकर] जाइये ! जाइये !! मैं आपसे नहीं बोलूँगी !!!

[कतराकर दूर खड़ा होना। रणवीर का मनाना।]

रणवीरः—परवाने का क्या कसूर है ? बोलो न प्राणेश्वरी ??

रणबीरः—अच्छा जी ! ये बात है !! तो लाओ अपने हाथ की छूरी मुझे दे दो और मैं जाता हूँ।

कौशल्याः—छूरी लेकर क्या करेंगे ?

रणवीरः—अपराधों का प्रायश्चित !

कौशल्याः—ऐसा पाप क्यों करेंगे ?

रणवीरः—मेरी इच्छा जब मेरी प्राणेश्वरी ही रूठ गई तब मैं जीवित रहकर क्या करूँगा ?

कौशल्याः—सच्च !

रणवीरः—नहीं तो झूठ !

कौशल्याः—अच्छा तो लीजिए !

[जब रणवीर हाथ बढ़ाता है तो कौशल्यादेवी छूरीको दूर फेंककर अठ-खेलियाँ करती हुई गाने लगती है।]

—: रणवीर और कौशल्या का गीत :—

कौशल्याः—

मेरे दिल की बगियन में आकर, निडर हो विचरता है कौन ?
मेरे नवजवानी की जलती शमाँ पर, मचलता है कौन ?

रणवीरः—

किसीके दिल की अरमान लेकर विकल हो मचलती है कौन?
किसी की मुहब्बत को दिल में बसाकर तड़पती है कौन?

कौशल्याः—

मुहब्बत की दुनियाँ में आकर खुशी से न फिरता है कौन?
मेरे दिल के घेरे में आकर खुशी से न घिरता है कौन?

रणवीरः—

किसी दिल की फरियाद सुनती नहीं, आह भरती है कौन?
मेरे इश्क़ में लबेजान कोई, समझती है कौन?

कौशल्याः—

मेरे दिल की इन बन्द कलियों को आकर खिलाया है कौन?
मुहब्बत की दरिया में हम डूबते थे बचाया है कौन?

दोनोंः—

मुहब्बत की दरिया में हम डूबते थे बचाया है कौन?

[कौशल्यादेवी का हाथ पकड़कर रणवीर
'उसे जंगलों की ओर ले जाता है।
कौशल्यादेवो मुस्कराती हुई
नखरे से जाती है।]

—: पट परिवर्तन :—

——×——×——

अंक तृतीय दृश्य दूसरा

[भिखारियों का एक बहुत बड़ा केन्द्र। समय प्रातःकाल। विशाल सेट। फुल लाइट। डबल फोकस। बड़ा बोर्ड (भिखारी सुधारक समिति) इसी संस्था के अन्तर्गत न मालूम कितनी संस्थायें चल रही हैं, जो भिखारियों के लिए सेवा कार्य करती हैं। इसमें चिकित्सा-लय, विद्यालय, शिल्प-गृह, रंगाई, छपाई, बुनाई, कताई, धुनाई, कृषि विभाग आदिके बहुत से कार्य हो रहे हैं। घण्टी का बजना। सबका हाजिरी देकर अपने-अपने विभाग में जाना।]

ज्ञानचन्दः—आपलोग अपना काम शुरू कर दीजिए, जहाँ समझ में न आये मुझसे पूछिए।

[नगेन्द्रकुमार, कामिनी, नीलू, और नीलकान्त का कार्ड लेकर आना।]

आप लोग क्या चाहते हैं?

[नगेन्द्रकुमार कार्ड देता है वह पढ़कर उसे बैठने को बोलता है।]

आप लोग बैठ जाइये, हाँ, आप अपना नाम उपस्थिति पत्रिका में अंकित करा दीजिए जब घण्टी बजे तो सबके साथ जाकर भोजन कर लीजिए।

नगेन्द्रः—बहुत अच्छी बात है!

ज्ञानचन्दः—दो एक दिन आराम से खाइये; फिर आपके योग्य काम बताया जायगा। सायंकाल इन कपड़ों को देकर नवीन वस्त्र धारण कर लीजिएगा!

कामिनी:—बड़ी खुशी की बात है !

[नगेन्द्रकुमार, कामिनी बैठते हैं और
नीलू-नीलकान्त इधर-उधर घूमते हैं।]

——×——×——

[एकाएक टेलीफोन की घण्टी का
बज उठना। ज्ञानचन्द का सुनना।]

ज्ञानचन्द:—हलो ! हलो !!.......आप कहाँ से बोल रहे हैं ?.......
पुलिस स्टेशन से.......क्या बात है ?.......हैं ! एक मोटर दुर्घ-
टना—चौराहे पर होगई और कई आदमी—घायल हो गए, अच्छा
उनको यहाँ भेज दो।.......हैं ! एक सेठ का पैर टूटकर लटक
रहा है.......हाँ, हाँ, भेज दीजिए, मेरे अस्पताल में ठीक हो
जायँगे.......क्या वहाँ पर कोई मोटर खाली नहीं है.......अच्छा,
मैं अस्पताल से मोटर भेजता हूँ।.......जाओ कौशल्यादेवी को
बुला लाओ और एक एम्बुलेंस अफोम चौरस्ते पर भेज दो...
और बाकी लोग अपना-अपना काम ठीक से करो !

[सच्चिदानन्द सरस्वती का अपने
शिष्यों के साथ आना।]

ज्ञानचन्द:—आइये, कहिए क्या आज्ञा है ?

सच्चिदानन्द:—मैं आपकी संस्था की सेवा के लिए अपने सब शिष्यों
को देना चाहता हूँ, जो हरएक प्रकार का सेवा-कार्य निःशुल्क
करेंगे और भोजन भी हमारे मठ में ही करेंगे !

ज्ञानचन्द:—अच्छी बात है। आप लोग अन्दर जाकर अपना नाम
लिखा दीजिए और कल पधारिये, तो आप लोगों के योग्य सेवा-
कार्य सौंपा जाय।

सच्चिदानन्दः—मैं आपके भिखारी-सुधारक-समिति का निरीक्षण करना चाहता हूँ।

ज्ञानचन्दः—शौक से कीजिए!

[नर्सों का गुमानीलाल को स्ट्रेचर पर लेकर आना। गुमानीलाल का कराहना। एक पैर टूट करके झूल रहा है। कटे हुए मांस से रुधिर निकल रहा है।]

ज्ञानचन्दः—हैं! ये तो गुमानीलाल मालूम होता है! बेटा गुमानी-लाल! तेरा सारा गुमान मिट्टी में मिल गया। निरीह, निहत्थे, और निराश्रितों की दर्द भरी आहें, व्यर्थ नहीं जातीं। ईश्वर ने तुमको उचित दण्ड दिया। तेरी टाँग ही तोड़ दी अब लँगड़ा बन कर रहो हा-हा-हा-हा—

गुमानीलालः—रुको नर्स! तुम ठीक कहते हो भाई! मुझ पातकी, नीच, नराधम को इससे भी भयंकर दण्ड मिलना चाहिए!

सच्चिदानन्दः—ये कौन है? आप क्यों हँसे?

ज्ञानचन्दः—महात्माजी! इसमें बहुत बड़ा राज है! बाद में मैं आपको बतलाऊँगा। पहले आपको संस्था का निरीक्षण तो करा दूँ।

सच्चिदानन्दः—अच्छी बात है!

ज्ञानचन्दः—ये देखिए! प्रवेश द्वार है!! यहीं से सब जगह जाने का मार्ग है। ये देखिए! ये विशाल फाटक चिकित्सालय में जाने का है। वो सामने जो बिल्डिंग लम्बी-चौड़ी दिखाई पड़ती है, उसमें रोगी रहते हैं, उनको औषधि निःशुल्क प्रदान की जाती है और उनके भोजन की भी व्यवस्था है! ये फाटक महाविद्यालय में जाने का है, जिसमें छब्बीस भाषाओं की ट्रेनिंग भिखारियों को

दी जाती है, वे शिक्षित होकर साक्षरता प्रचार में योग देते हैं ! ये देखिए शिल्प-गृह का रास्ता है, जहाँ पर नाना प्रकार की कलाएँ सिखाई जाती हैं, उसकी अध्यक्षा सुश्री मायादेवी हैं। रँगाई का काम जहाँ एक सौ इक्कीस रँगों का प्रयोग होता है, हर्षचन्द भिखारी के देख-रेख में होता है। छपाई जहाँ पर नाना प्रकार की भाषाओं का प्रेस है, उसके अध्यक्ष पुजारी जी हैं। बुनाई के अध्यक्ष मिस्टर डी० एम० पटेल हैं। कृषि की देखरेख कुशल अमेरिकन प्रोफेसर लांग द्वारा होती है। कताई की देखरेख मैं करता हूँ, मुझसे ट्रेनिंग लेकर फिर वे लोग सिखानेके लिए भेजे जाते हैं। लिखा-पढ़ी की इन्चार्ज कुमारी हीरामणी हैं, जो सम्पूर्ण कागजी कार्यवाही की देखरेख करती हैं। मेरा शुभ नाम ज्ञानचन्द-जी है और लोग हरएक विभाग की पूछताछ मुझसे ही करते हैं तथा भिखारी-सुधारक-समिति के इन्चार्ज सेठ हीराचन्दजी हैं !

सच्चिदानन्दः—आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। कष्ट के लिए क्षमा करना। मैं जाता हूँ।

ज्ञानचन्दः—नमस्कार !

[सच्चिदानन्द सरस्वती का जाना। ज्ञानचन्द का बैठना।]

मायाः—मास्टर जी !

ज्ञानचन्दः—[नखरे से] क्या है ?

मायाः—[प्यार से] जरा यहाँ आइये !

ज्ञानचन्दः—लीजिए, आ गया !

मायाः—मेरा सूत कातने में टूट जाता है, बार-बार ऐसा क्यों होता है ? आप अच्छी तरह सिखाते नहीं हैं ?

ज्ञानचन्दः—[झुँझलाकर] ओहो ! आप अच्छी तरह समझती नहीं हैं ! सचमुच बात तो यह है कि आप सूत कातती हुई नज़र लड़ाती

हैं; इसलिए सूतमें फेरा ज्यादा लग जाता है और वह टूट जाता है।

माया:—[अँकड़कर] देखिए मास्टर जी ! मुझसे ठठोली न कीजिए, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। मैं कहती हूँ–सुन लीजिए, कान खोल कर सुन लीजिए, मुझसे मज़ाक न कीजिए, नहीं तो अच्छा न होगा।

ज्ञानचन्द:—ऐ है ! जैसे कोई तुम इन्द्र की अप्सरा हो ! खुदा का नूर झड़ता है। तुम्हारी इस मनहूस सूरत पर; तो कोई थूँकेगा भी नहीं!

[सबका हँसना।]

तुम लोग क्यों हँसते हो ? अपना-अपना काम करो !

माया:—[तुनक कर] क्या कहा ? जरा फिर से तो कहिए ?? कल मुझसे कहते थे न ! मायादेवी आप अपनी शादी क्यों नहीं कर लेतीं ? मैंने कहा–आपको क्या तकलीफ होती है, तो आप साहब कहने लगे, हाय ! तुम्हारी इस मस्त जवानी को देखकर तरस आता है कि ये बन्द कलियाँ खिलकर मुर्झा न जायँ ! मैंने कहा–मेरी इस सूरत पर कौन रीझेगा ? तो आप साहब ललचाने लगे !

ज्ञानचन्द:—ऐसा न कहो मायादेवी ! नहीं तो ये लोग क्या समझेंगे ? मेरी सारी प्रतिष्ठा पर पानी फिर जायगा !

मायादेवी:—[रुआब से] तो आप कान पकड़िए और कसम खाइये कि आज से किसी लड़की से छेड़छाड़ नहीं करूँगा।

ज्ञानचन्द:—[गुस्साकर] मैं सबके सामने कान नहीं पकड़ूँगा !

मायादेवी:—तो मैं रणवीर बाबू के पास जाती हूँ।

ज्ञानचन्द:—ऐसा गजब न ढाओ देवीजी ? भगवान के लिए दया करो अब मैं कसम खाता हूँ कि तुमसे कभी नहीं छेड़खानी करूँगा!

मायादेवी:—सिर्फ मुझसे ही नहीं, किसी भी लड़की से नहीं ! समझे !

ज्ञानचन्द:—समझ गया ! सब कुछ समझ गया !! मेरी ही भूल है,

जो तुमको यहाँ भर्ती करा दिया, नहीं तो गली-गली भीख माँगती रहतीं।

मायादेवीः—आप भी वो दिन भूल गए, जो फटी कोट पहने दीवानों की तरह गली-गली फिरा करते थे। कौशल्यादेवी का गुण गाइये कि आपको आदमी बना दिया।

ज्ञानचन्दः—बाप रे बाप! हमारी बिल्ली और हमीं से म्याऊँ?

मायादेवीः—ठीक कह रही हूँ वकील साहब!

ज्ञानचन्दः—[रूठकर] क्षमा करो देवी! मैं आपसे कभी नहीं बोलूँगा।

मायादेवीः—मेरी ओर घूर-घूर कर देखिएगा भी नहीं।

ज्ञानचन्दः—ऐ है! देखिएगा भी नहीं! परमात्मा ने आँख दी है, देखने के लिए। कान दिये हैं, सुनने के लिए। मुँह दिये हैं, बोलने के लिए। पैर दिये हैं, चलने के लिए। मैं कहता हूँ—देखूँगा और अवश्य इस सुघड़ सलोने चेहरे को देखूँगा। तुम क्या कर सकती हो?

मायादेवीः—तुम्हारी आँख में टेकुआ घुसेड़ दूँगी।

[ज्ञानचन्द का दोनों आँख बन्द करके जोर-जोर से चिल्लाना।]

ज्ञानचन्दः—फूट गई! फूट गई!! दोनों आँखें मेरी....फूट गई रे मेरी अम्मा!

[ज्ञानचन्द का फूट-फूट कर रोना। सबका इकट्ठा हो जाना। रणवीर का आना]

रणवीरः—ये क्या नाटक हो रहा है? क्या हुआ—वकील साहब!!

ज्ञानचन्दः—फूट गईं! मेरी आँखें फूट गईं रे मेरी अम्मा!! अब मैं कैसे देखूँगा रे मेरी अम्माँ!!!

[ज्ञानचन्द का और जोर-जोर से बिलखना।]

रणवीरः—जाओ, कौशल्यादेवी को बुला लाओ! तुम बैठो जी! क्या भीड़ इकट्ठा कर रक्खी है? मधुकरण जी! ये क्या मामिला है?

मधुकरणः—सर! मैं तो बिजली फिटिंग कर रहा था।—वकील साहब का रोना सुनकर दौड़ा आया।

रणवीरः—क्यों रोने लगे? कैसे आँखें फूट गईं??

मधुकरणः—मायादेवी से बातचीत कर रहे थे और एकाएक रोने लगे!

रणवीरः—क्या हंगामा मचा रक्खा हो? साफ-साफ बोलो!

मायादेवीः—सर! वकील साहब मुझे देखकर आहें भरते हैं और घूर-घूर कर मेरी ओर देखते हैं!

रणवीरः—और तुमने उनकी आँखें फोड़ दीं!

मायादेवीः—पहले मेरी पूरी बात तो सुनिए!

रणवीरः—मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता, चलो बैठो!

मधुकरणः—आ गईं कौशल्यादेवी!

कौशल्याः—क्या हुआ ज्ञानचन्दजी?

ज्ञानचन्दः—मेरी आँखें फूट गईं रे मेरी अम्माँ!

कौशिल्याः—खोलिए तो आँख? देखें कैसी चोट है?

[ज्ञानचन्द जल्दी नहीं खोलता तो कौशल्यादेवी स्वयं खोलती है और देखकर—]

कुछ तो नहीं हुआ! यह क्या ढोंग बना रक्खा है?

ज्ञानचन्दः—[निठुरे मन से] मायादेवी ने कहा कि तुम्हारी आँख में टेकुआ भोंक दूँगा।

कौशल्याः—भोंकने को कही; मगर भोंकी तो नहीं?

ज्ञानचन्दः—[भोले मन से] मैंने समझा भोंक ही दी!

हीराचन्दः—[प्रवेश करके] ये क्या मामिला है?

कौशल्याः—मायादेवी और ज्ञानचन्द का मामिला है!

हीराचन्दः—यहाँ आइये वकील साहब ! यहाँ आओ माया ! [आने पर] क्या गड़बड़ मचा रक्खा है ! तुम लोग स्वयं नहीं सुधरते; तो दूसरों को क्या सुधारोगे ?

ज्ञानचन्दः—कुछ तो नहीं !

मायादेवीः—कुछ तो नहीं ।

मधुकणः—पापाजी ! वकील साहब से और माया की कुछ....!

[मधुकण का मुस्कराना और ज्ञानचन्द का शरमाना ।]

हीराचन्दः—समझ गया ! बिल्कुल समझ गया !! दोनों आदमियों की शरारत है । बड़ा भयानक दण्ड मिलेगा । जाओ माया, जाइये वकील साहब !

ज्ञानचन्दः—[विनीत भाव से] सेठजी क्या दण्ड मिलेगा ?

हीराचन्दः—दोनों के हाथों में हथकड़ी लगाई जायगी और एक ही जेलखाने में रक्खा जायगा ।

ज्ञानचन्दः—[अपने आप] मर गए ! बेटा ज्ञानचन्द मर गए !!

[ज्ञानचन्द धम्मसे पृथ्वी पर गिरता है ।]

मायादेवीः—क्षमा कर दो पापाजी ! भगवान के लिए क्षमा कर दो ! अब मैं कोई ग़लती नहीं करूँगी !

हीरामणीः—पापाजी मुवाफ कर दो न !

हीराचन्दः—नहीं, यहाँ आओ !

[हीराचन्द का कान में कुछ कहना । हीरामणी का मुसकराना ।]

रणवीरः—हमको भी बता दो पापाजी !

हीराचन्दः—नहीं !

कौशल्याः—हमको तो बता दीजिए बापूजी !

कामिनीः—अरे नीलू कहाँ गया ?

हीरामणीः—यहाँ है देवीजी !

[हीराचन्द की गोद में बैठकर बोलता है ।]

नील :—बताओ न पापाजी !

हीराचन्दः—यहाँ आओ माया ! यहाँ आइये वकील साहब !

[ज्ञानचन्द और मायादेवी का डरते-डरते आना ।]

भास्करानन्दः—[प्रवेश करके] हीराचन्दजी !

हीराचन्दः—आइये महात्माजी! इस वक्त आपही की आवश्यकता थी!

भास्करानन्दः—क्या बात है ?

हीराचन्दः—महात्माजी ! थोड़ा मंत्र पढ़ दीजिए, मायादेवी और ज्ञानचन्द का गठबन्धन होने जा रहा है ।

भास्करानन्दः—इन दोनों को उचित दण्ड मिल गया । इनका विवाह तो बड़े धूमधाम से होगा ।

ज्ञानचन्दः—[रुँआसी आवाज में] मैं विवाह नहीं करूँगा !

भास्करानन्द—बेटा ! विवाह-बन्धन ही जीवनको आनन्दमय बनाता है ।

ज्ञानचन्दः—आपका कहना बिल्कुल ठीक है । लेकिन पहले रणवीर बाबू का होना चाहिए, ये ही हमलोगों के प्रधान नेता हैं ।

भास्करानन्दः—ठीक कह रहे हो; लेकिन पहले तुम भी तो करो !

ज्ञानचन्दः—जब आप लोगों ने आशीर्वाद दे दिया, तो हो ही गया । मैं अपने ग्राम में जाकर माता-पिता की देखरेख में करूँगा ।

मायादेवीः—क्या हो गया ?

ज्ञानचन्दः—विवाह,शादी,सगाई,कुड़माई, गठबन्धन,मौज हा-हा-हा····

हीरामणीः—अब तो भइया रोज आँखें लड़ायेंगे भाभाजी !

मायादेवीः—[चमकाकर] हायरे ननदजी !

हीराचन्दः—ज्ञानचन्दजी ने ठीक ही कहा रणवीर का भी विवाह

होना ही चाहिए ! मेरी तो राय है महात्माजी ! रणवीर और कौशल्या का गठबन्धन हो तो कैसा हो ?

[कौशल्यादेवी और रणवीर का शरमाना ।]

भास्करानन्दः—आप जो उचित समझिए कीजिए ।

सब:—ठीक होगा ! ठीक होगा !!

हीराचन्दः—रणवीर तुम आधुनिक युग के युवक हो ! तुम्हारी राय लेना भी आवश्यक है । तुम्हारा क्या विचार है ?

रणवीरः—मेरे माता-पिता से पूछिए ।

हीराचन्दः—ये भी ठीक कह रहे हो ।

ज्ञानचन्द—झाबरमलजी इन दोनों बच्चों को घर से निकाल दिये हैं, वे फिर मानेंगे !

हीराचन्दः—समय सब कुछ मना देता है ज्ञानचन्दजी ! देखो गुमानीलाल सीधा हो गया ! उसी तरह झाबरमल भी सीधे हो गए हैं । समस्त सम्पत्ति का नाश हो गया, एक टूटा हुआ मकान रह गया है, जो हीरामणी के नाम से है; नहीं तो वह भी निलाम हो जाता अब न अनमोल लड़के-लड़की को न अपनायेंगे, तो क्या झख मारेंगे ?

ज्ञानचन्दः—एक बार अपमान पाने पर भी; फिर उनके घर जायँगे !

हीराचन्दः—कीचड़ में गिरने वाला सोना भी सोना ही है, उसकी कीमत नहीं घट जाती, उनके अपमान करने से मेरी प्रतिष्ठा पर कोई आँच नहीं आता । हाँ, महात्माजी ! आपके अचानक पधारने का कारण ?

भास्करानन्दः—मैं आप लोगों का अन्तिम दर्शन करने आया हूँ !

ज्ञानचन्दः—महात्माजी ! ये आप क्या कह रहे हैं ?

भास्करानन्दः—बच्चा, मैं अब आगामी अनन्त चतुर्दशी को समाधि ले लूँगा !

ज्ञानचन्दः—यह पवित्र कार्य कैसे होगा ?

भास्करानन्दः—अब इसकी कोई विशेष चिन्ता नहीं ! स्वयंसेवक, स्वयंसेविकाएँ, सामाजिक,राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक संस्थायें एवं राज्य द्वारा भिखारियों के सुधारने की पूरी-पूरी कोशिश की जा रही है। अधिकांश भिखारियों,मौवालियों, भूले भटके साधुओं, मदारियों, कंजड़ों, शरणार्थियों आदि की स्थिति में प्रचुर मात्रा में सुधार हो रहा है, कुछ अंशों में सुधार हो भी गया है, इसी तरह जनता के सहयोग से देश की संस्थायें इस पावन कार्य में हाथ बँटाती रहीं, तो देश की सबसे बड़ी समस्या का समाधान हो जायगा। निःस्वार्थ भाव से "बेचारे भिखारियों" की संकटापन्न स्थिति को दूर करने की कोशिश करते रहे, तो शीघ्र ही भारत-भूमि की भिखमंगी प्रथा का अन्त हो जायगा और भिखारी दर्शन करने को भी नहीं मिलेंगे !

जो लूले लँगड़े हैं, उनके लिए हरएक बड़े-बड़े नगरों और गाँवों में भवन बनवाया जाय, जिसमें सब लोग सहयोग दें। वहाँ पर लूले, लँगड़े, अंधे,काने, कोढ़ी आदि के रहने, खाने-पीने और दवा आदि का पूरा-पूरा प्रबन्ध किया जाय। रणवीर, कौशल्या, माया, रेखा, नगेन्द्र, मधुकण और ज्ञानचन्द ऐसे समाज-सेवी तथा सेठ हीराचन्द ऐसे धनी-मानी त्यागी नेताओं ने अवर्णनीय सेवाएँ की है और मुझे आशा है कि जीवन पर्यन्त तक करते रहेंगे !

हीरामणीः—महात्माजी ! मैं जा रही हूँ नमस्कार ! समाधि के दिन अवश्य दर्शन करूँगी !

[हीरामणी का जाना।]

हीराचन्दः—भगवन् ! मैं अपने विभाग में जा रहा हूँ। वहाँ आप अवश्य पधारिये, विशेष विचार-विनिमय होगा !

भास्करानन्दः—अच्छा चलिए मैं अभी आता हूँ। रणवीर और कौशल्या तुम दोनों से आवश्यक बातें करनी हैं।

रणवीरः—भगवन्! कीजिए शौक से कीजिए!

कौशल्याः—क्या आज्ञा है महात्माजी?

भास्करानन्दः—महात्माजी नहीं पिताजी कहो!

कौशल्याः—पिताजी! पिताजी!! पिताजी!!!

[कौशल्यादेवी भास्करानन्द का पैर पकड़कर रोती हैं।]

भास्करानन्दः—ये रोने-धोने का समय नहीं है; हँसने का समय है और तुम पढ़ी लिखी होकर; नासमझी का काम कर रही हो बेटी!

रणवीरः—आप कौशल्यादेवी के पिताजी हैं! वो तो कहती थीं कि आपका पता ही नहीं कि आप कहाँ चले गए?

भास्करानन्दः—अपनी सन्तान का प्रेम किसे नहीं सताता बेटा! मेरी उत्साही बच्ची देश के लिए कितना त्याग करे। ये कम गौरव की बात नहीं। मैं सन्यासी होते हुए भी; साया की तरह उसके पीछे-पीछे लगा रहा—कि मेरी बच्ची को कोई भी कष्ट न हो!

रणवीरः—क्या आज्ञा है स्वामी जी!

भास्करानन्दः—बेटा! मैं एक गरीब ब्राह्मण था! मेरे जीवन में ज्योति जगाने के लिए ईश्वर की असीम कृपा से सिर्फ कौशल्या ही रह गई! मैं उसकी एक-एक बाल-क्रीड़ाओं को देखकर; सभी विघ्न-बाधाओं को झेलता रहा। एक दिन मेरा आशीर्वाद लेकर यह घरसे चल पड़ी और जवानी के उन्माद में आकर इसने श्री लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में तुम्हें पाने के लिए प्रार्थना करती रही और इसने निश्चय किया कि तुमको अपना जीवन साथी बनाऊँगी।

रणवीरः—आप ये क्या कह रहे हैं स्वामी जी!

भास्करानन्दः—मैं ठीक कह रहा हूँ बेटा! मैं इसका विवाह तुम्हारे ही

साथ करना चाहता हूँ, इसकी माता की इच्छा अधूरी ही रह गई लेकिन........।

रणवीरः—लेकिन क्या ?

भास्करानन्दः—यह जिद्दी लड़की अपने निश्चय से नहीं पलट सकती ! तुम्हारी क्या राय है बेटा !

रणवीरः—जैसा आप उचित समझें !

कौशल्याः—पिताजी....!

भास्करानन्दः—मैं कुछ सुनना नहीं चाहता ! देखो रणवीर और कौशल्या ! आज का समाज छूआछूत, जात-पाँत, ऊँच-नीच और अन्ध-विश्वास से घृणा करने लगा है; अगर तुम लोग अन्तर्जातीय विवाह कर लोगे, तो तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता तथा समाज और देश के लिए एक नमूना बन जाओगे; फिर भी समाज में रहना है, उससे बैर करना ठीक नहीं ! हीराचन्दजी ने कौशल्या को धर्म-पुत्री बना लिया है ! वह भी तुम्हीं से शादी करना चाहते हैं। तुम दोनों साथ-साथ विद्याध्ययन किए अब ध्यान से सुनो ! किसी को न मालूम होने पाये कि कौशल्या हीराचन्दजी की नहीं पं० भास्करानन्द की पुत्री है–तुम लोग स्वीकार करते हो !

[कौशल्यादेवी और रणवीर दोनों मस्तक झुका लेते हैं।]

अच्छा मैं जाता हूँ, तुम दोनों समाधि के समय विवाह-बन्धन से युक्त आना तब मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी....।

[भास्करानन्द का वेग से जाना। रणवीर और कौशल्यादेवी का महात्मा-जी एवं पिताजी कहते जाना।]

——×——×——

[घण्टी का बजना। सब आदमियों का जाना और मायादेवी जाने लगती है तो ज्ञानचन्द पकड़ता है।]

ज्ञानचन्दः—ओहो ! कहाँ जा रही हो ?

मायादेवीः—अब आपको छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ प्राणनाथ ?

ज्ञानचन्दः—मायादेवी ! मेरे ऊपर माया का जाल न बिछाओ !

मायादेवीः—मैं आपके ऊपर माया का जाल नहीं बिछा रही हूँ प्रियतम ! मेरी आत्मा की ये सुमधुर आवाज है। मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ प्यारे !

ज्ञानचन्दः—प्यारी ! तभी तो मेरी आँख में टेकुआ घुसेड़ रही थीं !

मायादेवीः—ओ तो मैं आपसे मजाक कर रही थी। स्वामी ! अब तो आप मेरे हो गए, मैं तुम्हारी आरती उतारूँगी। चरण दबाऊँगी। भोजन पकाऊँगी। खिलाऊँगी। तन, मन, धन, से तुम्हारी सेवा करूँगी। तुम एक बँगला बनवाना उसमें हम दोनों रहेंगे ! लड़का पैदा होगा, तो उसका नाम रूपचन्द ! और लड़की हुई तो उसका नाम रूपकुमारी रखूँगी। और···और···कुछ नहीं···और···प्रियतम !···खिड़की से झाँक-झाँककर पुकारूँगी ! ऐ रूपचन्द के बाबूजी ! भोजन जीम लो ! ऐ रूपकुमारी के पिताजी चाय पीलो!

[भावनाओं में मायादेवी का खो जाना।]

ज्ञानचन्दः—सोओ झोपड़ी में और स्वप्न देखो महल का ! भूल जाओ ! भूल जाओ !! मायादेवी इस सपने के संसार में चहकना भूल जाओ ! अब आपका जादू मेरे ऊपर न चलेगा !

मायादेवीः—[क्रोधित होकर] अभी तो आपही ने कहा कि तुमसे शादी करूँगा !

ज्ञानचन्दः—[दाँत निपोरते हुए] मैं तो हँसी कर रहा था !

मायादेवीः—[रोती हुई] ऐसी हँसी न करो प्राणेश्वर ! नहीं तो

मेरी क्या दशा होगी ?

ज्ञानचन्द:—जाओ भोजन करो, मुझे कचहरी जाना है। माथा-पच्ची करना ठीक नहीं।

माय देवी:—न्याय के ठेकेदार ! पहले इसका न्याय करते जाओ ! कि एक कुँवारी लड़की से शादी करने का मज़ाक क्यों किया ?

[मायादेवी नखरे भरे क्रोध से कहती है।]

मैं भी आपके पीछे-पीछे कचहरी चलती हूँ ?

ज्ञानचन्द:—[सिर खुजलाता हुआ] क्या करने ?

मायादेवी:—एक भोली-भाली निर्दोष बालिका के कोमल दिल की चोरी करने वाले डाकू को सजा दिलवाने और उसपर मुकदमा दायर करने !

ज्ञानचन्द:—[हाथ जोड़ते हुए] ऐसा जुलुम न करो मायादेवी ! नहीं तो मेरे सारे मुवक्किल भड़क जायेंगे !

मायादेवी:—मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती !

ज्ञानचन्द:—मान जाओ न मेरी छम्मो !

मायादेवी:—तो मान जाओ न मेरे होने वाले बालम....!

ज्ञानचन्द:—क्या कहा ?

मायादेवी:—यही कहा कि आप मेरे साथ शादी करेंगे या नहीं--एश आर नाट।

ज्ञानचन्द:—बाबा रे बाबा ! ये नारी है या दुर्गा !

मायादेवी:—जल्दी बोलो ! वन्, टू, थ्री—

ज्ञानचन्द:—अच्छा जी ! तो मैं आपकी शर्तों को स्वीकार करता हूँ; मगर बाद में मुझे तंग न करना, हाँ !

मायादेवी:—कभी ऐसा भी हो सकता है, प्राणनाथ !

ज्ञानचन्द:—सच।

[मायादेवी अठखेलियाँ करती हुई अँगड़ाई लेती है और ज्ञानचन्द गाना प्रारम्भ करता है।]

[ज्ञानचन्द और माया का गीत]

नरः— आजकल मैदान में बाजी हैं लेती बीबियाँ।
आजाद करके नारियों की, देख लो ये खूबियाँ॥
नारीः—मर्द जब उल्लू बने बाजी न क्यूँ लें बीबियाँ।
तुम तो फिरते हो निरर्थक तोड़ते हो जूतियाँ॥
नरः— पहनकर कुर्त्ता पायजामा आफिसों में जायें वो।
साड़ी ब्लाऊज़ को पहन हमने पहन ली चूड़ियाँ॥
नारीः—मर्द हैं ऐसे निखट्टू काम कुछ करते नहीं।
आफिसों में गर न जायें, तो करें क्या फाँकियाँ॥
नरः— जब रहें आफिस में वो, बच्चा खिलाये जायें हम!
तल के रक्खें साग भाजी, औ करारी पूरियाँ॥
नारीः—काम कुछ आता नहीं, बच्चा खिलायेंगे न क्यूँ!
पानी भी भर ना सको, क्यूँ न तलोगे पूरियाँ॥
नरः— कुछ न अपने पास रहता, बन्द करके जाती हैं वो।
साथ ही अपने वहाँ ले जाती हैं चाभियाँ॥
नारीः—चाभियाँ गर छोड़ दूँ, तो घर लुटा दो तुम यहाँ!
दोस्तों को ही, पिला दो सारी काफियाँ॥
नरः— आयें जब आफिस से वो गरमा गरम दें चाय हम!
वरना अपने राम को पड़ने लगेगी जूतियाँ॥

—"जोशी निर्मल"

[मायादेवी ज्ञानचन्द को मारने को दौड़ाती है वह भागता है।]

—: पट परिवर्तन :—

———×———×———

*—+-+— * —+-+— * —+ * —+ * —+-+—*
*अंक तृतीय दृश्य तीसरा *
*—+-+— * —+-+— * —+ * —+ * —+-+—*

[झाबरमल का टूटा-फूटा मकान। रात्रि का समय। झाबरमल चिन्ताओं से घबड़ाकर बड़बड़ाता हुआ टहल रहा है।]

झाबरमल:—देख! देख!! अपनी करणी का फल सेठ झाबरमल देख!!! मकान जलकर राख हो गया। घर में डाका पड़ गया। गिरवी सामान चोरी चल गए, उनके भुगतान में मेरे बाकी सामान बिक गए। बैंक के रुपये जूए में हार गया। मिल पर सरकार ने अधिकार कर लिया अब एक ही टूटा-फूटा मकान रह गया—आमदनी का कोई भी साधन न रहा। शर्म से मकान के बाहर भी नहीं निकलता! कुढ़-कुढ़ कर घर में ही मर रहा हूँ। अरे! अपनी ही लगाई हुई आग से आप ही जल रहा हूँ। धन-धाम ऐश्वर्य के मिथ्याभिमान में आकर न मालूम कितने निर्दोषों को सताया। भोली-भाली अबलाओं का पातिव्रत धर्म भ्रष्ट किया। वेश्यागमन और नशाखोरी की। कितनों को धोखा दिया! पुत्र और पुत्री को घर से निकाल दिया अब उनसे किस मुख से बातें करूँगा? प्रिय भारत-भूमि से गद्दारी की; अगर आज उतने ही पैसे पवित्र कामों में लगाया होता, तो मेरे नाम का डंका बज उठता; लेकिन काला बाजार करने वाले का मुँह काला हो गया! लालची झाबरमल तूने धन भी गँवाया और धरम भी!! अरे अब ईश्वर के घर में क्या जवाब देगा?

[माथा पीटता है।]

देखो! देखो!! 'पवित्र भारत-भूमि में बसने वाले हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई और पारसी भाइयों! आँखें खोलकर देखो, बुरे कर्मों का बुरा परिणाम होता है!!

[झाबरमल पागलपन में रोता है।]

सरलादेवी:—आपको क्या हो गया, जो रात-दिन रोते-रोते कटा देते हैं।

झाबरमल:—कुछ नहीं! कुछ नहीं!!

सरलादेवी:—क्यों सिर पीटकर रो रहे हैं? जो हम लोगों के भाग्य में था वह होकर ही रहा। होनहार को कौन मिटा सकता है स्वामीजी?

झाबरमल:—तुम ठीक कहती हो; लेकिन भाग्य का श्रीगणेश अपने ही हाथों होता है।

खुशहाल:—[आकर] सरकार आप सच बोलत हऊआ!

झाबरमल:—यही कि हमारी दशा ठीक नहीं है अब मैं तुम्हारा वेतन भी नहीं दे सकता। तुम्हारे सब सामान भी मेरे मकान में जलकर राख हो गए। भाई खुशहाल! तुम कोई नौकरी ढूँढ़ लो और मेरे यहाँ जो भी रूखा-सूखा मिले खाया करो।

खुशहाल:—सरकार! हम आपके छोड़के नइखैं जाइब! आपही लोगन की सेवा में हमार उमर बीत गइल। अऊर आपही लोगन की सेवा में मुकती भी हो जाई, ऐसे ही समय में मित्र आऊर शत्रू की पहचान होले सरकार! हम आपन प्राण रहते ई दरवाजे से बाहर नइखै जइबय!!

सरलादेवी:—इसको कहते हैं स्वामी भक्त नौकर! खुशहाल तुम यहीं रहो, जाने की कोई आवश्यकता नहीं?

झाबरमल:—आजकल रणवीर और हीरामणी नहीं दिखलाई पड़ते!

खुशहाल:—ऊ लोगन! आजकल जहवाँ भिखारी रहैंले उहवँय रहैलैं!

झाबरमल:—पुत्र-पुत्री भिखारी हो गए और अब उनका बाप भी कंगाल हो गया हा-हा-हा-हा····

सरलादेवी:—[समझाती हुई] नाथ! आप क्यों हँस रहे हैं? अधिक हँसने से पागल हो जायँगे!

झाबरमलः—पागल होने में अब कोई कसर नहीं रह गयी है हीरामणी की माँ ! सब कुछ लुट जाने पर; मनुष्य पागल हो ही जाता है···· देखो कौन दरवाजा खटखटा रहा है ?

खुशहालः—अबहीं गइली सरकार !

सरलादेवीः—हीरामणी और रणवीर को एक बार फिर तो देखो कई वर्ष होगए; लेकिन अभी तक उन लोगों का कुछ पता नहीं चला।

झाबरमलः—उसी की काली करतूतों के कारण रंग में भंग हो गया, मेरा बना बनाया महल उजड़ गया वह लड़का नहीं बैरी है।

सरलादेवीः—फिर भी वह हमीं लोगों का अंश है।

झाबरमलः—[ताने से] हाँ–हाँ अपना अंश है, अपने पास रक्खो मना ही कौन करता है ? तावीज़ बनाकर गले में लटका लो।

[हीराचन्द का प्रवेश।]

हीराचन्दः—राम राम झाबरमलजी !

झाबरमलः—पधारिए हीराचन्दजी ! एक बार तो घर में आग लगवा दिये अब इस घर को भी उजड़वाना चाहते हैं ?

हीराचन्दः—मैं घर को उजड़वाने के लिए नहीं; घर को बसाने के लिए आया हूँ।

झाबरमलः—हा-हा-हा····बसाने के लिए आये हैं अब क्या बसेगा हीराचन्दजी ? मैं तो राँची के पागलखाने में जाने वाला हूँ।

सरलादेवीः—बैठिए सेठजी ! खुशहाल, जाओ, जल-खावा लाओ !

हीराचन्दः—कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं ! मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ !

सरलादेवीः—कीजिए, कीजिए, शौक से कीजिए !

हीराचन्दः—आपके साथ में अपना रिश्ता जोड़ना चाहता हूँ !

सरलादेवीः—रिश्ता ?

हीराचन्दः—हाँ, हाँ, अपनी लड़की की शादी रणवीर के साथ करना चाहता हूँ।

सरलादेवीः—[आश्चर्य से] आपकी लड़की ?

हीराचन्दः—नहीं, नहीं, मेरे तो कोई लड़की नहीं; लेकिन एक गरीब ब्राह्मण की धरोहर है और उसे मैंने अपनी धर्म-पुत्री बनाया है।

सरलादेवीः ब्राह्मण की लड़की !

हीराचन्दः—हाँ, हाँ, ब्राह्मण की लड़की; लेकिन हीरामणी की माँ! आपको मालूम होना चाहिए कि समाज से जात-पाँत का भेद-भाव उठ रहा है ! हम समाज-सेवी ही इस प्रथा को नहीं अपनायेंगे, तो हमारे अनुयायियों का क्या हाल होगा ? वे दोनों भी एक दूसरे से····!

गुमानीलालः—[आकर] एक दूसरे से क्या ?

हीराचन्दः—प्रेम करते हैं !

"जात पात पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई ॥"

गुमानीलालः—ठीक कहते हैं हीराचन्दजी ! बहुत ठीक है बहन! जात-पात और चूल्हा धर्म के कारण ही भारतवर्ष की ये दुर्दशा हुई ! एक दूसरे से घनिष्ठता लाने के लिए अन्तर्जातीय विवाह ही एक प्रमुख मार्ग है। बहन ! वह लड़की नहीं लक्ष्मी है लक्ष्मी ! उसका घर में कदम आते ही घर में पुनः लक्ष्मी का वास हो जायगा। चारों ओर से खुशी का समुद्र लहराता हुआ दृष्टिगोचर होगा।

झाबरमलः—ठीक कहा साले साहब ! विवाह बन्धन ही एक ऐसा सुनहला कैदखाना है, जिससे आवारा से आवारा लड़के की आवारापंथी छूट जाती है। मैं विवाह पक्का करता हूँ, हीराचन्द-जी ! अभी भी मैं उसके शादी में हजारों रुपये खर्च कर सकता हूँ अब जात-पात, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के पचड़े में पड़कर व्यर्थ

का वितंडावाद न मोल लूँगा। मैं अपने बेटे रणवीर का विवाह आपकी धरोहर पुत्री के साथ ही करूँगा, अगर सजातीय भाई कोई भी अड़ंगा करेंगे, तो मैं उनका डटकर सामना करूँगा और जमाने को दिखा दूँगा कि बिगड़ा हुआ सेठ भी सुधरने पर कितना बड़ा त्याग कर सकता है ! सुनिए सेठ हीराचन्दजी, आप आज के शुभ दिन से मेरे समधी हो गए ! मेरे पुराने काले कारनामों को क्षमा कर दीजिए। मेरी पुत्री हीरामणी की शादी भी किसी गरीब एवं योग्य युवक के साथ करा दीजिए। इस विवाह-बन्धन से अमीर-गरीब का भेद-भाव मिट जायगा। मैं आपकी पुत्री से अपने पुत्र की शादी पक्का करता हूँ।

हीराचन्दः—पक्का !

झाबरमलः—पक्का !

[हीराचन्द और झाबरमल अट्टहास करते हैं।]

हीरामणीः—[आकर] माँ !

सरलादेवीः—बेटी !

[सरलादेवी और हीरामणी के प्रेमाश्रु आ जाते हैं और एक दूसरे से लिपट जाती है।]

रणवीरः—[आकर] पिताजी !

झाबरमलः—बेटा !

[रणवीर और झाबरमल प्रेम से गद्गद् हो लिपट जाते हैं।]

गुमानीलालः—चलिए मुँह मीठा करिए समधी जी !

—: ट्रेवले पर पट परिवर्तन :—

———×———×———

अंक तृतीय दृश्य चौथा

[अंतिम विशाल सेट—पीछे ट्रिक सीन]

[झाबरमल का टूटा हुआ मकान। उसके प्रांगण में शादी मण्डप। पंडितजी को घेरे हुए स्त्री पुरुष बैठे हैं। बीच में रणवीर,कौशल्या-देवी,मधुकण,हीरामणी विवाह-बन्धनों में बँधने के लिए बैठे हैं। एक ओर से झाबरमल दूसरी ओर से हीराचन्द का बाजा-गाजा के साथ मूँछों पर ताव देते हुए बारातियों के साथ प्रवेश। कम्पनी के सम्पूर्ण कलाकारों का इसमें एकत्रित रहना। म्यूजिक का वेग से बजना। दृश्य प्रारम्भ। समय सायंकाल।]

झाबरमलः—[आकर] आइये, सेठजी आइये ! जय श्री गणेशजी !!

हीराचन्दः—[आते ही] जै गणेशजी !

[दोनों का प्रेम से गले मिलना तथा बारातियों का एक दूसरे के गले मिलना।]

झाबरमलः—पहले भोजन होगा या नाच-रंग।

गुमानीलालः—जीजाजी ! अब तो नाच-रंग से बिल्कुल हम लोग सन्यास ले ही लिए; लेकिन कम से कम विवाह आदि में तो मनोरंजन होना ही चाहिए।

झाबरमलः—साले साहब ! आपके प्रेम और झूठे ठाट-बाट की सलाह से ही इतना बड़ा पचड़ा खड़ा हुआ अब भगवान के लिए ऐसी सलाह न दो।

हीराचन्दः—सेठजी ! आज इनकी खुशी के लिए, इनकी बातों को अवहेलना न कीजिए !

सच्चिदानन्दः—हाँ, हाँ, सेठजी⋯इनको आज भर का और मौका दीजिए !

झाबरमलः—जब आप लोगों की ऐसी ही राय है, तो मुझे कोई भी आपत्ति नहीं !

गुमानीलालः—जीजाजी ! मैं आपके नखरेको अच्छी तरह समझता हूँ !

[गुमानीलाल का वेग से जाना । सबका खुलकर हँसना ।]

हीराचन्दः—क्यों रमजान अली ! क्या समाचार है ?

रमजान अलीः—अच्छा ही है सेठ साहब !

हीराचन्दः—ये तुम्हारे साथ में कौन है ?

रमजान अलीः—मेरी धर्मपत्नी मनोरमादेवी !

हीराचन्दः—[आश्चर्य से] मनोरमादेवी !

रमजान अलीः—जी हाँ ! स्वामी सच्चिदानन्द महाराज की कृपा से मैं अपने पुराने कुकर्मों को छोड़कर अब समाज की सेवा करता हूँ ! मेरा नाम विजयसिंह और नरगिस का नाम मनोरमादेवी है । यह स्वामी सच्चिदानन्द महाराज की कृपा का परिणाम है । विवाह का सब खर्च भी इन्होंने ही दिया और आर्य-धर्म में दिक्षित भी कर लिया ।

हीराचन्दः—आज आपने बड़ी खुशी की बात सुनाई । श्री मंगलसिंह-जी ये आपके साथ में कौन है ?

मंगलसिंहः—मिस मिण्टो बाई ! मेरी धर्मपत्नीजी !

हीराचन्दः—[विह्वल होकर] आज मैं कितना प्रसन्न हो रहा हूँ, जिसका वर्णन नहीं कर सकता !

झाबरमलः—सब लोग आ गए; मगर ज्ञानचन्द का कोई पता नहीं, तार गया फिर भी कोई समाचार नहीं आया ?

ज्ञानचन्दः—राम राम भाइयो ! मैं आ गया !! ये मेरे पीछे-पीछे कौन है ? मैंने मना किया; लेकिन मेरे पीछे चली आई।

[मायादेवी एक थपकी ज्ञानचन्द को लगाती है वह नखरे दिखाता है।]

मायादेवीः—मुझे डर है कि आप फिर पागल न हो जायँ !

[सबका हँसना ।]

झाबरमलः—साले साहब !

गुमानीलालः—[गुमानीलाल अन्दर से ।] आया जीजाजी !

झाबरमलः—जब सब मेहमान चले जायँगे तब आपका प्रोग्राम शुरू होगा !

गुमानीलालः—अभी नर्त्तक सज रहे हैं, जीजाजी बेटे की शादी है तब तक आपही नाचिए !

[सबका हँसना ।]

पंडितजीः—सेठजी मुहूर्त टला जा रहा है ! आप लोग अब इधर आइये !

हीराचन्दः—अच्छा उधर शादी होने दीजिए और इधर नाच-रंग !

सच्चिदानन्दः—ठीक तो है ! दोनों काम साथ-साथ होना चाहिए !

[उधर वेदध्वनि पर विवाह का होना। इधर नाच होना।]

——×——×——

[जब दुल्हिन आकर नृत्य करती है तब दूल्हा देखता है और बाद में नाचता है।]

[दुल्हा-दुल्हिन का गीत]

दुल्हा:—

गोरे गोरे गोड़वा में रुनझुन पयलिया,
मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !

दुल्हिन:—

ज़ालिम सँवरिया की जुल्मी नजरिया,
मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !

दुल्हा:—

रुनझुन पयलिया बजावे सिकड़िया !
जैसे कोई दिल की खुलावे किवड़िया !!
मारे मोरे दिलवा पै हन-हन नज़रिया ।
मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !

दुल्हिन:—

फँस-फँस के मोरा जिया, पिया को बुलावे !
हँस-हँस सतावे पिया, पास न आवै ॥
खोले खोले सुरवा बजावे बँसुरिया !
मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !

दुल्हा:—

पतली कमर पे दे हथवा हिलावे ।
मदन के झूले पे मोहें झुलावे ॥

दुल्हिन:—

रह-रह कलेजवा पै चलती कटरिया !
मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !

दुल्हा:— *गोरे-गोरे गोड़वा पै रुनझुन पयलिया !*

दोनों:— *मारे जिया, मारे जिया, मारे जिया, हाय राम !*

—**"अनजान"**

——×——×——

[दुल्हा-दुल्हिन का गाते हुए जाना और सबका अत्यन्त प्रसन्नता से विह्वल होकर गाना और नाचना ।]

[विजय गीत]

नाचो नाचो गाओ आओ खुशियाँ मनाओ रे !
डगर-डगर खुशियों के दीपक जलाओ रे !!
मिट गया जो घिरा चारों ओर अन्धकार था !
आज वो दिन आया जिसका हमको इन्तजार था !!
आज झूम झूम सुख की बाँसुरी बजाओ रे !
नाचो नाचो, गाओ आओ खुशियाँ मनाओ रे !!
नई किरण खिली वो नया सबेरा आ रहा !
दुनियाँ से दुखों का डेरा उठा जा रहा !!
आज नई जिन्दगी को गले लगाओ रे !
डगर-डगर खुशियों के दीपक जलाओ रे !!
किस्मत बदल दो अब न कोई बदनसीब हो !
अब न जुल्म सहने के लिए कोई गरीब हो !!
उठो चलो आज नई दुनियाँ बसाओ रे !
नाचो नाचो, गाओ आओ खुशियाँ मनाओ रे !!
संग-संग मिल के आज खुशियों के गीत गा !
आपस में रह न सके भेद ऊँच-नीच का !!
एक साथ मिल कोई नया कदम उठाओ रे !
नाचो नाचो, गाओ, आओ खुशियाँ मनाओ रे !!

—"अनजान"

——×——×——

[म्यूजिक का फुल स्पीट में वेग से
बजते रहना । लाइट आफ]

[सीटी]

[पर्दा सेटरों का सभी सामान आगामी सीन का घसकाना । पीछे
पहाड़ के टीले पर समाधि-स्थल पर—लोगों का एकत्रित होना ।
बीच में भास्करानन्द फूलों के हारों से सुशोभित हैं ।
सैकड़ों व्यक्ति घेरे हुए हैं ।]

—: चकरी :—

[शादी मण्डप गायब और दूसरा सेट ।]

भास्करानन्दः—भाइयो ! बहनो !! माताओं और मित्रों !!! आज मैं अत्यन्त प्रसन्नता के साथ इस मृत्युलोक से विदा हो रहा हूँ। आप लोग मेरे अवगुणों को ठोकर मारना ! सद्‌गुणों को अगर उचित समझना तो अपनाना । मैं आपलोगों को अन्तिम वसीयत दिये जा रहा हूँ ! मेरे पास कोई चल-अचल सम्पत्ति नहीं है । मेरे पास है मेरे जीवन का अनुभव ! वही आप लोगों को दिये जा रहा हूँ !

प्यारे भारत-भूमि पर बसनेवाले स्वतन्त्र नागरिकों ! अगर आप लोग मेरी बताई हुई पाँच वस्तुओं को ध्यान में रक्खेंगे तो तुम्हारा कोई बाल बाँका न कर सकेगा !

(१) किसी की चोरी न करना !

(२) दूसरे की माँ-बहन को अपना समझना !!

(३) परायी वस्तु को मिट्टी के समान समझना !

(४) नशाखोरी एवं व्यभिचार न करना !

(५) निःस्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य-पथ पर बढ़ते रहना; एक न-एक दिन सफलता मिलकर ही रहेगी !

वन्देमातरम् !

भास्करानन्द को समाधि में जाना ।
सबका वन्देमातरम् के नारे से
आकाश गूँजा देना ।

—ः ड्राप-लाइट गुल ः—

भारत माता का तिरंगे के साथ
प्रगट होना ।

(सीटी)

सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुम-दल-शोभनीम् ॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्

सुखदाम् वरदाम् मातरम् ।

वन्देमातरम्

त्रिंश कोटि कण्ठ कल कल निनाद कराले

त्रिंश कोटि भुजै धृत खर वाले ॥

के बोले माँ तुमि अबले

बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम् ॥

वन्देमातरम्

+ + * + * + * + * + * + * + +

* यवनिका-पतन *

+ + * + * + * + * + * + * + +

१७ जुलाई १६५८ ई०

आदि महालक्ष्मी का मन्दिर

लक्ष्मीकुण्ड, काशी ।